TIGHT BINDING BOOK

UNIVERSAL LIBRARY

OU_180696

UNIVERSAL LIBRARY

OUP—391—29-4-72—10,000.

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No. H81.092 Accession No. G.H 1951

Author G61A [illegible]

Title [illegible]

This book should be returned on or before the date last marked **below.**

सूची

—: o :—

	वक्तव्य	१—३
१.	सूरदास	१
२.	कृष्णदास	१६
३.	परमानंददास	४५
४.	कुंभनदास	७०
५.	नंददास	६४
६.	चतुर्भुजदास	१०४
७.	छीतस्वामी	११३
८.	गोविंद स्वामी	११६

वक्तव्य

गोकुलनाथ जी ने 'अष्टछाप' नाम से कोई पुस्तक नहीं लिखी है। प्रस्तुत पुस्तक गोकुलनाथ जी के नाम से प्रचलित "८४ वैष्णवन की वार्ता" तथा "२५२ वैष्णवन की वार्ता" शीर्षक ग्रंथों से अष्टछाप कवियों की जीवनियों का संग्रहमात्र है। ८४ वार्ता में महाप्रभु वल्लभाचार्य के सेवकों का वर्णन है। सूरदास, कृष्णदास, परमानन्ददास, तथा कुंभनदास महाप्रभु वल्लभाचार्य के सेवकों में प्रमुख थे। इनकी जीवनियाँ ८४ वार्ता के अन्त में एक स्थान पर मिलती हैं और यह वहाँ से ही ली गई हैं। महाप्रभु वल्लभाचार्य के पुत्र तथा उत्तराधिकारी गुसाईं विट्ठलनाथ के सेवकों का वर्णन २५२ वार्ता में मिलता है। गुसाईं जी के सेवकों में नंददास, चतुर्भुजदास, छीत स्वामी तथा गोविंद स्वामी ने विशेष प्रसिद्धि प्राप्त की थी और इनकी जीवनियाँ २५२ वार्ता में सबसे प्रथम दी गई हैं। कहा जाता है कि गुसाईं विट्ठलनाथ ने ही अपने तथा अपने पिता के इन चार चार प्रमुख सेवकों को लेकर "अष्टछाप" नाम दिया था। अतः प्रस्तुत संग्रह के इस नाम के पीछे कुछ ऐतिहासिक तथा सांप्रदायिक परम्परा है।

इस संग्रह को हिन्दी जनता के सन्मुख रखने में मेरे दो मुख्य उद्देश हैं। भाषा संबंधी उद्देश तो है सत्रहवीं सदी के ब्रजभाषा गद्य को सर्व साधारण के लिये सुलभ करना तथा साहित्यिक

उद्देश है सूरदास आदि कुछ प्रसिद्ध हिन्दी कवियों की जीवनियों के इन प्रायः समकालीन जीते जागते वर्णनों से हिन्दी प्रेमियों का घनिष्ठ परिचय कराना। ८४ तथा २५२ वार्ताओं के अच्छे संस्करण न होने तथा इन ग्रंथों के बहुत बड़े होने के कारण उपर्युक्त उद्देशों की पूर्त्ति नहीं हो पा रही थी। इसके अतिरिक्त यह जीवनियाँ देश की तत्कालीन धार्मिक, सामाजिक तथा राजनीतिक स्थिति पर भी अत्यन्त महत्वपूर्ण प्रकाश डालती हैं। राष्ट्रीय जीवन के इन आवश्यक अंगों का सच्चा इतिहास लिखने के लिये हिन्दी साहित्य में कितना भंडार भरा पड़ा है इसका दिग्दर्शन इस छोटे से संग्रह को आद्योपान्त पढ़ने से भली प्रकार हो सकेगा। इस दृष्टि से हिन्दी साहित्य का अध्ययन अभी किया ही नहीं गया है।

इस संग्रह के मूल का आधार डाकोर से प्रकाशित ८४ तथा २५२ वार्ताओं के संवत् १९६० के संस्करण हैं। ८४ वार्ता का डाकोर से एक नया संस्करण निकला है किन्तु इसके तथा पुराने संस्करण के मूल में विशेष अन्तर नहीं है। ८४ वार्ता का मथुरा से प्रकाशित संवत् १९४० का लिथो का छपा एक दूसरा संस्करण देखने को मिल गया था। इस संस्करण से कुछ महत्वपूर्ण पाठ-भेद फुटनोट में दे दिये हैं। २५२ वार्ता का न कोई अन्य संस्करण ही मिल सका और न हस्तलिखित प्रति ही अतः अन्तिम चार जीवनियों में पाठान्तर नहीं दिये जा सके हैं। पर्याप्त हस्त लिखित प्रतियों अथवा छपे हुये संस्करणों के बिना किसी ग्रंथ के मूल को

" शुद्ध करने " अथवा " संपादन करने " में मुझे विश्वास नहीं है अतः इस ओर प्रयास ही नहीं किया गया है।

इस बड़ी त्रुटि के रहते हुये भी प्रस्तुत संग्रह के प्रकाशन से उपर्युक्त उद्देशों की पूर्त्ति में बहुत कुछ सहायता मिल सकेगी इसी धारणा से हिन्दी जनता के सामने यह अपूर्ण पुस्तक रक्खी जा रही है। मुझे पूर्ण आशा है कि विद्यार्थी वर्ग तथा हिन्दी जनता दोनों ही इस संग्रह को रुचिकर तथा हितकर पावेंगे।

१—१—१९२९

धीरेन्द्र वर्म्मा

अष्टछाप

—:o:—

अथ[1] सूरदास जी गऊघाट ऊपर रहते तिनकी वार्ता

—:o:—

प्रसंग १

सो एक समय[2] श्रीआचार्य जी महाप्रभू अडेलते[3] ब्रज को[4] पावधारे[5]। सो कितनेक दिन में गऊघाट आये[6]। सो गऊघाट आगरे और मथुरा के बीचोंबीच[7] है तहाँ श्रीआचार्य जी महाप्रभू पावधारे। सो गऊघाट ऊपर श्रीआचार्य जी महाप्रभू उतरे। तहाँ श्रीआचार्य जी महाप्रभू आप स्नान करिके संध्यावंदन करिके पाक करन को बैठे[8] और श्रीआचार्य जी महाप्रभून के सेवकन को समाज बहुत[9] हुतो और सेवकहू अपने अपने श्रीठाकुर जी को[10] रसोई करन लागे।

सो गऊघाट ऊपर सूरदास जी को स्थल हुतो[11]। सो सूरदास

१ अब श्री आचार्य जी महाप्रभून के सेवक। २ समें। ३ अंडेलते। ४ ब्रज कों। ५ पाउं धारे। ६ आये। ७ वीचा वीच। ८ बैठे। ९ वहुत।

१० श्रीठाकुर जी की। ११ हुतो।

जी स्वामी हैं आप सेवक करते। सूरदास जी भगवदीय हैं[1] गान बहुत आछौ[2] करते ताते बहुत[3] लोग सूरदास जी के सेवक भये हुते। सेा श्रीआचार्य जी महाप्रभू गऊघाट ऊपर उतरे। सेा सूरदास जी के सेवक देखि के सूरदास जी सों जाय कही जो आज श्रीआचार्य जी महाप्रभू आप पधारे हैं जिनने दक्षिण में दिग्विजय कीयेा है तब[4] पंडितन को जीते हैं भक्तिमार्ग स्थापन कीयौ है सेा श्रीवल्लभाचार्य यहाँ पधारे हैं। तब सूरदास जी ने अपने सेवक सों कह्यौ जो तू जाय के दूर बैठि जब आप भोजन करिकें बिराजे तब खबरि करियो हम श्रीआचार्य जी महाप्रभून के दर्शन को जायँगे। सेा वह तनक दूर जाय बैठौ।

तब श्रीआचार्य जी महाप्रभू आप पाक करत हुते। सेा पाक सिद्ध भयौ। तब श्रीआचार्य जी महाप्रभून ने श्रीठाकुर जी को भोग समर्प्यो। पाछे समयानुसार भोगसराय अनोसरि करिकें महाप्रसाद ले कें श्रीआचार्य जी महाप्रभू गादी ऊपर बिराजे। तहाँ सब सेवकहू पहुँचिकें श्रीआचार्य जी महाप्रभून के आसपास आय बैठे। तब वह सूरदास जी को सेवक आयौ सेा सूरदास जी सों कही जेा श्रीआचार्य जी महाप्रभू बिराजे हैं तब सूरदास जी अपने स्थलते आयकै श्रीआचार्य जी महाप्रभून के दर्शन कों आये। तब श्रीआचार्य जी महाप्रभून ने कह्यौ जो सूर आघों बैठौ। तब सूरदास जी श्रीआचार्य जी महाप्रभून को दर्शन करि कै आगे आय बैठे। तब श्रीआचार्य जी

---

१ हे। २ आछो। ३ वहुत। ४ सब।

महाप्रभून ने कही जो सूर कछू भगवद जस वर्णन करौ। तब सूरदास जी ने कही जो आग्या[1]। सो सूरदास जी ने श्री आचार्य जी महाप्रभून के आगे एक पद गायौ॥ सो पद॥

राग धनाश्री

हौं हरि सब पतितन को नायक।
को करि सकै बराबर मेरी इतने मान कों लायक॥ १॥
जो तुम अजामेलि सों कीनी जो पाती लिख पाऊँ।
होय विश्वास[2] भलौ जिय अपने और[3] पतित बुलाऊँ॥ २॥
सिमिटे[4] जहाँ तहाँते सब कोऊ आयजुरे इक ठौर।
अब के इतने आन मिलाऊँ बेर दूसरी और॥ ३॥
होडाहोडी मन हुलास करि करे पाप भरि पेट।
सबहिन ले पायन तरिपरि हौं यही हमारी भेट॥ ४॥
ऐसी कितनी कब नाऊँ[5] प्रानपति सुमरन है भयौ आडौ।
अबकी वेर निवार लेउ प्रभू सूर पतित कों ठाडौ॥ ५॥

और पद गायौ।

राग धनाश्री

प्रभु में सब पतितन को टीकौ।
और पतित सब द्यौस चारिके में तौ जन्मत ही कौ॥ १॥
बधिक अजामिलि गनिका त्यारी और पूतना ही कौ।
मोहि छांडि तुम और उधारै मिटै शूल केसें जीकौ॥ २॥

---

१ आज्ञा। २ विस्वास। ३ औरहु। ४ सिमिट। ५ कितनीक बनाऊँ।

कोउ न समरथ सेवकरनकौ खेचि कहत हों लीकौ।
मरियत लाज सूरपतितन में कहत सबन में नीकौ॥ ३॥

ऐसौ पद श्रीआचार्य जी महाप्रभून के आगे सूरदास जी ने गायौ सेा सुनि के श्रीआचार्य जी महाप्रभून ने कह्यौ जेा सूर है कें ऐसेा घिघियात काहे कों है कछू भगवल्लीला वर्णन करि। तब सूरदास नें कह्यौ जेा महाराज हों तेा समझत नाहीं। तब श्रीआचार्य जी महाप्रभून नें कह्यौ जेा जा स्नान करि आउ हम तोकों समझावेगे[1]। तब सूरदास जी स्नान करि आये तब श्री-महाप्रभू जी नें प्रथम सूरदास जी कों नाम सुनायौ पाछें समर्पण करवायौ और फिर दशम स्कंध की अनुक्रमणिका कही सेा ताते सब दोष दूर भये। ताते सूरदास जी कौ नवधा भक्ति सिद्ध भयी। तब सूरदास जी ने भगवल्लीला वर्णन करी। अनु-क्रमणिका ते संपूर्ण लीला फुरी सेा क्यों जानियै सेा दसमस्कंध को सुबोधिनी में मंगलाचरण कौ प्रथम कारिका कीये हैं सेा यह श्लोक सूरदास जी नें कह्यौ। सेा श्लोक।

नमामि हृदये शेषे लीलाक्षराब्धि सायनम्[2]।
लक्ष्मी सहस्र लीलाभिः सेव्यमानं कलानिधिम्॥ १॥

और ताही समय श्रीमहाप्रभून के सन्निधान पद कीयै। सेा पद। रागविलावल "चकई री चलि चरण सरोवर जहाँ न प्रेम बियोग।" यह पद संपूर्ण करिकें सूरदास जी ने गायौ। सेा यह

---

१ समझायेंगे। २ लीलाक्षराब्धि सायिनं।

पद दशमस्कंध के मंगलाचरण की कारिका के अनुसार कीयौ। सेा यामें कह्यौ है जेा तहाँ श्रीसहस्र सहित नित क्रीडत शोभित। सूरदास या भाँति पद कीयै ताते जानी जेा सूरदास को सम्पूर्ण सुबोधिनी स्फुरी। सेा श्रीआचार्य जी महाप्रभून ने जान्यो जो लीला को अभ्यास भयौ। पाछें सूरदास जी ने नंदमहोत्सव कीयौ। सेा श्रीआचार्य महाप्रभून के आगे गायौ। राग देवगन्धार। "ब्रज भयौ महर के पूत। जब यह बात सुनी।" सेा यह श्रीआचार्य जी महाप्रभून के आगे गायौ। सेा सुनि के श्रीआचार्य जी महाप्रभू बहुत प्रसन्न भयै और अपने श्रीमुख ते कहैं जेा सूरदास मानों निकट ही हुते।

पाछें सूरदास जी ने अपने सेवक कीयै हुते तिन सबन को नाम दिवायौ। पाछे सूरदास जी ने बहुत पद कीये। पाछे श्रीआचार्य जी महाप्रभून ने सूरदास जी कों पुरुषोत्तम सहस्रनाम सुनायौ तब सूरदास जी को सम्पूरण भागवत स्फुर्तना भई। पाछें जेा पद कीयै सेा श्रीभागवत प्रथम स्कंधते द्वादश स्कंधताई कीये। ताते वे सूरदास जी श्रीआचार्य जी महाप्रभून के ऐसे परम कृपा-पात्र भगवदीय हैं। पाछें श्रीआचार्य जी महाप्रभू गऊघाट ऊपर दिन दोय तीन बिराजे। पाछें फेरि ब्रज को पाव धारे तब सूरदास जी हू श्रीआचार्य जी महाप्रभून के साथ ब्रज को आयै।

प्रसंग २

अब जो श्री आचार्य जी महाप्रभू ब्रजकों पधारे सेा प्रथम

श्रीगोकुल पधारे। तब श्रीआचार्य जी महाप्रभून के साथ सूरदास जी हू आये। तब श्रीआचार्य जी महाप्रभून ने अपने श्रीमुखसों कह्यौ जेा सूरदास श्रीगोकुल कों दर्शन करौ। सेा सूरदास जी ने श्रीगोकुल कों दंडवत करी। सेा दंडवतमात्र श्रीगोकुल की बाल-लीला सूरदास जी के हृदय में फुरी और सूरदास जी के हृदय में प्रथम श्रीमहाप्रभून ने सकल लीला श्रीभागवत की स्थापी हैं, ताते दर्शन करत मात्र सूरदास जी कों श्रीगोकुल की बाललीला स्फुर्दना भई। तब सूरदास जो ने विचारयौ मन में जेा श्रीगोकुल की बाललीला को वर्णन करिकैं श्रीआचार्य जी महाप्रभून के आगें सुनाइयै। जन्म लीला को पद तौ प्रथम सुनायौ है अब श्रीगोकुल की बाललीला को पद गायौ। सेा पद।

रागबिलावल

सेा नित करन पुनीत लियै।[1]
घुटुरुवन चलत, रेणुतन मेड़त,[2] सुरत वेष कियै[3] ॥ १ ॥
चारु कपोल लोल लोचन छबि गोरोचन कौ तिलक दिये।
लार लटकन मानो मत[4] मधुपगन माधुरी मधुर पियै ॥ २ ॥
कठुला कंठ बजत, केहरि नख राजत है सखी रुचिर हिये।
धन्य सूर एकौ पल यह सुख कहा भयौ जीये ॥ ३ ॥

यह पद सूरदास जी ने गायौ। सेा सुनि के आप बहुत प्रसन्न भये। पाछें औरहू पद गायौ।

---

१ सोभित कर नवनीत लिये। २ मंडित। ३ मुख लेप किये। ४ मत्त।

तब श्रीमहाप्रभू जी आपने मन में बिचारे जेा श्रीनाथ जी के यहाँ और तो सब सेवा कौ मंडान भयौ और कीर्तन को मंडान नाही कियौ है ताते अब सूरदास जी को दीजियै। तब आप श्री जी द्वार पधारे। सेा सूरदास जी कौ साथ लीये ही सेा श्रीनाथ जी द्वार जाय पहुँचे। तब आप स्नान करिकें मंदिर में पधारे। तब सूरदास जी सें कह्यौ जेा सूरदास ऊपर आउ स्नान करिकें श्रीनाथ जी कौ दर्शन करि। तब सूरदास जी पर्वत ऊपर जायकै श्रीनाथ जी कौ दर्शन कीयौ। तब आपने कह्यौ जेा सूरदास कछू श्रीनाथ जी को सुनावौ। तब सूरदास जी ने प्रथम विग्यप्त[1] को पद गायौ। सेा पद। राग धनाश्री। "अब हों नाच्यौ बहुत गोपाल।" यह पद सम्पूर्ण करिकें श्रीनाथ जी के आगें गायौ। तब श्रीमहाप्रभून जी ने कह्यौ जेा अब तौ सूरदास तुममें कछू अविद्या रही नाहीं तुम्हारो अविद्या तो प्रभून ने दूर कीनी ताते कछू भगवद्यश वर्णन करौ। तब सूरदास जी ने महात्म्य और लीला ऐसेा जस करिकें गाय सुनायौ। सेा पद। राग गौरी। "कोन सुकृत इन व्रजवासिन कों।" यह पद सम्पूर्ण करिके गायौ। सेा सुनिकें श्रीमहाप्रभू जी बहुत प्रसन्न भये।

सेा जैसेा श्रीआचार्य जी महाप्रभून नें मार्ग प्रकाश कीयौ है। ताके अनुसार सूरदास जी ने पद कीये। श्रीआचार्य जी महाप्रभून के मार्ग को कहा स्वरूप है महात्म्य ग्यान पूर्वक सुदृढ़ स्नेह की यौ[2] परमकाष्ठा हैं और स्नेह आगे भगवान को महात्म्य रहत नाहीं

---

१ विज्ञप्ति। २ तौ।

ताते भगवान वेर वेर महात्म्य जनावत हैं। नाम प्रकरन में पूतना करि, सकट तृनावर्तकरि, गर्गाचार्य करि, यमलार्जुन करि, वैकुण्ठ दर्शन करी[1], ऐसें करिकें भगवान ने बहुत महात्म्य जनायौ। परि नइ ब्रजभक्तिन को स्नेह परमकाष्ठापन्न है ताते ताही समय तौ महात्म्य रहै पाछें विस्मृत हो जाय।

प्रसंग ३

और सूरदास जी ने सहस्राधि[2] पद कीये हैं ताको सागर कहियै सेा सब जगत में प्रसिद्ध भये। सेा सूरदास जी के पद देशाधिपति ने सुने सेा सुनिकें यह बिचारौ जो सूरदास जी काहू बिधि सों मिले तो भलौ। सेा भगवदिच्छा ते सूरदास जी मिले। सो सूरदास जी सों कह्यौ देशाधिपति ने जो सूरदास जी में सुन्यो है जो तुमने बिसनपद बहु[3] कीये हैं जो मोकों परमेश्वर[4] नें राज्य दीयौ है सो सब गुनीजन मेरौ जस गावत हैं ताते तुमहूँ कछू गावौ। तब सूरदास जी ने देशाधिपति के आगे कीर्तन गायौ। सेा पद। रागबिलावल। "मना रे तू करि माधौ सों प्रीति।" यह पद देशाधिपति के आगे संपूर्ण करिके सूरदास जी नें गायौ। सेा यह पद कैसेा है जो यह पद को अहर्निश ध्यान रहे तौ भगवद-नुग्रह को सदा सार्ति रहै, और संसार ते सदा वैराग्य रहै, और कुसंग को सदा भय रहै, और भगवदीय के संग की सदा चाह रहै और श्रीठाकुर जी के चरणारबिंद ऊपर सदा स्नेह रहै, देशादि के ऊपर आसक्ति न होय, ऐसेा पद देशाधिपति कों सुनायौ।

---

१ करि। २ सहस्रा विधि। ३ बहुत। ४ पनमेश्वर।

सो सुनि के देशाधिपति बहुत प्रसन्न भयो और कह्यौ जो सूरदास जी मोकों परमेश्वर[1] ने राज दीनों है सो सब गुनीजन मेरो जस गावत हैं ताते मेरो जस कछू गावौ। तब सूरदास जी ने यह पद गायौ। सो पद। राग केदारौ। "नाहिन रह्यौ मनमें ठौर।" यह पद संपूर्ण करि कें सूरदास जी ने गायौ। सो सुनि कें देशाधिपति अकबर बादशाह[2] अपने मन में विचारयौ जो ये मेरौ जस काहे को गावेंगे जो इनको कछू मेरी बात कौ लालच होय तौ गावै ये तो परमेश्वर के जन हैं। और सूरदास जी ते (ने) या पद के समाप्त में गायौ। "हो जो सूर ऐसें दर्श को इमरत[3] लोचन प्यास।" यह गायौ है। देशाधिपति ने पूछौ जो सूरदास जी तुम्हारे लोचन तो देखियत नाहीं सो प्यासे केसें मरत हैं और बिन देखें तुम उपमा को देत हौ सो तुम कैसें देत हौ। तब सूरदास जी कछू बोले नाहीं। तब फेरि देशाधिपति बोलौ जो इनके लोचन हैं सो तो परमेश्वर के पास हैं सो उहाँ देखत हैं सो वर्णन करते हैं। तब देशाधिपति नें सूरदास जी के समाधान की मन में विचारी जो इनको कछू दीयौ चाहियै परि यह तौ भगवदीय है इनकों कछू काहू बात की इच्छा नाहीं। पाछें सूरदास जी देशाधिपति सों बिदा होयकें श्रीनाथ जी द्वार आयै।

प्रसंग ४

एक समय[4] सूरदास जी मार्ग में चले जाते हैं[5] सो कोई[6]

---

१ पनमेश्वर। २ पातसाह। ३ ए मरत। ४ समें। ५ जात है। ६ कोऊ।

चौपड़ खेलत हुते। सो वा चौपड़ खेल में ऐसे लीन है[1] जो काऊ आवते जाते की सुधि नाहीं। ऐसे खेल में मग्न हैं। सो देख सूरदास जी के संग के भगवदीय है तिनसो सूरदास जी नें कह्यौ जो देखौ वह प्राणी कैसौ अपनौ जनमारो[2] खोवत हैं। भगवान ने तौ मनुष्य देह दीनी है सो तौ अपनी सेवा भजन के लियै दीनी है सो ये तौ या देह सों हाड कूटत हैं। या में यह लोकिक सिद्धि नाहीं सेा काहे ते जो या लोक में तो अपजस और परलोक में भगवान ते बहिर्मुख। तातें श्रीठाकुर जी ने इनकौ मनुष्य देह दीनी है तिनकों चौपड़ ऐसी खेलनी चाहियै। सो ता समय एक पद सूरदास जी ने अपने संगकेन सों कह्यौ। सेापद।

राग केदारौ

मन तू समझि सोच विचार।
भक्ति बिन भगवान दुर्लभ कहत निगम पुकार॥ १ ॥
साध संगति डारि फासा फेरि रसना सारि।
दाव अबकें पयौं पूरौ उतरि पहिली पार॥ २ ॥
चाकसत्रे सुनि अठारे पच[3]ही कों मारि।
दूर ते तजि तीन कौन[4] चमकि चौक बिचार॥ ३ ॥
काम क्रोध जंजाल भूल्यौ ठग्यो ठगनी नारि।
सूर हरि कें पद भजन बिन चल्यौ दोउ कर झार॥ ४ ॥

यह पद सूरदास जी नें अपने संग के भगवदीयन सेां कह्यौ।

---

१ हे। २ जमारो। ३ पंच। ४ काने।

सो या पद में सूरदास जी नें कहा कह्यौ 'मन तू समझि सोच बिचार।' ये तीन्यौ वस्तु चौपड़ में चाहियै सोई तीनों वस्तु भगवान के भजन में चाहियै। काहे ते जो समझि न होय तौ श्रवण कहा करेगौ ताते पहिले तौ समझ चहियै। और सोच कहियै चिंता, सों भगवान के प्राप्त[1] की चिंता न होय तौ संसार ऊपर बैराग्य केसें आवै ताते सोच कहियै। और विचार, जो या जीव कों विचार हीं नाहीं तौ संग दुसंग में कहा करेगौ ताते बिचार चाहियै। सेा ये तोनों वस्तु होंय तौ भगवदीय होय ताते ये तोनों वस्तु भगवदीय कों अवश्य चाहियै। और चौपड़ में हूँ ये तीनों वस्तु चाहियै। समझ कहै गिनवो न आवतो गोट केसें चलै, और सोच अगम जो मेरे यह दाव पड़ै ता यह गोट चलूँ, विचार जो वाही में तन मन। जो यह वस्तु होय तो चौपड़ खेली जाय। सेा वे सूरदास जो श्रीआचार्य जो महाप्रभून के ऐसे परम कृपापात्र भगवदीय हैं[2]।

प्रसंग ५

बहुर सूरदास जी श्रीनाथ जी द्वार आयकें बहुत दिन ताईं श्रीनाथ जी की सेवा कीनी। बोच बीच में श्रीगोकुल श्रीनवनीत प्रिया जी के दर्शन कों आवते। सो एक समय श्रीसूरदास जी श्रीगोकुल आये श्रीनवनीतप्रिया जी के दर्शन कीये और बाललीला के पद बहुत सुनाये। सेा श्रीगुसाईं जी सुनिकें बहुत प्रसन्न भये।

---

१ प्राप्ति। २ हे।

पाछैं श्रीगुसांई जी ने एक पालना संस्कृत में कीयौ सो पालना सूरदास जी कों सिखायौ। सो पालना सूरदास जी ने श्रीनवनीत प्रिया जी झुलत हुते ता समय गायौ। सो पद। राग रामकली। "प्रेम[1] पर्यंक शयनं" यह पद सूरदास जी ने सम्पूर्ण करिकैं गाय सुनायौ श्रीनवनीतप्रिया जी कों। पाछैं या पद के भाव के अनुसार बहुत पद कियै सो सुनि कैं श्रीगुसांई जी बहुत प्रसन्न भयै। पालना के भाव अनुसार पद गायो। सो पद।

राग बिलावल

बाल विनोद आँगन में की डोलनि।
मणिमय भूमि सुभग नंदालय बलिबलि गई तोतरी बोलनि ॥ १ ॥
कठुलाकंठ रुचिर केहरि नख ब्रजमाल बहुतई अमोलनि।
वदन सरोज तिलक गोरोचन लरलटिकन मधुगनि लोलनि ॥२॥
लीन्यौ कर परसत आनन पर कछू खाय कछू लग्यौ कपोलनि।
कहैं जन सूर कहाँ लों बरनों धन्य नंद जीवन जग तोलनि ॥३॥
गोपाल दुरे हैं माखन खात।
देखि सखी सोभा जो बढ़ी अति स्याम मनोहरि गात ॥१॥
उठि अचलोकि ओट ठाढ़ी ह्वै जिह विधि नहीं लखि लेत।
चकृत नेन चहूँ दिस चितवत और सबन कों देत ॥२॥
सुन्दर कर आनन समीप हरि राजत यह आकार।
जनु जलरुह तजि वेर बिधि सों लाये मिलत उपहार ॥३॥

---

१ प्रेष।

गिरि गिरि परत बदनते ऊपर है दधिसुत के बिंदु ।
मानहू सुधाकन खोरवत पिय जिय दुंद[1] ॥४॥
बालबिनोद बिलोक सूर प्रभु बित भई ब्रज की नारि ।
फुरत न बचन बरजिवे कों मनराही[2] बिचार बिचार ॥५॥

राग जैतश्री

कहाँ लग वरनो सुन्दरताई ।
खेलत कुमर कतिक आँगन में नेन निरखि सुखभाई ॥१॥
कुलहै[3] लसत श्याम सुंदर के बहु विधि रंग बिबनाई ।
मानउ नवघन ऊपर राजत मघुवा मनुष्य[4] चढ़ाई ॥२॥
सेतपीत अरु असितलाल सणि[5] लटकनि भाल सराई ।
मानहूँ असुर देव गुरु सों मिलि भूमि जसो[6] समुदाई ॥३॥
अति सुदेश मृदु चिहर[7] हरत मन मौहन सुख वगराई ।
मानहुं मंजुल कंज[8] ऊपर वरअलि अवलि फिर आई ॥४॥
दूधदंत छबि कही न जात कछू अलि पल लय झलकाई ।
किलकत हंसन दुरति प्रगटत मानो विंधु[9] में बिपुलताई ॥५॥
खंडत बचन देत पूरन सुख अद्भुत यह उपमाई ।
घुटुरुन चलत उठत प्रमुदित मन सूरदास बलि जाई ॥६॥

राग रामकली

देखौ सखो एक अद्भुत रूप ।
एक अम्बुजमध्य देखियत बीस दधिसुत जूप ॥१॥

---

१ जनदिंदु । २ रहि । ३ कुलहे । ४ धनुष । ५ मणि । ६ भूमिज सो । ७ चिहुर । ८ कंजन ९ विंदु ।

एक अचली दोय जलचर उभे अर्क अनूप ।
पंचधार चढ़ि गहि देखियत कहौ कहा स्वरूप ॥२॥
सिसुगन में भई सोभा कोउ करौ बिचार ।
सूर श्रीगोपाल की छबि राखो यह निरधार ॥३॥

ऐसे पद सूरदास जी ने गाये पाछें फेरि श्रीनाथ जी द्वार आयै ॥

प्रसंग ६

अब सूरदास जी नें श्रीनाथ जी की सेवा बहुत कीनी बहुत दिन ताई । ता उपरांत भगवद इच्छा जानी जो अब प्रभून की इच्छा बुलायवे की है । यह विचारिकें जो नित्य लीला फलात्मक रासलीला जो जहां करे हैं ऐसी परासोली तहाँ सूरदास जी आयै । श्रीनाथ जी की ध्वाजा कौ दंडौत करिकें ध्वजा के साम्है सन्मुख करिकें सूरदास जी सोयै परि अंतःकरन यह जो श्रीआचार्य जी महाप्रभू दर्शन देयंगे । अब यह देह तौ थकी ताते अब या देह सों श्रीनाथ जी को दर्शन होय तौ जानियै परम भाग्य है । श्रीगुसाईं जी को नाम कृपासिंधु है भक्तन के मनोरथ पूरन कर्त्ता हैं । ऐसे बिचार के सूरदास जी श्रीगुसाईं जी कौं चिंतवन करत हैं । और श्रीगुसाईं जी कैसे कृपासिंधु हैं जैसें सूरदास जी उहाँ स्मरण करते हैं तैसे ही श्रीगुसांईं जी इनको छिनहूँ नहि भूलत है ।

श्रीनाथ जी को सिंगार होतौ ता समय सूरदास जी मणि कोठा में ठाडे ठाडे कीर्तन करते । सो तादिन श्रीगुसांईं जी श्री-

नाथ जी कौं सिंगार करत हुते और सूरदास जी कौ कीर्तन करत न देखौ तब श्रीगुसाईं जी ने पूछौ सूरदास जी नाहीं देखियत सेा काहे ते। तब काहू वैष्णवन ने[1] कह्यौ जेा महाराज सूरदास जी तेा आज परासेाली की ओडी[2] जात देखे है। तब श्रीगुसाईं जी जान्यो जेा भगवदि इच्छाते अवसान समें हैं ताते सूरदास जी परासेाली गये हैं। तब श्रीगुसाईं जी ने अपने सेवकन सों कह्यौ जेा पुष्टमार्ग कों जिहाज[3] जात हैं जाकों कछू लेनें होय तौ लेउ और जेा भगवद इच्छा ते राजभोग आरती पाछें रहत हैं तेा में हू आवत हों। पाछें श्रीगुसाईं जी वेर वेर सूरदास जी की खबरि मँगायेा करें जेा आवै सेाई कहै जेा महाराज सूरदास तेा अचेत हैं कछू बोलत नाहीं। ऐसे करत श्रीनाथ जी के राजभोग को समय भयेा।

सेा राजभोग आरती करिकें श्रीगुसाईं जी श्रीगिरिराजते नीचे उतरे सेा आप परासेाली पधारे। भीतरिया सेवक रामदास जी प्रभृत और कुंभनदास जी और श्रीगुसाईं जी के सेवक गेाविंद-स्वामी चत्रभुजदास प्रभृत और सब श्रीगुसाईं जी के साथ आयै। सेा आवत ही सूरदास जी सों श्रीगुसाईं जी ने पूछौ जेा सूरदास जी केसे हौ। तब सूरदास जी ने श्रीगुसाईं जी को दंडोत करिकें कह्यौ जेा महाराज आयै हौ महाराज की वाट देखत हुतौ। यह कहिकें सूरदास जी ने एक पद गायौ। सेा पद।

---

१ वैष्णव ने। २ ओरी। ३ जहाज।

राग सारंग

देखो देखौ हरि जू को एक सुभाव ।
अति गंभीर उदार उदधि प्रभु जान सिरोमनराय ॥१॥

राई जितनी सेवा को फल मानत मेरु समान ।
समझि दास अपराध सिंधु सम बूंद न एकौ जानि ॥२॥

बदन प्रसन्न कमलपद सन्मुख दीखत ही है ऐसें ।
ऐसें विमुखहू भये कृपा या मुख की[1] तब देखौ तब तैसे ॥३॥

भक्त बिरह करत करुणामय डोलत पाछें लागे ।
सूरदास ऐसे प्रभु कों कत दीजै पीठ अभागै ॥४॥

यह पद सूरदास जी ने कह्यौ । सेा सुनिकें श्रीगुसाईं जी बहुत प्रसन्न भये और कह्यौ जेा ऐसे दैन्य प्रभु अपने सेवकन को देहि या दैन्य के पात्र एही है । तब वा वेर श्रीगुसाईं जी पास ठाडे हुते और चत्रभुजदास हूँ ठाडे हुते । तब चत्रभुजदास ने कह्यौ जेा सूरदास जी ने भगवद जस वर्णन कीयौ परि श्रीआचार्य जी महाप्रभून को जस वर्णन ना कीयौ । तब यह वचन सुनिकें सूरदास जी बोले जेा में तेा सब श्रीआचार्य जी महाप्रभून को ही जस वर्णन कीयौ है कछू न्यारौ देखूँ तौ न्यारौ करूँ परि तेरे साथ कहत हौ या भाँति कहिकें सूरदास जी ने एक पद कह्यौ । सेा पद ।

---

१ कृपाया सुख की ।

राग बिहागरौ

भरौसौ दृढ़ इन चरनन केरौ।
श्रीवल्लभ नखचंद्र छटा बिनु सब जगमांझि अंधेरौ ॥१॥
साधन और नहीं या कलिमें जासों होत निवेरौ।
सूर कहाकहि दुबिधि आधिरौ[1] विना मोल कौ चेरो ॥२॥

यह पद कह्यौ। पाछैं सूरदास जी कों मूर्छा आई। तब श्रीगुसांईं जी कहैं जेा सूरदास जी चित्त की वृत्ति कहाँ है। तब सूरदास जी ने एक पद और कह्यौ। सेा पद।

राग बिहागरौ

बलि बलि बलि हौं कुमर राधिका नंदसुवन जासों रति मानी।
वे अति चतुर तुम चतुर सिरोमन प्रीति करी केसें होत है छानी ॥१॥
वे जु धरत तन कनक पीत पट सेा तो सब तेरी गति ठानी।
ते पुनि श्याम सहेज वे शोभा अंबर मिस अपने उर आनी ॥२॥
पुलकित अंग अब ही ह्वै आयौ निरखि देखि निज देह सयानी।
सूर सुजान सखी के बूझे प्रेम प्रकाश भयौ विहसानो ॥३॥

यह पद कह्यौ इतनों कहिकें सूरदास जी को चित श्रीठाकुर जी को श्रीमुख तामें करुणारस कें भरे नेत्र देखे। तब श्रीगुसाईं जी ने पूछौ जेा सूरदास जी नेत्र की वृत्ति कहाँ है। तब सूरदास जी ने एक पद और कह्यौ। सेा पद।

---

१ आँधरो।

राग बिहागरो

खंजन नैन रूपरस माते।
अतिसे चारु चपल अनियारे पल पिंजरा न समाते।
चलि चलि जात निकट श्रवन[1] के उलटि पुलटि ताठंक[2] फँदाते।
सूरदास अंजल[3] गुण अटके नातर अब उडि जाते ॥१॥

इतनों कहत ही सूरदास जो ने या शरीर को त्याग कीयौ। सेा भगवल्लीला में प्राप्त भये। पाछें श्रीगुसाईं जी सब सेवकन सहित श्रीगोवर्द्धन आयै। ताते सूरदास जी श्रीआचार्य जी महाप्रभून के ऐसे परम कृपापात्र भगवदीय हैं सेा इनकी वार्ता कहाँ ताईं लिखियै। प्रसंग ॥ ६ ॥ वैष्णव ॥ ८८ ॥

---

१ श्रवण। २ ताटंक। ३ अंजन।

अथ कृष्णदास अधिकारी तिनकी वार्ता

—:०:—

प्रसंग १

सेा वे कृष्णदास शूद्र एक वेर द्वारिका गये हुते। सेा श्रीरणछोर जी के दर्शन करिकें तहाँ ते चले। सेा आपन[1] मीराबाई के गाँव आयौ। सेा वे कृष्णदास मीराबाई के घर गयै। तहाँ हरिवंश व्यास आदि दे विशेष सहु वैष्णव हुते। सेा काहू कों आयै आठ दिन, काहू को आये दश दिन, काहू को आये पन्द्रह दिन भये हुते। तिनकी बिदा न भई हुती। और कृष्णदास नें तौ आपत ही कही जेा हूँ तेा चलूंगेा। तब मीराबाई ने कही जेा बैठेा। तब कितनेक महेार श्रीनाथ जी को देन लागी। सेा कृष्णदास नें न लीनी और कह्यौ जेा तू श्रीआचार्य जी महाप्रभून की सेवक नाहीं होत ताते तेरी भेट हम हाथ ते छूवेंगे नाहीं। सेा ऐसे कहि कें कृष्णदास उहाँ ते उठि चले। सेा जब आगे आयै तब एक वैष्णवन नें कह्यौ जेा तुमने श्रीनाथ की भेट नाहीं लीनी। तब कृष्णदास ने कह्यौ जेा भेट की कहाँ[2] है परि मीराबाई के यहाँ जितने सेवक बैठे हुते तिन सबन की नांक नीचे करिकें भेट फेरी है इतने इकठौर कहाँ मिलते। यह हू जानेंगे जेा एक बेर शूद्र श्री-

---

१ आपन। २ वैष्णव। ३ कहा।

आचार्य जी महाप्रभून कौ सेवक आयौ हुतो ताने भेट न लीनी तो तिनके गुरु की कहा बात होयगी ॥

प्रसंग २

और प्रथम सेवा श्रीनाथ जी की बंगाली करते। सो श्री-आचार्य जी महाप्रभून नें मकुट[1] काछनी हीरा के आभरन भराय दीने हैं[2] सो नित्य करते[3]। सेा भेट आवती सेा खरच होती, कछू संग्रह न राखते, सब खरच होय जातौ, और बंगाली सेवा करते। पाछें श्रीआचार्य जो महाप्रभून ने कृष्णदास कौ आज्ञा दीनी जो तुम श्रीगोवर्द्धन रहौ सेवा टहल करौ तब कृष्णदास अधिकारी भयै, अधिकार करन लागै।

पाछे एक दिन मथुरा कौ चलन लागै सेा अडींगलों पहुँचे तब पंडे में अवधूतदास मिले। महापुरुष हुते ब्रज में फिरचौ करते सेा कृष्णदास कौ मिले। तब अवधूतदास ने कह्यौ जो कृष्णदास तुम कहाँ चले। तब कृष्णदास ने कही जेा मथुरा जात हौं कछू काम है। तब अवधूतदास ने पूछौ जेा श्रीनाथ जी की सेवा कोन करत है। तब कृष्ण दास ने कही जेा बंगाली करत हैं। तब अवधूतदास ने कही जेा श्रीनाथ जो कौ अपनौ वैभव बढ़ावनेा है ताते तुम बंगालीन को दूर क्यों नाहीं करत। सेा अवधूतदास सों श्रीनाथ जी ने कह्यौ जेा मोकों बंगाली बहुत दुःख देत हैं। सेा तब बंगाली श्रीनाथ जी को भेाग धरते सेा उनकी चुटि[4] में छोटो सेा स्वरूप हुतौ

१ मुकट। २ हे। ३ धरते। ४ चुटिया।

देवी को सेा सामने बैठावतै जब भोग सरावते। वा देवी कौ अपनी चुटिया में धर लेते ऐसे सदा करते। सेा बात अघधूतदास कौ श्रीनाथ जी ने जनाई ताते अघधूतदास ने कृष्णदास सों कह्यौ जो तुम बंगालीन को दूर करौ। तब कृष्णदास ने कही जेा श्रीगुसाईं जी की आज्ञा बिना कैसे काढ़ें। तब अघधूतदास ने कह्यौ जेा तुम अडेल में जायके श्रीगुसाईं जी की आज्ञा ले आवौ। जैसे बने तैसे इन बंगालीन को काढो।

तब कृष्णदास अडींगते फिरे। सेा श्रीगोवर्द्धन आयै। तब बंगालीन सों कह्यौ जेा हूँ तौ श्रीगुसाईं जी के पास अडेल जात हों तुम श्रीनाथ जी की सेवा सावधानी सों करियेा[1]। और सब सेवक हुते तिनसों कृष्णदास ने कह्यौ जेा हूँ तेा श्रीगुसाईं जी के पास कछू काम है सेा अडेल कों जात हों तुम सावधान रहियेा। ता पाछें श्रीनाथ जी सों बिदा होय के अडेल कों चले। सेा दिन १५ में श्रीगुसाईं जी के पास आप पहुँचे सेा आयके श्रीगुसाईं को दंडौत कीये। तब श्रीगुसाईं जी ने पूछौ जेा कृष्णदास तुम क्यों आयौ। तब कृष्णदास ने कह्यौ जेा श्रीनाथ जी कों अपनों वैभव बढ़ावनों है और बंगालीन ने बहुत माथौ उठायौ है जेा भेट आवत है सेा ले जात हैं सेा सब अपने गुरुन को देत हैं।

तब श्रीगुसाईं जी कहैं जेा श्रीआचार्य जी महाप्रभू असुर व्यामोह लीला दिखाई। ता पाछें श्रीगोपीनाथ जी पूरब को परदेश कीयौ सेा एक लक्ष की भेटभई। पाछें अडेल आयै। तब श्रीगेापी-

---

१ करियो।

नाथ जी ने कही जेा यह पहलो परदेश है ताते यामें आयौ सेा सब श्रीनाथ जी को है श्रीनाथ जी कों विनियेाग कियौ चाहियै। ता पाछें श्रीगोपीनाथ जी दिन दश बारह रहकै पाछें श्रीनाथ जी द्वार पधारे। सेा जाय पहुँचे। तब श्री गोपीनाथ जी ने दर्शन कीयों। पाछें जेा लाये हुते सेा सब भेट कियौ। आभूखन सब जड़ाव के समराये। थार कटोरा डवरा चमचा तष्टी प्रभृत सब सेाना रूप के कियै। सब करिकै श्रीनाथ जी सों बिदा होयकें श्रीगोपीनाथ जी अडेल आयै। ता पाछें बंगाली बरस एक कें भीतर सब ले गयै। अपने गुरु के यहां जाय के दीयै। यह बात श्रीगुसाईं जी ने कृष्णदास सों कही और कह्यौ जेा बंगालीन ने माथौ उठायौ परि वे श्रीआचार्य जी महाप्रभून के राखे हैं सेा केसें निकलेंगे।

तब कृष्णदास ने श्रीगुसाईं जी सें कह्यौ जेा महाराज श्रीनाथ जी की आज्ञा है जेा बंगालीन कों निकासौ ताते आप या बात में कछू मति बोलौ। मोकों आप आज्ञा करौ तौ अपनेा आप कर लेउँगौ। जेसे बंगाली निकसेंगे तेसे काढ़ूँगौ। तब श्रीगुसाईं जी ने कह्यौ जेा अवश्य। तब कृष्णदास ने कह्यौ जेा महाराज दोय पत्र लिखयै, एक राजा टोडरमल्ल के नाम कौ एक बीरबल के नाम कौ। तब श्रीगुसाईं जी ने दोय पत्र लिख दीने राजा टोडर मल्ल कौ और बीरबल कों। लिखौ जेा कृष्णदास कों श्रीनाथ जी द्वार भेजे हैं जेा तुमसेां कृष्णदास कहैं सेा करि देउंगै[1]। सेा पत्र लेकें श्रीनाथ

१ देउगे।

द्वारिका[1] कों चले। सो आगरे आयै। तहाँ टोडरमल्ल राजा बीरबल सेां मिले। पत्र श्रीगुसाईं जी के हुते सो दीयै। सो उन पत्र बाँचि कें कृष्णदास सेां कह्यौ जेा तुम कहौ तेसें करें। तब कृष्णदास ने कह्यौ जेा अब तेा में मथुरा जात हौं बंगालीन कों काढिवे कों।

ता पाछें कृष्णदास राजा टोडरमल्ल सेां विदा होय कें श्रीनाथ जी द्वार कों चले। सेा मथुरा आयै। तब मार्ग में अवधूतदास मिले। तब कृष्णदास सेां अवधूतदास ने कही जेा कृष्णदास जी ढील कहा करि राखी है बंगालीन कों काढौ, श्रीनाथ जी की ऐसी इच्छा है, श्रीनाथ जी कों अपनों वैभव फैलावनों है। तब कृष्णदास ने कह्यौ जेा श्रीगुसांईं जी की आज्ञा लेके आयौ हौं अब जाय कें बंगालीन कौ काढत हौं। इतनों कहिकें कृष्णदास चलै। सेा श्रीनाथ जी द्वार आयै। सेा वे बंगाली सब रुद्रकुंड ऊपर रहते सेा उहाँ उनकी झोंपरी हुती। सेा कृष्णदास ने जराय दीनी। तब सेार भयौ। तब बंगाली सेवा छोड़ कै पर्वत के नीचे आयै। तब कृष्णदास ने पर्वत ऊपर अपने मनुष्य पठाय दियै। तब बंगाली देखें तौ कृष्णदास नें झोंपरी में आग लगाय दीनी है। तब सब बंगाली कृष्णदास सों लरन लागै। तब कृष्णदास ने द्वै द्वै चार चार लाठी सबन में दीनी।

तब वे बंगाली तहाँ ते भाजे सों मथुरा आयै। तब रूपसनातन के पास आयकै सब बात कही। तब इतने में कृष्णदास

१ श्रीनाथ जी द्वार।

हू आय ठाडे भयै। तब रूपसनातन ने कृष्णदास के ऊपर खीज कें कह्यौ जेा क्यों रे शूद्र तू कोंन जेा इन ब्राह्मणन कों मारे। तब कृष्णदास ने कही जेा हूँ शूद्र हों परि तुम हू तौ अग्निहोत्री नहीं, तुमहू तेा कायस्थ हौ। तब सनातन ने कह्यौ जेा यह बात पातसाह सुनेगेा तौ तू कहा जवाब देयगेा। तब कृष्णदास ने कह्यौ जेा हों तेा नीके जवाब देउंगेा परि तुमको जुबाब देत में दुःख होयगो, और तुमकों जुवाब आवेगेा[1] जेा तुम कायस्थ होयकै इन ब्राह्मणन सों दंडौत करावत हौ। तब रूप सनातन तौ चुप ह्वै रहै और बंगालीन सेां कह्यौ जेा तुम जानौ ये जानें।

तब बंगाली मथुरा के हाकिम पास गयै। तब कृष्णदास जाय ठाडे भयै। तब हाकिम ने कह्यौ जेा भयेा सेा तेा भयेा परि अब इनकौं राखेा। तब कृष्णदास ने कह्यौ जेा अब तौ इनका[2] न राखेंगे। ये तौ हमारे चाकर हुते सेा हमने इनकों सेवा सोंपी हुती सेा ये सेवा छोड़ कें क्यों आयै। जेा इनकी झोंपरी जर गई हुती तौ हम नई छवाय देते ताते अब हम तौ न राखेंगे। ताऊपर तुम कहत हौ जेा हम श्रीगुसाईं जी कों लिखेंगे। वे कहेंगे तेसे करेंगे। तुम श्रीगुसाईं जी कों लिखौ।

पाछें कृष्णदास श्रीनाथ जी द्वार आयै और बंगाली सब अपने श्रीकुंड आयै। तब कृष्णदास ने श्रीगुसाईं जी कों पत्र लिखौ तामें बंगाली काढे सेा सब समाचार बिस्तार करिकै लिखे और लिख्यौ

---

१ न आवेगो। २ इनको।

जो अब पधारियै तौ भलौ है। सो पत्र श्रीगुसांई जी के पास अडेल आयौ। ता पाछे श्रीगुसांई जी अडेल ते चले सो श्रीनाथ जी द्वार आयै। तब वे बंगाली सब आयै। तब श्रीगुसांई जी सों कह्यौ जो हमकों श्रीआचार्य जी महाप्रभून ने सेवा में राखे हुते सों कृष्णदास ने हमकों काढे। तब श्रीगुसांई जी ने कह्यौ जेा तुम सेवा छोड़ के क्यों गयै दोष तुम्हारो है ताते अब तो सेवा में न राखेंगे।

तब वा[1] बंगाली बहुत बीनती करन लागे जो महाराज अब हम खाँयगे कहा। तब श्रीगुसांईजी ने इनकों श्री नाथ जी के बदले श्री मदन मोहन जी की सेवा दीनी और कह्यो जेा इनकी सेवा तुम करियों जेा आवै सो खाइयेा। तब वे बंगाली श्री मदन मोहन जी की सेवा करन लागे ताते उन बंगालीन ने श्री गोवर्द्धन रहिवौं छोड़ दीयौ। ता पाछें श्रीनाथ जी की सेवा में गुजराती ब्राह्मण भीतरिया राखे। श्रीनाथ जी को अपनों वैभव बढ़ावनों हौ सो सब भीतरियान कौ नेग और सब सेवकन कों नेग जेा जा भाँति श्रीनाथ जी ने कह्यौ ता भाँति श्रीगुसांई जी ने बाँधे। तब तो श्रीनाथ जी की सेवा प्रनालिका ते होन लागी और कृष्ण दास अधिकार करन लागै।

प्रसंग २

बहिर[2] श्रीनाथ जी ने कृष्णदास कों आज्ञा दीनि[3] जेा श्याम मति[4] को लेकें ताल पखावज ले कें तू परासोली में आईयौ।

---

१ वे। २ बहुरि। ३ दीनी। ४ कुमरि।

सो श्यामकुमर आछौ मृदंग बजावते। सो श्रीनाथ जी की सैन आरती उपरांत अनोसर भयौ तब कृष्णदास श्यामकुमर के घर गये। तब कृष्णदास ने श्यामकुमर सों कही जो श्री नाथ जी ने आज्ञाकरी है सो मृदंग ले के परासोली चलौ। तब श्यामकुमर ने कह्यौ जो मोहू कों श्रीनाथ जी ने आज्ञाकरी है ताते चलियै। तब श्यामकुमर मृदंग ले कें आयौ।

तब कृष्णदास और श्यामकुमर ये दोऊ जने परासोली सों देखे तौ श्रीनाथ जी स्वामिनी जी सहित बिराजे हैं। तब श्री नाथ जी ने श्यामकुमर सों कह्यौ जो तू तौ मृदंग बजाय, और कृष्णदास सों कह्यौ जो तू कीर्तन करि और श्रीनाथ जी और श्रीस्वामिनी जी नृत्य कीयौ। तहाँ कृष्णदास ने पद गायौ। सो पद।

राग केदारो।

श्री वृषभानुनन्दनी नाचत गिरधर संग
लाग डाट उरपतिरपरास संग राखौ।
झपताल मिल्यौ राग केदारौ
सप्तसुरन अव धर तान रंग राख्यौ॥
पाई सुख सिद्धि भरत काम विविध रिद्धि
अभिनव दल लसत सुहाग हलास रंग राख्यौ।
धनिता सत जूथ संग लिये निरखत क्यों सघस[१]
चंद बलिहारी कृष्णदास सुधर[२] रंग राखौ॥

१ सघन। २ सुघर।

यह पद कृष्णदास ने गायौ। श्यामकुमर ने मृदंग बजायौ। श्रीनाथ जी और स्वामिनी जी नृत्य कीयौ। ताते श्रीमहाप्रभू जी की कानि ते श्रीनाथजो कृष्णदास के ऊपर ऐसी कृपा करत हुते।

प्रसंग ४

और कृष्णदास नें बहुत पद कीयै। तब एक समय सूरदास जी नें कृष्णदास सों पूछ्यौ जो तुम पद करत हौ ता में मेरी छाया है। तब कृष्णदास ने सूरदास जी सों कह्यौ जो अब के ऐसो पद करूँ जो जामें तुम्हारी छाया न आवे। तब कृष्णदास एकांत में बेठिकें एकाग्रचित्त करिकें नयौ पद करन लागै जो जामें तीन तुक को[1] कीयौ और चौथी तुक बने नाहीं। तब घड़ी दोयलो बिचारे जो आगें तुक चलत नाही तो भलौ फेरि प्रसाद लेकें विचारेंगे। सो जा पत्र में लिखत हुते सो पत्र तथा द्वाति लेखनी उहांई धरि कै प्रसाद लेवे को उठे।

जब कृष्णदास प्रसाद लेवे को बैठे तब श्रीनाथ जी ने आप तीन तुक धा पत्र में अपने श्रीहस्त सों लिख दीयै। कृष्णदास ने आधौ पद कियौ हुतौ ताकों आप श्रीनाथ जी पूरौ करिकै आप तौ पधारे। ता पाछें कृष्णदास प्रसाद लेकें आये तब देखौ तौ श्रीनाथ जी पूरौ पद करिकै श्रीहस्त सों लिखि गयै हैं। सो देख के कृष्णदास बहुत प्रसन्न भयौ और कहैं जो सूरदास जी आवें तौ पद सुनावै। तब उत्थापन के समय सूरदास जी दर्शन को

१ तो।

आयै तब कृष्णदास ने कह्यौ जो सूरदास जी नयौ पद एक मेनें कीयो है तामें तुम्हारी छाया नाहीं धरी। तब सूरदास जी ने कह्यौ जो कहौ सुनों तौ जानों। तब पद कह्यौ। सो पद।

राग गौरी

आवत बने कान्ह गोपबालक संग
नेंचुकी खुर रेणु छुरतु[1] अलकावली॥
भौहैं मनमथ चाप बक्र लोचन बान
सीस सोभित मत्त मयूर चंद्रावली॥
उदित उडुराज सुन्दर सिरोमणि बदन
निरखि फूलो नवल जुवती कुमुदावली॥
अफूण सकुच अधर बिंबफल हसात
कहत कछुक प्रकटित होत कुंद रसनावली।
श्रवण कुंडल भाल तिलक वेसरि नाक
कंठ कौस्तुभ मणि सुभग त्रिवलावली॥
रत्न हाटक खचित पुरसि पदिक निपाति
बीच राजत सुभ पुलक मुक्तावली॥

अथ श्रीनाथ जी कृत।

वलय कंकण बाजूबंद आजानुभुज
मुद्रिका कर दल बिराजत नखावली॥
कण[2]तर मुरलिका मोहित अखिल विश्व
गोपिका जनमसि ग्रसथित प्रेमावली॥

१ छुरित। २ कण।

कटि छुद्र घंटिका जटित हीरामयी
नाभि अम्बुज बलित भृगरोमावली ॥
धायक बहुक चलत भक्त हित जानि पिय
गंड मण्डल रुचिर श्रमजल कणावली ॥
पीत कोसय परिधानें सुन्दर अंग चरण
नुपुरवाद्य गीत सबदावली ॥
हृदय कृष्णदास गिरवर धरण लाल की
चरण नख चन्द्रिका हरति तिमिरावली ॥

यह पद कृष्णदास नें सूरदास जी के आगें कह्यौ। सेा सूरदास जी तीन तुक ताँहि तौ बोले नाहीं। और तीन तुक के आगे कहन लागै तब सूरदास जी ने कृष्णदास सों कह्यौ जेा कृष्णदास मेरे तुमसों वाद है और प्रभून सों वाद नाहीं में प्रभून की बानी पहिचानत हों। तब कृष्णदास चुप कर रहै। ताते कृष्णदास ऐसे भगवदीय हैं।

प्रसंग ५

और एक समय श्रीनाथ जी के भंडार में कछू सामग्री चाहियत हुती। सेा कृष्णदास गाडा लेकें आगरे कौ आये। सेा आगरे के बाजार में एक वेश्या नृत्य करत हुती। ख्याल टप्पा गावत हुती और भीर हुती। सब लोग तमासेा देखत हुते। सेा कृष्णदास बाजार में तमासे में जाय ठाडे भये। तब भीर सरक गई तब वह वेश्या कृष्णदास के आगें नृत्य करन लागी। सेा वह वेश्या

बहुत सुन्दर, और गावै बहुत आछौ, नृत्य तैसोई करे। सो कृष्ण-दास वा वेश्या के ऊपर रीझे और मन में कहैं जो यह तौ श्रीनाथ जी के लायक है। ता पाछें वा वेश्या कों दशमुद्रा तौ वहाँ ही दिये और कही जो रात्रि कों समाज सहित आइयौ। ता पाछें कृष्णदास उहाँ हवेली में उतरे। सो सामग्री चाहियत हुती सो सब लेकें गाडा लदाय सिद्धि करवायौ।

ता पाछें रात्रि पहर गई। तब वेश्या समाजसहित आई। ता पाछें नृत्य भयौ गान भयौ। वापै कृष्णदास बहुत रीझें सो रुपैया सत एक दिये। तब वा वेश्या सों कह्यौ जो तेरौ गान हू आछौ और नृत्य हू आछौ परि हमारो सेठ है सो तेरे ख़्याल टप्पा ऊपर रीझेगो नाहीं ताते हों कहों सो गाइयौ। ता पाछें कृष्णदास नें एक पूरबी राग में पद करि कें सिखायौ। ता पाछें दूसरे दिन वा वेश्या कों साथ ले के चले सो आगरे ते आये। पाछे तीसरे दिन श्रीनाथ जी द्वार आये। सामग्री सब भंडार में धराई। ता पाछे जब उत्थापन को समय भयौ तब कीर्तनियाँ काहू कों बागे[1] न दीये। तब वा वेश्या कों समाज सहित ले गये। श्री गुसाईं जी मंदिर में ठाड़े श्रीनाथ जी कों मूंढा[2] करत है और मणि कोठा वेश्या नृत्य करन लागी और यह पद गायौ॥ सो पद॥

राग पूरवी॥

मोमन गिरधर छवि पर अटक्यौ।
ललित त्रभंगी अंगन परि चलि गयौ तहांई ठटक्यौ॥१॥

---

१ बागै लैजान। २ मूंछा।

सजल श्यामघन चरण नीलह्वै फिर चित अनित न आनि तन भटक्यौ।
कृष्णदास कियौ प्राण न्यौछावरि यह तन जग सिर पटक्यौ ॥ २ ॥

यह पद वा वेश्या ने गायौ। सो जब गावत गावत पिछली तुक आई जो "कृष्णदास कियौ प्राण न्यौछावर यह तन जगसिर पटक्यौ" इतनों कहत मात्र वा वेश्या के प्रान ततकाल निकसि गये और दिव्य स्वरूप धरि के श्रीनाथ जी की लीला में प्राप्त भई। और वा वेश्या के समाजी हुते सो मरन लागे जो हमारी तौ या तें जीविका हुती अब हम कहा खायंगे। तब कृष्णदास नें कह्यौ जो तुम क्यों रोवत हौ चलौ नीचे खायवे को देऊँ। तब उन समाजिन कों नीचे लायकें कृष्णदास नें सहस्र रुपया दे बिदा कियै।

कृष्णदास ने अपने मनतें समर्पी तातें श्रीनाथ जी नें वा वेश्या को अंगीकार करी। तातें श्रीआचार्य जी महाप्रभून की कानि तें सेवक की समर्पी वस्तु या भाँति सों अंगीकार करत हैं।

प्रसंग ६

और कृष्णदास को गंगाबाई सों बहुत स्नेह हुतो सो श्री-गुसाँई जी को न सुहावतो। सो एक दिन श्रीगुसांई जी श्रीनाथ जी कों भोग समर्पित हुते सो सामग्री ऊपर गंगाबाई की दृष्टी परी तातें श्रीनाथ जी आरोगे नाहीं। परि भोग तौ समर्प्यौ। ता पाछें समग्र भयौ तब भोग सरायौ। तब आरती करि अनोसरि करि कें श्रीगुसांई जी आप नीचे पधारे। तब सेवक आदि

भीतरिया सब ने प्रसाद लीयौ। तब श्रीगुसांई जी आप तौ भोजन करिकें पोढ़े। तब श्रीनाथ जी नें भीतरिया कों लात मारि कें जगायौ और वासूं कहैं जो हूँ तौ भूखो हूँ। तब वा[1] भीतरिया ने कह्यौ जो महाराज श्रीगुसांई जी नें भोग समर्प्यौ है और तुम भूखे क्यों रहै। तब श्रीनाथ जी ने कही जो राजभोग में तो गंगाबाई की दृष्टि परी हुती ताते राजभोग आरोग्यौ नाहीं।

तब वा भीतरिया उठि श्रीगुसांई जी के पास आयौ। सो श्री गुसांई जी भोजन करिकें पोढ़े हुते। तब भीतरिया ने आयकें श्रीगुसांई जी के चरण दाबे। तब श्रीगुसांई जी चौंकि उठे तब देखें तौ श्रीनाथ जी को भीतरिया है। तब वा भोतरिया सों पूछ्यौ जो यहाँ इतनी वेर कहाँ आयौ है। तब वा भीतरिया ने कह्यौ जो महाराज आज श्रीनाथ जी भूखे हैं मोकों लात मारिके जगायौ और कह्यौ जो आज तौ में भूखौहौं। तब मेने श्रीनाथ जी सों कह्यौ जो महाराज भोग तौ श्रीगुसांई जो ने समर्प्यो है तुम भूखे क्यों रहै। तब श्रीनाथ जी ने कही जो सामग्री पर तो गंगाबाई की दृष्टि परी ताते में नाहीं आरोग्यौ।

तब श्रीगुसांई जी सुनत ही ततकाल स्नान करिकें श्रीगुसांई जी के साथ ही आयौ। तब श्रीगुसांई जी नें वा भीतरिया सों कही जो भात और बड़ी करौ जो तत्काल सिद्ध होय आवै। तब भात और बड़ी करी सो तत्काल सिद्ध भयौ। तब श्रीनाथ जी कौ भोग समर्प्यौ। पाछें भीतरिया रसोई करिकें स्नान करिकें पर्वत

---

१ वह।

ऊपर आयै। तब श्रीगुसांई जी आज्ञा भई जो राज भोग की सामग्री तौ भई सिद्धि ता पाछें राज भोग सेन भोग इकठौरो समर्प्यौ। ता पाछें समय भयौ। तब भोग सराय सेन आरती करी। तब श्रीनाथ जी कों पोढायै भोग सरयौ हो सो प्रसाद एक डवरा में उहाई रह गयौ। तब रामदास भीतरिया ने कही जे पहले भोग समर्प्यौ हुतौ सो उहां हो रह गयौ। तब श्रीगुसांई जी डवरा में ते ठलाय के लेत उतरे। पाछें सब सेवकन कों वह बडी भात को महाप्रसाद रंचक रंचक बाँटि दीनों ता पाछें श्री गुसांई जी आप हू आरोगे। सो वह बडी भात को प्रसाद अति अद्भुति भयौ। अति अलौकिक स्वाद भयौ। सो श्रीगुसांई जी आप सरायौ। तब कृष्णदास ठाड़े हुते। तब कृष्णदास ने कही जो महाराज आप ही करन हारे आप ही आरोगन हारे तो क्यों न उत्तम होय। तब श्रीगुसांई जी ने हँस के कही जो यह तुम्हारे ही कीये भोगत हैं।

प्रसंग ७

अब जो यह बात श्रीगुसांई जी ने कही जो यह तुम्हारे ही कीये फल भोगत हैं सो यह बात सुनिकें कृष्णदास ने श्रीगुसांई जी सों बिगाडी। तब श्रीगुसांई जी सों श्रीकृष्णदास ने कही जो तुम पर्वत ऊपर मति चढ़ो। तब श्रीगुसांई जी आप तौ तहां ते फिरे सो परासोली में आय रहे। तब मन में विचारो जो कृष्णदास कहा मने करेगौ परि श्रीनाथ जी की इच्छा ऐसी है

सो श्रीनाथ जी की इच्छा जानि कैं कछू बोले नाहीं। सो आप परासोली में रहै। सो परासोली में ध्वजा के साम्है बेठि कै विज्ञप्ति कियौ। और श्रीगुसांई जी तीन दिन तौ श्रीगोवर्द्धन रहते और तीन दिन श्रीगोकुल रहते। तब ते परासोली आय रहै। तब श्रीगुसांई जी के मंदिर की खिरकी परासोली की ओर पडतो ताके साह्मैं बेठिते। तब श्रीनाथ जी आप खिरकी में आय दर्शन देते। तब यह जानि कै कृष्णदास नें परासोली की ओर की खिरकी बनवाय दीनी तब ते श्रीगुसांई जी गोकुल ते जब परासोली आवते तब रामदास जी सब सेवक आदि दे श्रीनाथ जी के राजभोग आरती करिकै अनोसरि करिकै श्रीगुसांई जी के दर्शन को परासोली आवते। सेा आय के चरणोदक लेय पाछें प्रसाद लेते। सेा कृष्णदास कों सुहावतौ नाहीं। और सब सेवक श्रीगुसांई जी के दर्शन विना महाप्रसाद केसे लेंय। परि सेवकन सों कृष्णदास की चले नाहीं।

और श्रीगुसाँई जी एक पत्र लिखिकैं रामदास भीतरिया को देते और कहते जो श्रीनाथ को दे दीजे। सेा पत्र श्रीनाथ जी को देते। श्रीनाथ जी विज्ञप्त उत्तर लिखिकें रामदास को देते। सेा रामदास श्रीगुसांई जी को देते। तब श्रीगुसांई जी वा पत्र को वाँचि कै पानी में पी जाते। या भाँति सों छै महीना बीते परि श्रीगुसांई जी नें श्रीनाथ जी कों अधिकारी वैष्णव जानि कै और श्रीआचार्य जो महाप्रभून कों सेवक जानि कछु न कह्यौ। परि श्रीनाथ जी के बिरह को स्नेह बहुत करते। या भाँति छै महीना भयै।

तब एक दिन राजा बीरबल आय निकसे। तब ता दिन तौ श्रीगुसांई जी परासोली हुते। श्रीगिरधर जी घर हुते। तब राजा बीरबल नें श्रीगुसांई जी कौ खबर कराई। तब पोरियान नें कही जो श्रीगुसाई जी तौ परासोली है श्रीगिरधर जी घर है। तब राजा श्रीगिरधर जी के दर्शन कों आये। तब बीरबल सों श्रीगिरधर जी ने कही जो कृष्णदास अधिकारी काका जी कौ श्रीनाथ जी के दर्शन नाहीं करन देत, सो काका जी कों खेद बहुत होत है, काका जी परासोली में जाय दर्शन करत है। तब बीरबल ने श्रीगिरधर जी सों कह्यौ जो अब हूँ जाय के कृष्णदास कों काढ़ूँगौ। यों कहि कें राजा बीरबल श्रीगिरधर जी सों बिदा होय कें मथुरा आये और श्रीगुसांई जी परासोली ते श्रीगोकुल आये। और बीरबल ने पांच सौ मनुष्य भेजे और कह्यौ जो कृष्णदास को पकरि लावौ। सो वे मनुष्य श्रीगोवर्द्धन आय कें कृष्णदास कों पकरि लाये। सो वे बीरबल ने कृष्णदास को बंदीखाने में दीनों। तब श्रीगिरधर जी सों कहवाय पठाई जो कृष्णदास को बंदी-खाने में दीनों।

तब श्रीगिरधर जी ने श्रीगुसांई जी सों कही जो कृष्णदास को बंदीखाने में दीने हैं। तब श्रीगुसांई जी ने कह्यौ जो हाय हाय श्रीआचार्य महाप्रभून के सेवकन को ऐसो कष्ट। तब श्रीगुसांई जी सों कह्यो जो तुमनें कह्यौ होयगौ। तब श्रीगिरधर जी ने कह्यो जो हमने तो बीरबल सों सहज ही कह्यौ हुतौ जो काका जी कों दर्शन नाहीं करन देते सो काका जी कों बहुत खेद होत है। तब

श्रीगुसांई जी ने कह्यौ जो भोजन जब करूँगौ तब कृष्णदास आवेगौ। तब श्रीगिरधर जी ततकाल घोड़ा मँगाय असवार होय कें मथुरा कों आयै। तब बीरबल सें कह्यौ जो काका जी भोजन नाहीं करत ताते कृष्णदास कों छोड़ देउ। तब राजा बीरबल नें कृष्णदास श्रीगिरधर जी के हवाले कर दियौ। तब श्रीगिरधर जी ततकाल संग ले श्रीगोकुल आये। तब श्रीगुसांई जी ने सुनो जा गिरधर जी कृष्णदास को साथ लेके आवत हैं सों श्रीगुसांई जी ठकुरानी घाट ऊपर पहुँचे। और वा ओर ते कृष्णदास आये सेा श्रीगुसांई जी कों दर्शन कियौ, और दंडौत करी, और एक नयौ पद करिकें गायौ। सेा पद॥

राग केदारौ

श्री बिट्ठल जू के चरण की बलि॥
हमसे पतित उधारन कारन परम कृपाल आयै आपन चलि॥
उज्जल अरुण दया रंग रंजित दश नख चंद्र विहरत मन निरदलि॥
सुभगकर सुखकर शोभन पावन भक्ति मुदित ललित कर अंजलि॥
अति सेमरदुलि सुगंध सुशीतल परत त्रिबिधि ताप डारत मल॥
भजि कृष्णदास बार एक सुधि करि तेरौ कहा करेगौ रिपुकल॥

यह पद श्रीगुसाई जी के आगे गायौ। पाछें श्रीगुसांई जो कृष्णदास कों अपने घर ले आयै। पाछें कृष्णदास सें श्रीगुसांई जी ने कह्यौ जो उठौ भोजन करौ। तब कृष्णदास ने कह्यौ जो

महाराज आप भोजन करियै पाछें में झूठन लेउगौ। तब श्री-गुसांई जी भोजन को बेठे। तब कृष्णदास नें एक पद और गायौ॥ सो पद॥

राग कान्हरौ

ताही कौं सिर नाइयै जौ श्रीवल्लभसुत पदरज रति होय॥
कीजै कहा आन ऊचे पद तिनसों कहा सगाई मोय॥
सार सार विचार मतौ करि श्रुति वचन[1] गोधन लियो निचोय॥
तहाँ नवनीत प्रगट पुरुषोत्तम सहजई गोरस लियो बिलोय॥
जाके मन में उग्र भरम है श्रीबिट्ठल श्रीगिरधर दोय॥
ताकौ संग विषम विष हू ते भूलिहू चातुर कर है जिन कोय॥
जिन प्रताप देखि अपने चख असन सार जोभिदेन तोहि॥
कृष्णदास ते सुरते असुर भये असुरते सुर भये चरणन छोह[2]॥४॥

यह पद सुनिकै श्रीगुसांई जी बहुत प्रसन्न भयै। पाछें श्री-गुसांई जी भोजन करिकै पधारे तब कृष्णदास सों कह्यौ जो अब जाउ भोजन करौ। तब कृष्णदास भीतर गयै। तब श्रीगिर-धर जी नें श्रीगुसांई जी की झूठन की पातर कृष्णदास के आगे धरी। तब कृष्णदास नें महाप्रसाद लीनों। पाछें बीडा दोय दियै। रात्रि कों कृष्णदास वहाँई सोय रहै।

ता पाछें पिछली रात्रि घड़ी दोय रही तब श्रीगुसांई जी उठे। देहकृत करि कें स्नान कियौ। श्रीनवनीत प्रिया जी के मंगला के

१ वच। २ छोहि।

दर्शन करि कें बाहिर पधारे। तब श्रीनाथ जी द्वार पधारवे की तैयारी किये। तब घोड़ा दोय मंगायै एक घोड़ा ऊपर श्रीगुसांई असवार भयै एक घोड़ा ऊपर कृष्णदास असवारी कीयै और श्रीगोकुल ते चले। सों श्रीनाथ जी द्वार दिन पहर सवा एक चढ़े जाय पहुँचे। सेा वहाँ श्रीनाथ जी को राजभेाग आयेा हुतेा सेा श्रीगुसांई जी ततकाल स्नान करिकै ऊपर पधारे। और श्रीगुसांई जी विज्ञप्ति पत्र परासेाली ते लिखते सेा रामदास भीतरिया के हाथ पठावते। ताकों प्रति उत्तर श्रीनाथ जी पत्र में लिखि के श्रीगुसांई जी को पठावते। सेा श्रीगुसांई जी जल में धेार पिजाते। सेा पिछले दिन को पत्र श्रीनाथ जी के हस्ताक्षर को सेा श्रीगुसांई जी राखे हुते। सेा पत्र साथ ही ले आये हुते।

पाछें श्रीनाथ जी कों राजभेाग आयेा हुतेा। सेा समय भयेा। तब श्रीगुसांई जी भेाग सरायवे का पधारे। तब श्रीगुसांई जी को देख के श्रीनाथ जी बहुत प्रसन्न भये और पूछेा जेा नीके हेा। तब श्रीगुसांई जी कहें जेा तुमको देखे सेाई दिन नीकें हैं। पाछें परस्पर दोऊ जने मुसिक्यायै। पाछें श्रीगुसांई जी राजभेाग सरायेा पाछें वह पत्र हुतेा सेा झारी में धरयेा। पाछें राजभेाग के दर्शन खुले। तब कृष्णदास ने कीये। पाछे श्रीगुसांई जी राज-भेाग आरती करि अनेासरि करि नीचे पधारे। पाछे रसेाई करि भेाग समर्पित भेाजन करि श्रीगुसांई जी पेाढ़े। सेा उत्थापन ते घड़ी दोय पहले उठे। पाछें उत्थापन को समय भयेा तब स्नान करि ऊपर पधारे। सेा संखनाद करवायेा। श्रीनाथ जी के उत्थापन

भयै पाछें सेन आरती उपरांत दर्शन करि कें कृष्णदास कों श्रीनाथ जी के सनिधान बुलायौ और कहौ जो कृष्णदास तुम अधिकार करौ और श्रीनाथ जी की सेवा नीकी भाँति सों करियौ। तब कृष्णदास ने श्रीनाथ जी के सन्निधान एक पद गायौ। सो पद ॥

राग कान्हरौ

परम कृपाल श्रीवल्लभनंदन, करत कृपा निज हाथ दे माथै ॥
जे जन शरण आये अनुसरही गहि सों पति श्रीगोवर्द्धन नाथै ॥
परम उदार चतुर चिंतामणि राखत भव धरा[1] ते साथै ॥
भजि कृष्णदास काज सब सरहीं जो जानें श्रीबिट्ठल नाथैं ॥२॥

यह पद गायौ और बीनती कीनी जो महाराज मेरौ अपराध क्षमा करौ। तब श्रीगुसाईं जी ने कह्यौ तुमारौ अपराध श्रीनाथ जी क्षमा करेंगे। पाछें कृष्णदास को बिदा कीयौ। पाछें श्रीनाथ जी कों पोढाय कें श्रीगुसाँई जी नीचे उतरे। श्रीगुसाईं जी परम दयाल कृष्णदास को कृत कछू मन में न आनो। श्रीआचार्य जी के सेवक जानि अनुग्रह कीयौ। पाछें श्रीगुसांई जी दिन दोय रहै पाछें श्रीगोकुल पधारे। फिर कृष्णदास श्रीगुसांई जी की आज्ञा ते अधिकार करन लागै ॥

प्रसंग ८

सों बहुत बरस लों भली भाँति सों अधिकार कीयौ। पाछें

---

१ धारा।

एक वैष्णव ने कृष्णदास सों कही जो मोकों एक कूआ बनवावनों है, और मोकों अपने देश कों जानों है। ताते द्रव्य तुमकों दे जात हौं सो तुम बनवाय दीजों। तब कृष्णदास ने कही जो आछौ। तब वह वैष्णव तीन सौ रुपैया देकें अपने देश को गयौ। तब कृष्णदास ने उन रुपैयान में ते एक सौ रुपैया एक कुल्हरा में धरि कें आम के वृक्ष के नीचे गाड़ दिये। कह्यौ जो दोय से रुपैया लाग चुकेंगे तब इनको काढ़ेंगे। सो आछै मुहूर्त देखिकें रुद्रकुंडऊपर कूआ खुदायौ। तब कितनेक दिन में वह कूआ मोहताई बन के तयार भयौ और दोय से रुपैया लगे। मठोठा बाकी रह्यौं।

तब उत्थापन के दर्शन करिकें कृष्णदास कूआ देखन को गये। सो हाथ में आसा हुतौ। सो आसा टेक के कूआ के ऊपर ठाडे भये। सो वह आसा सरक्यौ। तब कृष्णदास कूआ में जाय परे। तब तो मनुष्य दोय कूआ में उतरे। सो बहुतेरो ढूढ़ें परि कृष्णदास कौ शरीर हू न पायौ। तब सब मनुष्य उहाँ ते फेरि आये। सो ता समय श्रीगुसांई जी श्रीनाथजी को सेन भोग धरि कें मंजूष विराजे हुते। और रामदास श्रीगुसांई जी के पास बेठे हुते। ता समय काहू ने आय कें कह्यौ जो महाराज कृष्णदास ने कूआ बनवायौ हौ। सो कृष्णदास देखन गये हुते, सो आसा टेकि कें कूआ के मौहडे ऊपर ठाडे हुते, सो आसा सरक्यौ सो कूआ में गिरि परे। और मनुष्य दोय कृष्णदास को ढूँढवे को उतरे, सौ बहुतेरौ ढूँढे परि शरीरहू न पायौ, कहा जानियै कहा भयौ। तब

रामदास जी कहैं जो "अधोगच्छंतितामसाः" तब श्रीगुसाईं जी कहै जो रामदास ऐसें न कहि।

अब जो कृष्णदास कूआ में गिरे सो शरीर न मिल्यौ ताको कारन कहा। सो ताको कारन यह जो कृष्णदास में कोई अलौकिक जीव हुतौ सोतो श्रीनाथ जी की सेवा में प्राप्त भयौ। और कृष्णदास ने या शरीर सों श्रीगुसाईं जी की अवीज्ञा करी है। जो यह शरीर अलौकिक जीव भुगतनों है। कूआ में गिरत मात्र कृष्णदास को शरीर लोकिक सद्य होय कें पूछरी की और एक कृष्ण[1] है पीपर कौ तहाँ प्रेत होय कें रह्यौ भोग भुगतन कों। ताते कृष्णदास को शरीर कूआ में न मिल्यौ। श्रीगुसाईं जी की अवीज्ञा ते कृष्णदास को यह गति भई जो प्रेत होय कें पूछरी की और पीपर के वृक्ष ऊपर बैठे रहत हैं।

प्रसंग ९

और एक समय श्रीनाथ जी की भैंस खोय गई हुती। सो गोपीनाथ ग्वाल और पाँच ग्वाल पूछरी की ओर ढूंढ़वे कों गये हुते। सो गोपीनाथ देखें तो पूछरी की ओर श्रीनाथ जी खेलत हैं और एक पीपर ऊपर कृष्णदास प्रेत ह्वै के बैठे हैं। तब कृष्णदास ने गोपीनाथ ग्वाल सों कही जो अरे भैया मेरी बिनती श्रीगुसाईं जी सों करियो और कहियो जो कृष्णदास ने कह्यौ है जो हों तुम्हारो अपराधी हौं ताते मेरी यह अवस्था है। हूँ श्रीनाथ जी के

---

१ वृक्ष।

पास हूँ तौ मेरी गति होत नाहीं ताते मेरौ अपराध क्षमा करौ तो मेरी गति होय। और बाग में एक आम के वृक्ष के नीचे कूलहरा में एक सौ रुपैया गड़े हैं सो काढ़िकें वा कुआ को मठोठा बाकी रह्यौ है सो बनवाओ तो मेरी गति होय। सो गोपीनाथ ग्वाल नें यह बात श्रीगुसाईं जी के आगे कही जो महाराज कृष्णदास अधिकारी ने यह वीनती करी है। तब गुसाईं जी ने आम के नीचे ते रुपैया लाय कें मठोठा कूआ कौ बनावायौ। तब कृष्णदास की गति भई।

कृष्णदास कों प्रेत जोन में श्रीनाथ जी दर्शन देते ताकौ कारन यह जो श्रीनाथ जी के सन्निधान श्रीगुसाईं जी ने कृष्णदास सों कह्यौ जो कृष्णदास तुम अधिकार करौ और श्रीनाथ जी की सेवा नीकी भाँति सों करियों। तब कृष्णदास ने कह्यौ जो महाराज मेरौ अपराध क्षमा करौ। तब श्रीगुसाईं जी ने कह्यौ जो तुम्हारौ अपराध श्रीनाथ जी क्षमा करेंगे। श्रीनाथ जी की कृपा ते श्रीनाथ जी ने अपराध क्षमा करयौ। सो प्रेत जोन में दर्शन देते। परि स्पर्श न कीयौ। जो स्पर्श होय तो उद्धार होय। सो उद्धार तौ श्रीगुसाईं जी के हाथ है। कृष्णदास श्रीनाथ जी सों कहते जो महाराज तुम मोकों दर्शन देत हौं, मो सों बोलत हौ, और में प्रेत हौं ताते मेरो उद्धार क्यों नाहीं करत। तब श्रीनाथ जी ने कह्यौ जो हूँ तोकों दर्शन देत हौं बोलत हौं सो तौ श्रीगुसाईं जी के बचन के लियै। नाहीं तो प्रेत जोन में दर्शन नाहीं देतौ और बोलतोहू नाहीं और उद्धार तौ श्रीगुसाईं जी के हाथ है।

तेने श्रीगुसाईं जी को अपराध कीयौ है ताते श्रीगुसाईं जी उद्धार करेंगे तब होयगो।

ता पाछें श्रीगुसाईं जी आप परम कृपाल कृष्णदास के ऊपर दया आई जो अब तौ बहुत दिन भये हैं ताते अब उद्धार होय तौ भलौ। तब श्रीगुसाईं जी ध्रुवघाट ऊपर आय कें कृष्णदास को करम करवाय उद्धार कीयौ। तब कृष्णदास को उद्धार भयौ और लीला में प्राप्ति भयौ। और श्रीगुसाईं जी कहैं जो कृष्णदास ने तीन बात आछी करी। एक तौ अधिकार कीयौ सो ऐसो कियौ जो फेरि ऐसौ न करौ, दूसरे कीर्तन कियै सो अद्भुत कीयै, और तीसरे श्रीआचार्य जी महाप्रभून के सेवक होयकें सेवाहू ऐसी करी जो कोऊ न करेगौ। ताते वे कृष्णदास श्रीआचार्य जी महाप्रभून के ऐसे परम कृपापात्र भगवदीय हैं ताते इनकी वार्ता को पार नाहीं। ताते इनकी वार्ता कहाँ ताईं लिखियै॥ वैष्णव॥ ९१॥

इति श्रीआचार्य जी महाप्रभून के सेवक परम कृपापात्र चौरासी मुख्य वैष्णवन की वार्ता स०॥

अथ परमानंददास कनोजिया ब्राह्मण तिनकी वार्ता

—:०:—

प्रसंग १

सेा परमानंददास जी परम भगवल्लीला मयव्याती[१] श्रीठाकुर जी के परम सखा है। सेा जब श्रीआचार्य जी महाप्रभू आप भूतल पर प्रगट भयै तब श्रीगोवर्द्धन नाथ जी की आज्ञा ते दैवी जीवन के उद्धारार्थ और तैसेंई श्रीआचार्य महाप्रभून कों श्रीठाकुर जी कों परकार सब प्रगट भयौ और आप श्रीगेावर्द्धन पर्वत में प्रगट भये। सेा गेापालदास जी वल्लभाख्यान में गाये हैं जो अनेक जीव कृपा करें "वादेशांतर परवेस"। ताते परमानंददास जी कौ जन्म कन्नोज में हैं कनोजिया ब्राह्मण के घर भयौ। सेा वे परमानंददास जी बहुत येाग्य भये और कवि भये, भगवदकृपा के पात्र भये। कीर्तन बहुत आछौ गावते ताते परमानंददास जी के संग समाज बहुत रहतेा। आप स्वामी कहावते आप सेवक करते।

सेा भगवद इच्छा ते एक समय परमानंददास जी कन्नौज ते आप प्रयाग[२] कों आये सेा प्रयाग में उतरे। सेा वहाँ कीर्तन बहुत आछें

---

१ मध्य याती। २ प्राग।

गावते ताते बहुत लोग कीर्तन सुनिवे कों आवते। और अडेलते कार्यार्थ लोग बहुत आवते सेा इनके कीर्तन सुनिकें पार अडेल में जाय कहते जो परमानंददास जी इहाँ प्रयाग में आये हैं सेा कीर्तन बहुत आछें गावत हैं। सेा श्रीआचार्य जी महाप्रभून के सेवक जलघरिया कपूर छत्री, सेा उनके राग ऊपर बहुत आसक्ति, परि वे अवकाश नाहीं पावें जो परमानंददास जी के कीर्तन सुनिवे कूँ आवे। सेवा में अवकाश नाहीं जो प्राग जाय सकें।

सेा एक दिन एक वैष्णव प्राग ते अडेल में आयेा। सेा वाने कह्यौ जो आज एकादशी है सेा परमानंददास जी आज जागरन करेंगे। सेा यह सुनि कें वा जलघरिया नें अपने मन में बिचारयो जो आज परमानंद जी के कीर्तन सुनिवे कों चलनों। सेा वे छत्री कपूर जलघरिया अपनी सेवा सें पहुँच्र कें रात्रि कों अपने घर आये। सेा घर आय कें अपने मन में बिचार कीयेा जो या वेर नाव तौ मिलेगी नाहीं ताते कहा कर्तव्य। परि वे पेरवे में भले निपुन हुते सेा मन में बिचारी जो पैर कें पार जैये। पाछें अपने घर ते चले सेा श्रीयमुना जी के तीर ऊपर आय ठाडे भये। तब पर्दनी पहर कें बस्त्र सब माँथे सें बाँधि कें श्रीयमुना जी में पैर कें प्रयाग आये। पाछें बस्त्र पहर कें जा ठौर परमानंद स्वामी उतरे हुते तहाँ आयै, सेा इनको कछू मिलाप तौ परमानंद स्वामी सें हुतौ नाहीं जहाँ और सब जने बैठे हुते तहाँ एऊ जाय बैठे। परि एउ श्रीआचार्य महाप्रभून के सेवक है सेा सब कोऊ जानत हुते। ताते सबन नें इनकों आदर कर कें बैठायो सेा ये बैठे।

ता पाछें परमानंद स्वामी नें कीर्तन को प्रारम्भ कीयो। सो परमानंद स्वामी ने विरह के पद गायै। सो विरह के पद काहे को गायै सो प्रथम इनको स्वरूप कहि आये है। कही जो यह लीला मध्यायाती श्रीठाकुर जी के परमानंद स्वामी परम सखा हैं। सो उहाँ सो बिछुरे और इहाँ तो अब हो श्रीठाकुर जी कों दर्शन नाहीं भयौ और श्रीआचार्य जी महाप्रभून को दर्शन अब होयगो। श्रीआचार्य जी महाप्रभून के मार्ग को यह सिद्धान्त है जो भगवदीन[1] को संग होय तौ श्रीठाकुर जी कृपा करें। ताही के लियै श्रीआचार्य जी महाप्रभून ने परमानंद स्वामी के ऊपर अनुग्रह करिकें अपने कृपापात्र भगवदीय के अन्तःकरणन में प्रेरना करिकें परमानंद स्वामी ये इहाँ पठाये। सो ये श्रीआचार्य जी महाप्रभून के सेवक कैसे हैं जो जिनको श्रीठाकुर जो एक छन हूँ नाहीं छोडत इनको संग ही रहत हैं। काहे तें सूरदास जी गाए है "भक्ति विरह करत करुणामय डोलत पाछें पाछें।" और जगन्नाथ जोसी की हु वार्ता में लिख्यौ है जो जब राजपूत नें तलवार चलाई तब श्रीठाकुर जी नें हाथ पकरयौ ताते श्रीआचार्य जी महाप्रभून के सेवकन के सदा श्रीठाकुर जी निकट ही रहत है। ताते परमानंद स्वामी ने विरह के पद गायै। सो पद।

राग बिहागरो

ब्रज के बिरही लोग बिचारे

बिन गोपाल ठगे से ठाड़े अति दुर्बल तन हारे॥ १॥

---

१ भगवदीयन।

मात जसोदा पंथ निहारत निरखत साँझ सकारे।
जो कोई कान्ह कान्ह कहि बोलत अंखियन बहुत[1] पनारे॥२॥
यह मथुरा काजर की रेखा जे निकसे ते कारे।
परमानंद स्वामी बिनु ऐसे जैसे चंदा विनु तारे॥ ३॥
और पद गायौ सो पद॥

राग बिहागरौ

सब गोकुल गोपाल उपासी।[2]
जो गाहक साधन के ऊधौ सो सब बचन ईस पुर कासी॥ १॥
जद्यपि हरि हम तजी अनाथ करि अब छाँड़त क्यों रति जासी।
अपनी सीतलता तहा छोड़त यद्यपि बिधु राहु है ग्रासी॥ २॥
किंह अपराध जोग लिखि पठयौ प्रेम भजन ते करत उदासी।
परमानंद असो को बिरहन मागें मुक्ति गुनरासी॥ ३॥

राग कान्हरो

कौन रसिक है इन बातन को।
नंद नंदन बिन कासों कहिये सुनिरो सखी मेरे दुखिया मनको॥१॥
कहा वे यमुना पुलिन मनोहर कहा वह चंद सरद राति को।
कहा वे मंद सुगंध अमल[3] रस कहा वे षट् पद जलजातन को॥२॥
कहा वे सेज पौढ़िबो बन कौ फूल बिछौना मृदु पातन कौ।
कहा वे दरस परस परमानंद कोमल तन कोमल गात[4] कौ॥ ३॥

---

१ बहत। २ नोट :—यह पद सूरसागर में सूरदास के नाम से आया है। ३ अमत। ४ गातन।

राग कान्हरो

माई को मिलिवै नंद किसोरे ।
एक वार को नैन दिखावें मेरे मन को चोरे ॥ १ ॥
जागत जाम गनत नहीं खूंटत क्यों पाऊँगी भोरे ।
सुनरी सखी अब केसें जी जै सुन तमचर खग रोरे ॥ २ ॥
जो यह प्रीति सत्य अंतर गति जिन काहू बन होरे ।
परमानंद प्रभू आन मिलेंगे सखी सीस जिन ढोरे ॥ ३ ॥

इत्यादिक पद विरह के ऐसे परमानंद स्वामी ने सगरी राति गाये । पाछिली घड़ी चारि रात्र रही तब जो जो जागरन में आये हुते सो सब अपने घर कों गये । तैसेंई श्रीआचार्य जी महाप्रभून के सेवक एक जलघरिया कपूर हूँ परमानंद स्वामी सों 'जैसी कृष्ण स्मरण' कहि कें चले । और परमानंद स्वामी के कीर्तन सुनि कें बहुत प्रसन्न भये । और परमानंद स्वामी सों कह्यौ जो जैसे हमने सुने हुते ताते अधिक देखे । तुम परम भगवद अनुग्रह पूरण हो । ये जलघरिया क्षत्री कपूर महाप्रभून के परम भगवदीय है । ए जो चलि आये सो परमानंद स्वामी के ऊपर अनुग्रह करिवे कों आये है नातर भगवदीय काहे कों काहू के घर जाय ।

और यह ऊपर कहि आये हैं जो श्रीआचार्य जी महाप्रभू के निकट ही रहत है । सो याको हेत यह जो निकट रहत हैं तो इन जलघरिया क्षत्री कपूर की गोद में बैठिकें श्रीनवनीत प्रिया जी नें

परमानंद स्वामी के पद सुने। जो श्रीआचार्य जी महाप्रभून के मार्ग की मर्यादा है जो श्रीआचार्य जी महाप्रभून के अनुग्रह बिना श्रीठाकुर जी कृपा न करे। सो उन जलघरिया क्षत्री कपूर ऊपर श्रीआचार्य जी महाप्रभून कौं परम अनुग्रह है। ताते श्री नवनीत प्रिया जी इनकी गोद में बैठि के परमानंद स्वामी के पद काहे कों सुनने पड़े। सेा ताको हेत यह जो भगवदीय परमानंद स्वामी के ऊपर श्री नवनीत प्रिया जी अनुग्रह करिबे कों आप पधारे हैं तातें सुने। सेा श्रीआचार्य जी महाप्रभून के सेवक जलघरिया क्षत्री परमानंद स्वामी सों जे[1]सी कृष्ण करि के चले। सेा श्री-यमुना जी के तीर ऊपर आये। सेा वहाँ आय के बिचार कीयो जेा नाव की बाट देखै तो अवार होयगी और सेवा छूटेगी और श्रीआचार्य जी महाप्रभू भी खीजैंगे ताते जैसे पैर के आये हुते तैसे ही चले। सेा पैर के पार गये। सेा पार आवत ही स्नान करिकें अपनी सेवा में तत्पर भये।

पाछें वहाँ प्राग में परमानंद स्वामी की रात्रि कें जागरन के श्रमित सों आँखि लगी, निद्रा आई। सेा इतने में स्वप्न आयौ। सेा स्वप्न में देखे जो जेसे रात्रि के जागरन में श्रीआचार्य जी महाप्रभून के सेवक जलघरिया क्षत्री बैठे हैं और उनकी गोद में श्रीनवनीत प्रिया जी के दर्शन भये। और स्वप्न में श्रीनवनीत प्रिया जी परमा-नंद स्वामी सों कहैं और परमानंद स्वामी की निद्रा खुली सो वा

---

१ जै (जय श्रीकृष्ण)।

श्रीमुख को कोऊ सोंदर्य कोटि कंदर्पलाघवय परमानंद स्वामी ने देख्यौ। सेा स्वप्न में तेा हृदय में धरि लीयैा और मन में चटपटी लगी सेा यह दर्शन फेरि कब होयगेा। तब यह मन में बिचारयौ जो यह दर्शन उन श्रीआचार्य जी महाप्रभून के सेवक क्षत्री जलघरिया बिना न होयगेा, ताते होय तेा उनके पास जैयै। जेा उनसों मिले तब कार्य सिद्ध होय।

ऐसेा परमानंद स्वामी ने अपने मन में विचार कीयेा। सेा ततकाल प्राग ते अडेल कुं चले। सेा श्रीयमुना जी के तीर ऊपर आय ठाडे भये। सेा प्रातःकाल को समय भयैा। सेा प्रथम नाव चली तापर बैठि कें पार उतरे। तब आगें जाय कें देखें तो श्रीआचार्य जी महाप्रभू जो स्नान संध्या बंदन करत हैं। सेा परमानंद स्वामी कों श्रीमहाप्रभू जी को कैसेा दर्शन भयैा साक्षात् पूरन पुरुषोत्तम श्रीकृष्णचन्द्र सेा। श्रीगुसाईं जी वल्लभाष्टक में लिख्येा है "सेावस्तुतः कृष्ण एवच्च" ऐसेा दर्शन भयैा। श्रीआचार्य जी महाप्रभून के सेवक जलघरिया क्षत्री कपूर की गेाद में श्रीठाकुर जी काहे को बेठे यह कारण जिनके माथे ऐसे प्रभू विराजत है। पर परमानंद स्वामी के मन में यह जेा क्षत्री कपूर मिले तेा आछी। सेा काहे ते जेा जिनके माथे ऐसे प्रभू और जिनके दर्शन ते श्रीआचार्य जी महाप्रभून कों दर्शन भयैा। ता पाछें श्रीआचार्य जी महाप्रभून ने अपने श्रीमुख सों कह्यौ जेा परमानंद कछू भगवदीय जस वर्णन करि। तब परमानंद स्वामी नें बिरह के पद गाये॥ सेा पद॥

राग सारंग

कौन वेर भई चलेरी गोपाले।
हों ननसार गई हों [1] न्योते वार वार बोलत व्रज बोले [2] ॥१॥
तेरौ तन को रूप कहाँ गयौ भामिन अरु मुख कमल सुखाय रह्यौ।
सब सैाभाग्य गयैा हरि के संग हृदय सों कमल विरह दह्यौ ॥२॥
को बोले को नेन उघारे को प्रति उत्तर देहि बिकल मन।
जेा सर्वस्व अक्रूर चुरायैा परमानंद स्वामी जीवन धन ॥३॥

राग सारंग

जिय की साधन जिय ही रह्यो री।
बहुरि गेापाल देखि नहीं पाए बिलपत कुञ्ज अहीरी ॥१॥
एक दिन सोंज समीप यह मारग वेचन जात दहीरी।
प्रीत के लिये दान मिस मेाहन मेरी बाँह गहीरी ॥२॥
बिन देखें घड़ी जात कलप सम विरहा अनल दहीरी।
परमानंद स्वामी बिन दर्शन नेन न नींद बहीरी ॥३॥

राग संगम

वह बात कमल दल नैनन की।
वार वार सुधि आवत रजनी बहु दुरि देनी सेनी सेन की ॥१॥
वह लीला वह रास सरद को गेारज रजनी आवनि।
अरु वह ऊचो टेर मनेाहर मिस करि मेाहि सुनावनि ॥२॥
वसन कुञ्ज में रास खिलाया विथा गमाई मन की।
परमानंद प्रभू सों क्यों जीवे जेा पेाखी मृदु वेन की ॥३॥

---

१ ही। २ वाले।

या भाँति परमानंद स्वामी नें विरह के पद गाये। सो सुनिके परमानंद स्वामी सों कह्यौ जो कछू बाललीला वर्णन करि। तब परमानंद स्वामी नें कह्यौ जो महाराज में कछू समझत नाहीं। तब श्रीमहाप्रभून नें कह्यौ जो स्नान करि आउ हम तोकों समझावेंगे। तब परमानंद स्वामी नें श्रीमहाप्रभून सों पूछो जो महाराज आपको सेवक विरक्त कहा हैं। तब श्रीआचार्य जी महाप्रभून ने कह्यौ जो कछू टहल करत होयगो।

तब परमानंद स्वामी स्नान कों गये। सेा तब परमानंद स्वामी आगे जायकें देखें तो यमुना जी की गागर लैकें वह कपूर क्षत्री आवत हैं। तब निकट आये सेा साम्हैं मिले। सेा उनको देखकें परमानंद स्वामी बहुत प्रसन्न भये और परमानंद स्वामी नें उनको नमस्कार करी और कह्यौ, जो रात्रि को जागरन में आप पधारे हुते, सेा श्रीठाकुर जी नें आपकी गोद में बैठि के मेरे कीर्तन सुने, सेा आपकी कृपा ते श्रीठाकुर जी ने मोंसों कह्यौ, जो में श्रीआचार्य जी महाप्रभून के सेवक जलघरिया क्षत्री गोद में बेठि कें तेरे कीर्तन सुने हैं। और आपकी कृपा ते मेरेा भाग्य सिद्ध भयेा है सेा आवत ही तुम्हारी कृपा ते मोकों दर्शन भयेा। इतनी बात सुनि के उन जलघरिया ने कह्यौ जो ऐसे मति कहेा। जो श्रीआचार्य जी महाप्रभू सुनेंगे तो खीजेंगे सेा सेवा छोड़ के क्यों गये ताते यह बात मति कहेा। तब इतनी सुनिके परमानंद स्वामी कों आश्चर्य भयेा और कह्यौ जो ए धन्य हैं जिन ऊपर श्रीठाकुर जी कों ऐसेा अनुग्रह है और ये अपनों स्वरूप छिपावत हैं। पाछें परमानंद स्वामी तौ

स्नान को गये और जलघरिया जल की गागर लेके मंदिर में गयौ।

पाछें परमानंद स्वामी श्रीयमुना जी में स्नान करिकें तत्काल आप श्रीआचार्य जी महाप्रभून के आगे आय ठाड़े भये। तब श्री-आचार्य जी महाप्रभून ने कह्यौ जो परमानंद स्वामी आगे आउ बेठी[1]। तब परमानंद स्वामी आप आगे आय बेठे। तब श्रीआचार्य जी महाप्रभून ने परमानंद स्वामी को नाम सुनायौ। पाछें मंदिर में पधार कें श्रीनवनीत प्रिया जी के सन्निधान परमानंद स्वामी कों अनुक्रमणिका सुनाई। काहे ते जो प्रथम परमानंद स्वामी सों श्री-आचार्य महाप्रभून तें अपने श्रीमुख सों कह्यौ जो भगवद्यश वर्णन करि सो परमानंद स्वामी ने विरह को पद गायौ। तब श्रीआचार्य महाप्रभून ने कह्यो जो परमानंद स्वामी बाल लीला गाउ तब परमानंद स्वामी ने कह्यौ जो राज में कछू समझत नाहीं। सो परमानंद स्वामी ने काहेते कह्यौ जो ऊपर कहि आये हैं। जो ये श्रीठाकुर जो सो बिछुरे हैा बिछुरे के दुख की तौ स्फुर्ति रही और संयेाग जो सुख भयौ ताको बिसमरन भयौ। जो काहे ते जो सब सब लीला बिशिष्ट पूरण पुरुषोत्तम तौ श्रीआचार्य जी महाप्रभून के घर पधारे हैं।

सेा परमानंददास को श्रीआचार्य जी महाप्रभून नें अनुक्र-मणिका सुनाई तब सब लीला की स्फुर्ति भई। और अनुक्रमणिका सुनाई ताको कारण कहा। जो श्रीआचार्य जी महाप्रभू को नाम

---

१ बेठि।

है "श्रीभागवत पीयूष समुद्र मथन क्षमः"। सो श्रीभगवत कौ श्रीगुसाईं जी अमृत को समुद्र करिकें वर्णन किये हैं। सो अनुक्रमणिका द्वारा श्रीभागवत रूपी समुद्र श्रीआचार्य जी महाप्रभून नें परमानंद स्वामी के हृदय में धरयौ। ताते वाणी तो सब अष्टकाव्य की समान है और ये दोऊ परमानंद स्वामी और सूरदास जी सागर भयै। सो याते जेा श्रीभागवत रूपी अमृत सागर को स्वरूप इनके हृदय में श्रीआचार्य जी महाप्रभून ने धरयौ। सो काहे ते जेा सब कोऊ सूरसागर और परमनंदसागर कहते। अब परमानंददास सों श्रीआचार्य जी महाप्रभू श्रीमुख सों कहैं जेा बाललीला वर्णन करि। सो परमानंद जी ने तत्काल बाललीला के पद करि कें श्रीनवनीत प्रिया जो के सन्निधान गायै॥ सो पद॥

राग सांभरी

माई री कमलनैन श्याम सुन्दर झूलत हैं पालना।
बाललीला गावत सब गोकुल की ललना॥ १॥
अरुण तरुण कमल नख मनि जस जोती।
कुंचित कच मकराकृत[1] लटकत गजमोती॥ २॥
अँगूठा गहि कमलपान मेलत मुख माही।
अपनों प्रतिबिम्ब देखि पुनि पुनि मुसिकाही॥ ३॥
जसुमति के पुन्य पुञ्ज बारं बार लाले।
परमानंद स्वामी गोपाल सुत सनेह पाले॥ ४॥

---

१ भवराकृत।

यह पद सुनि कें श्रीआचार्य जी महाप्रभू बहुत प्रसन्न भये। फेरि और पद गायौ ॥ सो पद ॥

राग बिलाघल

जसौधा तेरे भाग्य की कही न जाय।
जो मूरति ब्रह्मादिक दुर्ल्लभ सेा प्रघटे[1] हैं आय ॥ १ ॥
शिव नारद सनकादिक महामुनि मिलि वे करत उपाय।
ते नंदलाल धूर धूसर वपु रहत गोद लिपटाय ॥ २ ॥
रतन जडित पोढाय पालने वदन देखि मुसिकाई[2]।
झूलौ मेरे लाल बलिहारी परमानंद जस गाई[3] ॥ ३ ॥

राग बिलाघल

"मणिमय आंगन नन्द के खेलत दोऊ भैया" सो ऐसें बाल लीला के पद परमानंददास ने गायै। सो सुनिकें श्रीआचार्य जी बहुत प्रसन्न भये।

सो परमानंददास जी श्रीआचार्य जी महाप्रभून के पास हैं[4]। सो परमानंददास कों अपने कीर्तन की सेवा दीनी। सो परमानंददास जी श्रीनवनीत प्रिया जी को नित्य नये पद करिकें भाँति भाँति के सुनावते। तब अनोसर होतो तब परमानंददास जी श्रीआचार्य जी महाप्रभून के आगें पदकीर्तन करे। श्रीआचार्य जी महाप्रभून नित्य कथा कहते सेा परमानंददास जी नित्य सुनते। सेा ताही प्रसंग के कीर्तन करिकें परमानंददास जी

१ प्रगटे। २ मुसिकाय। ३ गाय। ४ हे।

सुनावते। सो एक दिन परमानंददास जी नें श्रीठाकुर जी के चरणार्बिंद को महात्म सुन्यौ। सो चरणार्बिंद के महात्म को कीर्तन करि श्रीआचार्य जी महाप्रभून को सुनायौ। सुनि के श्रीआचार्य जी महाप्रभू बहुत प्रसन्न भये॥ सो पद॥

राग कान्हरौ

चरण कमल वंदौ जगदीश गोधन के संग धाए।
जे पद कमल धूरि लपटाने करि गहि गोपीन के उर लाए॥ १॥

यह पद सम्पूरण करि के परमानंददास जी नें गायौ और श्रीआचार्य जी महाप्रभून के स्वरूप को और प्रार्थना को पद गायौ॥ सो पद॥

राग कान्हरौ

"यह मांगों गोपी जन वल्लभ"॥

यह परमानंद स्वामी ने सम्पूर्ण करि कें गायौ। सो सुनि कें श्रीआचार्य जी महाप्रभू अपने मन में जाने जो यह मिस कर के परमानंददास जी या पद कों सुनाय कें व्रज के दर्शन की प्रार्थना कीनी है ताते व्रज कों अवश्य चलनों॥

प्रसंग २

श्रीआचार्य जी महाप्रभू यह विचार करें जो व्रज कों पधारवे कों उद्यम कीयो। सो दामोदरदास हरिसानी कृष्ण मेघन परमानंददास जी और यादवदास हलवाई तथा रसोई की सामग्री

संग लेकें चले और सब वैष्णव संग ले आप श्रीआचार्य जी महाप्रभू ब्रज को पधारे।

सो ब्रज को आवत परमानंददास को गाम कन्नौज आयो तब परमानंददास ने श्रीआचार्य जी महाप्रभून सों वीनती कीनी जो महाराज मेरे घर पधारियै आपके अनुग्रह ते मेरौ भाग्य सिधि भयो है अब मेरे घर हू पावन करियै। तब श्रीआचार्य जी महाप्रभू आप अंतर्यामी कृपानिधान भक्त मनोरथ पूरक आप कृपा करि कें पधारें। सो परमानंददास के घर आछी भाँति सों श्रीआचार्य जी महाप्रभून नें रसोई करि श्रीठाकुर जी कों भोग समर्प्यो। पाछें भोग सराय कें आप प्रसाद लीयौ पाछें आप गादी तकियान के ऊपर बिराजे। तब परमानंददास सो कह्यो जो कछू भगवद्यश गावौ। तब परमानंददास ने मन में बिचारी जो या समय श्रीआचार्य जी महाप्रभून को मन तो ब्रज में श्रीगोवर्द्धन नाथ जी के पास है ताते विरह के पद गाऊँ। सो विरह को पद ऐसो गायौ जामें छिन हूँ कलप समान जाय ॥ सो पद ॥

राग सोरठ

हरि तेरी लीला की सुधि आवै ॥
कमल नैन मन मौहनी मूरत मन मन चित्र बनावै ॥१॥
एक वार जाय मिलत माया करि सो कैसे विसरावै।
मुख मुसिक्यान वंक अवलोकन चाल मनोहर भावै ॥२॥
कबहुक निवड तिमर आलिंगन, कबहुक पिक सुर गावै।
कबहुक संभ्रम कासि कासि कहि संगहीन उठि धावै ॥३॥

कबहुँक नैन मूदि अन्तर गति मणि माला पहरावै।
परमानंद श्याम ध्यान करि ऐसे बिरह गवावै॥४॥

यह पद परमानंददास ने गायौ। सो सुनि कें श्रीआचार्य जी महाप्रभून को मूर्छा आई। सो जा लीला को पद परमानंददास नें गायौ ता लीला विषै श्रीआचार्य जी महाप्रभू मग्न भये। सो देहानुसंधान न रह्यौ। सो तीन दिन लों श्रीआचार्य जी महाप्रभून कों मूर्छा रही। सो सबरे सेवक दामोदरदास हरसानी प्रभृति श्रीआचार्य जी महाप्रभून के दर्शन करे सो वेसे ही बेठे रहै। चतुर्थ दिन के प्रातःकाल श्रीआचार्य जी महाप्रभू सावधान भयै तब सब वैष्णव प्रसन्न भयै। तब परमानंददास जी मन में डरपै जो फेरि ऐसो पद न गाऊँ। फेरि सूधे पद गाए। सो पद॥

राग विभाग

माई री हों आनंद गुन गाऊँ।
गोकुल की चिन्तामणि माधौ जो माँगो सो पाऊँ॥ १॥
अब[1] ते कमलनैन ब्रज आयै सकल संपदा बाढ़ी।
नंदराय के द्वारे देखौ अष्ट महासिद्धि ठाढ़ी॥ २॥
फूले फले सदा वृन्दावन कामधेनु दुहि दीजै।
मारग मेघ इंद्र वरषा में कृष्ण कृपा सुख लीजै॥ ३॥
कहत जसोधा सखियन आगें हरि उत्तकर्ष जनावै।
परमानंददास को ठाकुर मुरली मनोहर भावै॥ ४॥

---

१ जब।

और हू पद गायौ। सो पद।

राग गौरी।　　"बिमल जस बृन्दावन के चंद्र को"

यह पद सम्पूरण करिके गायौ। फेरि और गायौ।

राग सारंग।　　"चलिरी नंदगाँव जाय बसियै"

यह पद सम्पूर्ण करिकें गायौ। सो पद में यह कह्यौ जो चलरी नंदगाँव जाय बसियै।

सो श्रीमहाप्रभू जी सुनि के ब्रज कों पधारे। सो श्रीगोकुल आवत ही श्रीआचार्य जी महाप्रभू श्रीयमुना जी के तीर ऊपर छोंकर के नीचे बेठक में तहाँ श्रीआचार्य जी महाप्रभू बिराजै। और एक बैठक श्रीद्वारिका नाथ जी के मंदिर के पास हैं सो भीतर की बैठक है। सो रात्रि के विश्राम तथा रसोई की ठोर है। उहाँ श्रीआचार्य जी महाप्रभून को घर हुतो। जब आप श्रीगोकुल पधारते तब उहांई उतरते। सो यह भीतर की बेठक है। पाछें सब वैष्णवन ने श्रीयमुना जी स्नान कीयै और परमानंददास जी हू श्रीयमुना जी को जस वर्णन कीयै॥ सो पद॥

राग रामकली

श्रीयमुना जी यह प्रसाद हों पाऊँ।
तिहारे निकट रहों निसबासर रामकृष्ण गुन गाऊँ॥ १॥
मंजन बिमल पावन जल चिंता कुलख बहाऊँ।
तिहारी कृपा भान की तनया हरि पद प्रीत बढ़ाऊँ॥ २॥
बिनती करौं यहो वर मागौं अधम संग बिसराऊँ।
परमानंददास फलदाता मगन गोपाल लडाऊँ॥ ३॥

राग रामकली । "श्रीयमुना जी दीन जान मोहि दीजै[1]"

सेा ऐसे पद सम्पूरण करिकें परमानंददास जी नें बहुत गाये । श्रीआचार्य जो आगें तीर बिषें गाये ।

ता उपरांत श्रीमहाप्रभू जी नें परमानंददास कों बाललीला विशिष्ट श्रीगोकुल के दर्शन करवायै । सेा परमानंददास को ऐसा दर्शन भयौ सेा सब व्रज भक्त श्रीयमुना जल की गागरि भरि ले जाते हैं और श्रीठाकुर जी मार्ग में खेलते हैं और व्रज भक्तिन कों जल की गागरि उठाय देते हैं और उनकी कचु[2]तोरे हैं या भाँति सो दर्शन भयै । सो तेसोंई पद श्रीआचार्य जी महाप्रभून के आगें गायौ ॥ सेा पद ॥

राग बिलावल

जमुना जल घर भरि चली चंद्रावलि नारी ।
मारग खेलत मिलि घनश्याम मुरारी ॥ १ ॥
नैनन सों नैना मिले मन रह्यौ है लुभाई ।
मोहन मूरत जिय बसी पग धरो न जाई ॥ २ ॥
तब की प्रीति प्रगट भई यह पहली भेट ।
परमानंद ऐसी मिली जेसी गुड में चेंट ॥ ३ ॥

राग सारंग

लाल नेक टेको मेरी बैयां ।
ओघट घाट चल्यौ नही जाई रपटत हों कालिन्दी महियां ॥ १ ॥

---

१ लीजै । २ कंचुकी ।

यह पद संपूरण करकें ऐसे पद गाये। ता पाछें परमानंद-नें बाल लीला के पद बहुत गायै और श्रीगोकुल कों स्वरूप जामें आवै ऐसो पद गायै॥ सेा पद॥

राग कान्हरौ

गावत गोपी मधु ब्रज बानी।
जाके भुवन बसत त्रिभुवनपति राजा नंद यसौधा[1] रानी॥१॥
गावत वेद भारती गावत गावत नारदादि मुनि ज्ञानी।
गावत गुन गंधर्व काल शिव गोकुल नाथ महातम जानी॥२॥
गावत चतुरानन जदुनायक गावत शेष सहस्र मुखरास।
मन क्रम बचन प्रीत यह अम्बुज अब गावत परमानंददास॥३॥

यह पद परमानंददास नें गायौ। पाछें और पद गायौ सो पद॥

राग कान्हरौ

जसुमति ग्रह आवत गोपी जन॥
बासर ताप निवारन कारन बारंबार कमल मुख निरखन॥१॥
चाहत पकरि देहरी उलंघन किलक किलक हुलसत मन हीं मन।
लोंन उतार दोऊ करि बारी फेर वारत[2] तन मन धन॥२॥
लेन उठाय चापत हीयौ भरि प्रेम दिवस[3] लागै दृग ढरकन।
चली लै पलना पोढावन को अरुकसाय[4] पोढे सुन्दर घन॥३॥
देत असीस सकल गोपी जन चिरजीवो लोग गज मुन।
परमानंददास को ठाकुर भक्त वत्सल भक्त मनरंजन॥४॥

१ जसोधा। २ डारत। ३ वसवि। ४ अरकसाय।

राग हमीर। "चितै चितै चित धारयौ री माई"

यह पद संपूरण करि कें गायै। सेा ऐसे पद परमानंददास ने बहुत गायै।

ता पाछें श्रीगेाकुलनाथ जी के दर्शन करि कें परमानंददास श्रीगोकुल ऊपर बहुत आसक्ति भये। सब ऐसे पद गायै जा में श्रीआचार्य जी महाप्रभून की प्रार्थना कीनी मेाकों श्रीगेाकुल में आय कें चरणारबिंद के नीचे राखेा। नितप्रति प्रभून के दर्शन करौ[1] सर्व लीला विशिष्ट पूरन पुरुषोत्तम हैं। और यह पद गायेा॥ सेा पद॥

राग कान्हरौ

यह मागौ जसेादानंदन॥
चरण कमल मन मन मधुकर या छबि नेनन पाऊँ दर्शन॥१॥
चरण कमल की सेवा दोऊ तन राजत बिजैलता घन नंदन।
वृषभानु नंदिनी मेरे उर वसु[2] प्रान जीघन घन॥२॥
बृज वसिवेा जमुना अचिवेा श्रीवल्लभ को दास यही पन[3]।
महाप्रसाद पाऊँ हरि गुन गाऊँ परमानंददास जीवन धन॥३॥

राग कान्हरौ

"जब लगि जमुना गाय गेावर्द्धन।
तब लग गेाकुल गाँव गुसाईं"॥

यह पद सम्पूर्ण करिकें प्रार्थना के पद गाये। तब कितनेक दिन श्रीआचार्य जी महाप्रभू गेाकुल में विराजै। ता पाछें

---

१ करूँ। २ सर्वसु। ३ मन।

सब वैष्णवन कौं संग लेकें श्रीगोवर्द्धन नाथ जी के दर्शन को पधारे ॥

प्रसंग २

अब श्रीआचार्य जी महाप्रभू स्नान करि कें पर्वत ऊपर पधारे। सेा आवत ही परमानंददास नें श्रीनाथ जी कौं श्रीमुख देखि कें वहां के वहां रहै। तब श्रीमहाप्रभू जी नें श्रीमुख सों कह्यौ जेा परमानंददास कछू भगवत लीला गावो । तब परमानंददास अपने मन में विचारे जेा कहा गाऊँ। तब ऐसे विचारौ जेा जामें प्रथम अवतार लीला, पाछें चरणार्बिंद की बंदना, पाछें भगवद्गुर्णन को स्वरूप, ता पाछें बाल क्रीडा, ता पाछें श्रीठाकुर जी को महात्म । ऐसौ पद परमानंददास नें गायेा ॥ सेा पद ॥

राग कान्हरौ

मोहन नंदराय कुमार ।
प्रगट ब्रह्म निकुंज नायक भक्त हित अवतार ॥१॥
प्रथम चरण सरोज बन्दो श्याम घन गोपाल ।
मकर कुंडल गंड मंडित चारु नेन विसाल ॥२॥
बलिराम सहित विनोद लीला से कर हेत ।
दास परमानंद प्रभू हरि निगम बोलत नेत ॥३॥

और असक्ति को पद गायेा ॥

राग पूरबी

मेरौ माई माधो सों मन लाग्यौ ।
मेरौ नेन और कमल नैन कौ इकठौरौ करि मान्यौ[1] ॥ १ ॥

---

१ सान्यो ।

लोक वेद की कानि तजी में न्योती अपने आन्यौ।
एक गोविंद चरण के कारण वैर सबन सो ठान्यौ॥ २॥

अबको[1] भिन्न होय मेरी सजनी दूध मिल्यौ जेसे पान्यौ।
परमानंद मिली गिरधर सों है पहली पहचान्यौ॥ ३॥

ऐसे पद परमानंददास ने गाये ता पाछें श्रीआचार्य जी महाप्रभू सेन[2] आरती करि श्रीनाथ जी कौं पोढायै। तब अनोसर करि आप नीचे पधारे। तब परमानंददास हू नीचे आय बैठे। तब रामदास भीतरिया नें परमानंददास को महाप्रसाद दूध पठायौ। सो दूध परमानंददास जी लेवे लागे तब तातो लाग्यौ तब परमानंददास जी नें सीरो करि कें लीयौ। ता पाछें रामदास नें पूछ्यौ जो तुमको महाप्रसाद दूध पठायौ हौ सो आयौ। तब परमानंददास ने कही जो हाँ आयौ परि दूध बहुत तातो हुतो सो ऐसो दूध श्रीठाकुर जी केसें आरोगत हें ताते दूध तो सुहावतो भलौ। तब रामदास ने कह्यौ जो बहुत आछौ आप भगवदीय हौ जैसे आज्ञा करोगे तेसे करेंगे। तब सकारें सब सेवक ध्यान करि कें श्रीगोवर्द्धन नाथ जी की सेवा में तत्पर भये। तब श्रीआचार्य जी महाप्रभू स्नान करि कें श्रीगिरिराज ऊपर पधारे तब श्रीगोवर्द्धन नाथ जी कों जगायै। तब वा समय परमानंददास जी जाय कें श्रीठाकुर जी के जगायवे को पद गायो। सो पद।

---

१ क्यों। २ सैन।

राग विभास

जागो गोपाल लाल मुख देखों तेरौ।
पाछें ग्रह काज करों नित्य नेम मेरौ॥ १॥
विगसत निसा अरुण दिसा उदित भयौ भानु।
गुंजत अंग पंकज वन जागिये भगवान॥ २॥
द्वारे ठाड़े बंदीजन करत हैं पुकार।
वंस प्रसंग गावत हरिलीला सार॥ ३॥
परमानंद स्वामी दयाल जगत मंगल रूप।
वेद पुराण पठत महिमा लीला अनूप॥ ४॥
यह पद परमानंद ने गायौ। फिर कलेऊ को पद गायौ।
सो पद।

राग रामकली

पिछवारे ह्वै ग्वालन टेर सुनायौ।
कमल नेन प्यारो करत कलेऊ कोटन सुख लों आयौ॥१॥
अरी मैया गैया एक वन ब्याय रही हैं बछरा उहाँहीं बसायौ।
मुरली लई न लकुटिया न लीनी अरबराय कोउ सखा न बुलायौ॥२॥
चकृत भई नंद जू को रानी सत्य आय किधों अपनों पायौ।
फूलो न अंग समात रसघर त्रिभुवन पति सिर छत्र जो छायो॥३॥
मिलि बैठे संकेत सघन वन विविध भाँति कीयौ मन भायौ।
परमानंद सयानी ग्वालनि उलटि अंग गिरधर पिय प्यायौ॥ ४॥

ऐसे पद परमानंददास ने गायौ। ता पाछें श्रीगोवर्द्धन नाथ जी के मंगला के दर्शन खुले तब परमानंददास नें श्रीगोवर्द्धन

नाथ जी सों पूछौ जेा आप तातौ दूध क्यों आरोगत हैा। तब श्रीनाथ जी ने कह्यौ जेा ये हमको समर्पत है सैा आरोगत है। ता पाछें परमानंददास जी नित्य कीर्तन करिकें सुनावते।

तब ता समय एक राजा दर्शन कों आयें सेा श्रीगोवर्द्धन नाथ जी कें दर्शन करे तब फेरि आयकें रानी सें कही जेा श्रीगोवर्द्धन नाथ जी ठाकुर बहुत सुंदर हैं तातें तू जायकें दर्शन करि आउ। तब रानी नें कही जेा जैसे हमारी रीति है सेा होय सेा दर्शन करें। तब राजा नें कही जेा श्रीगोवर्द्धन नाथ जी के दर्शन में काहे को परदा है तब रानी ने मानी नहीं। तब राजा ने श्रीआचार्य जी महा प्रभून सें वीनती कीनी जेा महाराज में तो रानी सें बहुत कहत हेा परि वह आवत नाहीं तातें आप कृपाकरिकें दर्शन करवावौ तौ वह करै। तब श्रीआचार्य जी महाप्रभून ने कही जो यहाँ ले आवेा जो प्रथम वाकों एकांत में दर्शन करवावेंगे ता पाछें और लेाग दर्शन करेंगे। तब राजा अपनी रानी कों लिवाय कें श्रीगोवर्द्धन नाथ जी के दर्शन करवायें सेा सब लाग सरकि गये। तब रानी दर्शन करिवे लागी तब इतने में श्रीगोवर्द्धन नाथ जी ने सिंह पौर के किवाड़ खेाल दिये। सेा सब भीर दौर के रानी के ऊपरि परी सो रानी के सब वस्त्र निकस परे और बहुत लज्जित भई। तब राजा ने रानी सों कही जो मेने तोसें पहिले ही कह्यौ हुतो जो श्रीठाकुर जी के दर्शन में काहे कों परदा है। ये ब्रज के ठाकुर हैं इननें काहू को परदा राख्यौ नाहीं। तब वा समय परमानंददास जी ने पद गायौ।

राग देवगंधार

"कोनि यह खेलवे की बानि ॥
मदन गोपाल लाल काहू की राखत नाहि न कानि" ॥ १॥

यह एक तुक परमानंददास जी नें गाई हुती। तब श्रीआचार्य जी महाप्रभून नें कह्यौ जो परमानंददास एसे कहौ जो 'भली यह खेलवे की बानि'। तब परमानंददास जी नें एसौ ही पद गायौ। सो पद ॥

राग देवगंधार

भली यह खेलवे की बानि ॥
मदन गोपाल लाल काहू की नाहिन राखत कानि ॥ १ ॥
अपने हाथ ले देत है चनघर दूध दही घृत सानि ॥
जो वरजो तो आँख दिखावै पर धन कों दिन दान ॥ २ ॥
सुनि री जसोधा सुत के करतब पहले माँट मथानि ॥
फोरि डारि दधि डारि अाजर[1] में कोन सहै नित हानि ॥ ३ ॥
ठाडी देखत नंद जू की रानी मूंदि कमल मुख हानि ॥
परमानंददास जानत हैं बोलि बूझि धों आनि ॥ ४ ॥

यह पद परमानंददास ने गायौ। ता पाछें कितेक पद गाये। जो जो लीला श्रीठाकुर जी ने करी सो ता ता लीला के पद परमानंददास नें गायौ।

सो एक दिन भगवदीय रामदास जी कुंभनदास जी सब वैष्णव मिलि कें परमानंद जी जहाँ रहत हुते तहाँ आये। सो

---

१ अजर।

भगवदीय आये जानि कें परमानंददास जो बहुत प्रसन्न भये जो आज मेरे घर भगवदीय आये हैं सौ मेरो बडौ भाग्य है और आज मेरो भाग्य सिद्धि भयौ है। सेा काहे ते श्रीठाकुर जी भगवदीय के हृदय में सदा सर्वदा विराजत हैं। ताते भगवदीय की कृपा होय तौ श्रीठाकुर जी अनुग्रह करें। जो ये सब भगवदीय मेरे घर पधारे हैं सेा प्रथम भगवदीय की न्यौछावरि करौ। जब यह बिचार कें परमानंददास ने ऐसे ही पद कह्यौ। सेा पद।

राग हमीर

आये मेरे नंद नंदन के प्यारे॥
माला तिलक मनोहर बानो त्रिभुवन के उजियारे॥ १॥
प्रेम सहत वसत मन मोहन नेकहु टरत न टारे॥
हृदय कमल के मध्य बिराजत श्रीब्रजराज दुलारे॥ २॥
कहा जानों कौन पुण्य प्रगट भयौ मेरे घर जो पधारे॥
परमानंद प्रभु करी न्योछावर वारंवार हों वारे॥ ३॥

यह पद भगवदीयन की भेट करि अपने आयै भगवदीयन कों विदा कियै। ता पाछें ऐसी रीति सों परमानंददास नें श्रीनाथ जी की भली भाँति सो सेवा कीनी। सों वे परमानंददास जी श्रीआचार्य जी महाप्रभून के ऐसे कृपापात्र भगवदीय है सो इनकी वार्ता कहां ताईं लिखियै॥ प्रसंग॥ ३॥ वैष्णव॥ ९९॥

अथ कुम्भनदास गोरवा तिनकी वार्ता

—: o :—

प्रसंग १

सेा वे कुंभनदास जी श्रीगोवर्द्धन पर्वत के पास जमुनावतौ गाँव है तामें रहते। सेा जमुनावतौ नाम वा गाँव को काहे ते है जेा जमुना जी को प्रवाह सारस्वत कल्प में याके निकट हुतौ ताते जमुनावतौ नाम वा गाँव को है। तामें कुंभनदास जी रहते और परासोली चंदसरोवर के ऊपर उन कुंभनदास जी की धरती हुती सेा वहाँ खेती करते। सेा कुंभनदास जी श्रीगोवर्द्धन नाथ जी के परम सखा हुते और कृपापात्र हुते। सेा अब ही श्री गेावर्द्धन नाथ जी प्रगट होय के श्रीमहाप्रभू जी को बुलावेंगे तब ये भगवदीय प्रसिद्ध होयंगे।

सेा एक समय श्रीआचार्य जी महाप्रभू पृथिवी परिक्रमा करत झारखंड में पधारे। सेा झारखंड में श्रीगोवर्द्धन नाथ जी नें आज्ञा दीनी जो हम गोवर्द्धन में तीन दमन हैं नागदमन, इन्द्रदमन देवदमन। तिनके मध्य में हम देवदमन हैं सेा मेरो नाम है। ताते तुम आयके हमकों पधरावेा और हमारी सेवा को पुकार प्रगट करेा। तब श्रीआचार्य जी महाप्रभून नें पृथ्वी परिक्रमा उहाँ ही राखि कें बेग पधारे। तब दामोदरदास हरसानी, कृष्णदास मेघन, गेाविंद दुबे, जगन्नाथ जेासी, रामदास ये पाँच वैष्णव संग हुते। सेा श्रीआचार्य जी महाप्रभू श्रीगेावर्द्धन की तरहटी आय

कें सद्दू पाँडे के चोतरा ऊपर बिराजै। सो आगें श्रीगोवर्द्धन नाथ जी के प्रागट्य में यह सद्दू पाँडे भवानी नरो श्रीआचार्य जी महाप्रभून के सेवक भये हुते तिनकी श्रीआचार्य जी महाप्रभून नें श्रीगोवर्द्धन नाथ जी की सेवा सोंपी। और ब्रजबासी ब्रज में श्रीआचार्य जी महाप्रभून के सेवक बहुत भये। और कुंभनदास जी श्रीआचार्य जी महाप्रभून की शरण आयै।

सो श्रीआचार्य जी महाप्रभून श्रीगोवर्द्धन नाथ जी कों एक छोटो सो मंदिर सिद्धि करवायौ। तामें श्रीनाथ जी कों पधराये और रामदास चोहान कों सेवा की आज्ञा दीनी। और सब ब्रजबासी लोग दूध दही माखन लावते सो श्रीगोवर्द्धन नाथ जी आरोगत हुते। और रामदास कों जा भगवदीच्छा तें जो आप प्राप्त होय सो भोग धरते और आप प्रसाद लेते। और जो ब्रजबासी लोग श्रीआचार्य जी महाप्रभून के सेवक भये हुते तिनकों श्रीआचार्य जी महाप्रभून ने आज्ञा दीनी जो यह मेरो सर्वस्व है सो तुम सब बातन सों यत्न राखियौ और सेवा में तत्पर रहियौ। और कुंभनदास कों और सब सेवकन कों श्रीआचार्य जी महाप्रभून ने आज्ञा दीनी जो तुम देवदमन के दर्शन कियै बिना महाप्रसाद मति लीजियौ। तब या भाँति सों आज्ञा करि कें श्रीआचार्य जी महाप्रभून नें पृथ्वी परिक्रमा झारखंड में राखी हुती। अब कुंभनदास जी नित्य श्रीआचार्य जी महाप्रभून की कृपा तो श्रीगोवर्द्धन नाथ के दर्शन कों आवते। सो कुंभनदास कीर्तन बहुत नीके गावते। जो श्रीआचार्य जी महाप्रभून नें

कुंभनदास जी कों नाम सुनायौ और ब्रह्म संबंध करवायौ। तब कुंभनदास जो नित्य नये पद करि कें श्रीनाथ जी को सुनावते। और श्रीनाथ जो कुंभनदास जी के घर पधारते, और बहुत क्रीडा करते, खेलते वार्ता करते और बहुत कृपा कुंभनदास जी के ऊपर करते। अब राम दास जी श्रीगोवर्द्धन नाथ जी की सेवा करन लागे।

सो एक समय मलेच्छ को उपद्रव भयौ। सो यहाँ मानिकचंद पांडे, सद् पांडे, रामदास चौहान, कुंभनदास सब मिलि कें बिचार कियौ जो यह मलेच्छ आयौ है सो यह धर्म को द्वेषी है सो कहा कर्तव्य है। तब सब ने ही कही जो यामें कहा कर्तव्य कहा पूछनों, अपनो बिचारयौ कहा होत है, ताते श्रीनाथ जी को पूछौ जो महाराज कहा करें। तब श्रीनाथ जी ने आज्ञा दीनो जो हमको यहाँ ते ले चलों हम यहाँ ते उठेंगे। तब सबन नें पूछौ जो महाराज कहाँ पधारोगे। तब आपनें श्रीमुख सों कह्यौ जो टोड के घने में चलेंगे। तब एक भेसा मंगायौ ता पर श्रीगोवर्द्धन नाथ जी को बेठाये। तब एक ओर ते तौ रामदास पकरें रहै और एक ओर ते कुंभनदास पकरे रहै और सब सेवक संग चलें जात है। तहाँ घने में कांटे बहुत हुते सो उहाँ कांटेन में बेठे सो बस्त्र सबन के फटि गये और सरीर में कांटे लगे दुःख बहुत पायौ। सो घने में एक तालाब हुतौ तहाँ रूखन को एक चौक है तहाँ बड़े रूख नीचे श्रीनाथ जी बिराजे। सो कछूक सामग्री संग्रह हुती सो रामदास ने भोग धरि जल को करुआ भरि कें आगे धरि कें सब वैष्णव

बेठे । तब श्रीगोवर्द्धन नाथ जी नें कुंभनदास सों कह्यौ जो कुंभनदास जी कछू गावौ । तब कुंभनदास जी तौ मन में कुढ रहे हुते तब एक पद नयो करि कें गायो ॥ सो पद ॥

राग सारंग

भावत है तोय टोड को घनौ ॥
कांटे लगे गोखरू बूढे फट्यौ जात यह तनौ ॥१॥
सिहों कहा लोकटी को डर यह कहा घानक बन्यौ ॥
कुंभनदास प्रभू तुम गोवर्द्धनधर यह कोन रांड ढेडनीको जन्यौ ॥२॥

यह पद कुंभनदास ने गायौ । सो सुनि के श्रीनाथ जी मुसिक्याय कें चुप करि रहे । इतने में श्रीगोवर्द्धन ते समाचार आये जो यह मलेच्छ की फोज आई हुती सो पाछी फिर गई । तब श्रीगोवर्द्धननाथ जी पर्वत ऊपर मंदिर में पधारे ॥

प्रसंग २

अब श्रीनाथ जी पर्वत ऊपर मंदिर में पधारे । सो ब्रज के लोगन कों बहुत हर्ष भयौ जो धन्य देवदमन जो ऐसो उपद्रव आयो हुतो सो इनके प्रताप ते सब मिटि गयौ । तब कुंभनदास जी प्रसन्न होय के पद गाये सोपद श्रीगोवर्द्धन नाथ जी को सुनायै । राग श्रीचर्चरी ॥ "जयति जयति हरिदास सर्वधर नें" ॥ यह पद सम्पूरण करि कें गायौ पाछें और पद गाये सो पद ॥ राग सारंग "कृष्ण तंनतरया तोर" यह पद सम्पूरण करि

कें कुंभनदास ने गायौ। पाछें नित्य ऐसे पद कुंभनदास जी देव दमन को सुनावते।

तब कुंभनदास जी के पद सब जगत में प्रसिद्ध भये सो सब लोग इनके पद गावते। तब इनको पद काहू कलामत ने सीख्यौ सो फतेपुर सीकरी में देशाधिपति के आगें कुंभनदास जी को पद कीयो भयौ पद घा कलामत ने गायौ। सो सुनि के देशाधिपति को चित्त घा पद में गड़ गयौ और माथौ धुनौ जो ऐसेहू महापुरुष ह्वै गये हैं जिनकों ऐसे दर्शन परमेश्वर के होत हैं। तब कलामत ने कह्यौ जो अजी साहब अब हूँ हैं। सो सुनि कें देशाधिपति बहुत प्रसन्न भयौ और घा कलामत से कह्यौ जो वे कहां हैं। तब घा कलामत ने कही जो श्रीगोर्द्धन के पास जमुनावतौ गाँव है तहाँ वे रहत हैं। तब देशाधिपति ने कही जो यहाँ बुलावौ हम उन्सों मिलेंगे। तब देशाधिपति ने मनुष्य और असवारी कुम्भनदास के बुलायवे कों भेजे। तब कुम्भनदास जी तो घर हुते परासोली में बेठे हुते सो मनुष्यन ने उहाँ बताय दीये। तब कुम्भनदास जी घर तो हुते नाहीं पातसाह ने याद कीये हो।।[1] तब कुम्भनदास ने कही जो भैय्या में कछू देशाधिपति को चाकर तौ नाहीं मेरो देशाधिपति सों कहा काम है। तब देशाधिपति के मनुष्यन ने कही जो बाबा हम तौ काम कछू समझत नाहीं परि हमको देशाधिपति को हुक्म है जो कुम्भनदास कों ले आवौ, ताते यह पालकी है यह घोडा है जापर चाहौ तो पर बेठि कें

१ तब कुम्भनदास सों कह्यौ जो तुमकों पातसाह नें याद कीयो है।

चलिये, हम तो आये हैं सो आपको ले जायेंगे। तब कुम्भनदास नें मन में विचार कीयौ जो जिन जाये तौ निर्वाह न होयगौ सो कुम्भनदास जो तत्काल उहाँ ते पनहिं पहिर के चले।

तब कुम्भनदास जो कों लेबे को आये हुते तिनने कही जो बाबा सवारी में बैठिये। तब कुम्भनदास ने कह्यौ जो भैय्या में तौ कबहूँ बैठ्यौ नाहीं। पाछें ऐसे ही चले। सो फतह[1] पुर सीकरी आय पहुँचे। सो देशाधिपति के डेरा हुते तहाँ गये। तब मनुष्यन नें देशाधिपति सों कह्यौ जो कुम्भनदास जो आये हैं। तब देशाधिपति ने कुम्भनदास सों कही जो कुम्भनदास जो आवो बैठो। सो आय बैठे। सो वह स्थल कैसा है जामें जडाव को रावटी, तामें मोतीन की झालरी लगी है ऐसो स्थल है, तामें बैठे। तब मन में बहुत दुःख लाग्यौ और कह्यौ जो यासो तौ हमारे ब्रज के होंसन के रूख आछे हैं सो जिनमें श्रीगोवर्द्धन नाथ जो खेलत हैं। तब इतने में देशाधिपति बोल्यौ जो कुम्भनदास जो तुमने विसनपद बहुत कीये हैं सो मेने तुमको बुलायो है ताते तुम कछू विसनपद गावो। तब कुम्भनदास जो तौ मन में कुढे हुते जो विचारें जो कहा गाऊँ मेरी वाणी के भक्ता तौ श्रीगोवर्द्धनधर हैं और कछू गाये बिना मेरौ काम चलेगौ नाहीं ताते ऐसो गाऊँ जो कबहूँ मेरो नाम न लेय। काहे ते जो याके संग ते मेरे प्रभू छूटे हैं ताते कठोर वचन कहूँ जो बुरो मानेगौ तो कहा करेगो। तब यह मन में आई "जो जाको मन मोहन संग करे एको के सब से नहीं

---

1 फते।

सिरने जो जग वैर परे" यह विचारि के ता समय कुम्भनदास जी ने एक नयौ पद करि कें गायौ ॥ सो पद ॥

राग सारंग

भक्तन कौ कहा सीकरी काम ।
आवत जात पन्हैया टूटी बिसर गयो हरि नाम ॥ १ ॥
जाको मुख देखे दुख लागै ताको करन परी परनाम ।
कुंभनदास लाल गिरधर बिन यह सब झूठौ धाम ॥ २ ॥

यह पद गायौ सेा देशाधिपति अपने मन में बहुत कुढ्यो[1] और कह्यौ । जेा इनको काहू बात को लालच होय तो मेरो जस गावें इनकों तो अपने परमेश्वर सों साँचो सनेह है । इतनेां कहि कें देशाधिपति नें कुंभनदास कों सीख दीनी । तब कुंभनदास जी उहाँ ते चले सेा मार्ग में आवत अति क्लेश जेा कब हों प्रभून कों श्रीमुख देखों । सेा ऐसेा विचार के कुंभनदास जी आवत हैं ता समय पद गायौ । सेा पद ॥

राग धनाश्री

कबहू देख हों इन नैननु ।
सुंदर श्याम मनोहर मूरत अंग अंग सुख देननु ॥ १ ॥
वृन्दावन बिहार दिन दिन प्रति गेाप वृन्द संग लैननुं ।
हँसि हँसि हरखि पतौवन पावन बाँटि बाँटि पय फेननु ॥ २ ॥
कुंभनदास किते दिन बाते किये रेणु सुख सेननु ।
अब गिरधर बिन निस और वासर मन न रहत क्यों चेननु ॥३॥

---

१ कुढ्यो ।

यह पद मार्ग में गावत आये। सेा आयकें श्रीगोवर्द्धन नाथजी के दर्शन कियै। और दोय दिन लो दर्शन न भये सेा कुंभनदास जो कों दोय जुग की बराबर बीतेा। सेा श्रीमुख देखते ही सब दुःख विसर गयौ। तब एक पद गायौ। सेा पद॥

राग धनाश्री

नैन भरि देखौ नंदकुमार।
ता दिन ते सब भूलि गयौ हों बिसरयौ पन परवार॥ १॥
बिन देखे हों विकल भयों हों अंग अंग सब हारि।
ताते सुधि है सावरी मूरति की लोचन भरि भरि वारि॥ २॥
रूप रास पैमित[1] नहीं मानें केसें मिसे लो कन्हाई।
कुंभनदास प्रभू गोवर्धन धन मिलियै बहुर रो माई॥ ३॥

राग धनाश्री

हिलगिन कठिन है या मन की।
जाके लियै देखि मेरी सजनी लाज गई सब तन की॥ १॥
धर्म जाउ अरु लेाग हँसेा सब अरु गावो कुल गारी।
सेा क्यों रहे ताहि बिन देखे जो जाको हितकारी॥ २॥
रस लुब्धक निमखन छाँड़त ज्यों आधीन मृग गानें।
कुंभदास सनेह परम श्रीगोवर्द्धन धर जानें॥ ३॥

ऐसे पद बहुत कुंभनदास जी नें गाये। सेा सुनि के श्रीनाथ जी बहुत प्रसन्न भये और कह्यौ "यह मेा बिन रहत नाहीं"।

---

१ परिमित।

प्रसंग ३

और एक समय राजा मानसिंह सब ठौर ते दिग्विजय करिके अपने देश कूं चले। तब मन में विचारे जो बहुत दिन में आये हैं ताते मथुरा वृन्दावन होयकें चलनों। सो यह विचार कें आगरे ते चले सो मथुरा आयै। तब बिश्रांत स्नान करिकें श्रीकेसोराय जी के दर्शन करिकें वृन्दावन चले। सो उष्णकाल के दिन हुते तब वृन्दावन के सब महंतन ने जानी जों आज यहाँ राजा मानसिंह दर्शन को आवेगो। सो यह जानि के श्रीठाकुर जी कों आछे आछे जरी के वागे बहुत आभरण पहरायै पिछवाई चंदोवा सब जरीन के बाधें। इतने राजा मानसिंह दर्शन को आयौ। सौ भीतरि मंदिर के आय कें श्रीठाकुर जी के दर्शन कीयै। सो उष्णकाल के दिन हुते सो बहुत गरमी पड़े। सो ता समय राजा मानसिंह पै ठाडौ न रह्यौ गयौ। सो ऐसे दर्शन चार पाँच जगह खड़े हुते। सो तहाँ सब ठौर दर्शन करि सब ठौर ते बिदा होयकें अपने डेरा में आये। सो डेरां आय कें मन बिचारे जो अबही कूंच करें।

सो यहाँ सो असवार हो कें चले सो तीसरे पहर गोवर्द्धन गाँव आये। सो मानसी गंगा ऊपर डेरा कीयै। सो तहाँ श्रीहरदेव जी के दर्शन कियै। सो यहाँ वृन्दावन के महंतन ने बड़े ठाठ बनाये हैं तेसोई यहाँ ठाठ बनाय राख्यौ हुतौ। सो राजा मानसिंह तहाँ ते दर्शन करि के चले। तब काहू न कही जों महाराज यहाँ श्रीगोवर्द्धननाथ जी बहुत सुन्दर ठाकुर हैं तहाँ आप दर्शन कों

चलो। तब राजा मानसिंह ने कह्यौ जो यहाँ तो अवश्य चलनो ये ठाकुर सब ब्रज के राजा हैं ताते इनके दर्शन तो अवश्य करने। तब तहाँ ते चले। सेा गोपालपुर गाँव आये। तब आयकें पूछी जो दर्शन को कहा समय है तब काहू ने कही जो उत्थापन के दर्शन तो होय चुके हैं अब भोग के दर्शन होयंगे। तब यह सुनि कें राजा मानसिंह श्रीगोवर्द्धन नाथ जी के दर्शन कों गिरराज ऊपर आये। सेा उष्णकाल के दिन, मार्ग के श्रमित, दूर के चले आयै, सेा गरमी में राजा बहुत व्याकुल भयौ हुतो। इतने में भोग के दर्शन खुले सेा राजा मानसिंह को मणिकोठा में ले गये।

तिन दिनन में श्रीनाथ जी की सेवा वैभव सों होत हुती। बड़ौ मंदिर सिद्धि भयौ हुतौ। श्रीगोवर्द्धन नाथ जी के आगें गुलाब जल को शृङ्गार भयौ हुतो। निज मंदिर मणि कोठा तिवारी सब जल मय होय रहे हुते। सेा ता समय राजा मानसिंह दर्शन कों गये हुते सेा श्रीगोवर्द्धन नाथ जी के दर्शन करिकें साष्टांग दंडवत कीनी और गरमी में राजा व्याकुल भयेा हुतौ सेा सीतलताई भई। बड़ेा चेन भयो। और श्रीगोवर्द्धन नाथ जी कौ श्रीमुख देख कें राजा बहुत प्रसन्न भयौ और कह्यौ जो साक्षात पूरण ब्रह्म श्रीकृष्ण वृन्दावन चन्द्र श्रीगोबर्द्धन नाथ जी हैं। आगें श्रीभागवत में सुन्यौ हुतो सेा आज देखे। आज को दिन है सेा धन्य है और आज मेरै बड़ौ भाग्य हैं। और मन में कह्यौ जो यह भोग को समय है सेा तौ प्रभून की राजधानी को समय है। सेा वे प्रभू विराजे हैं आगे ताल मृदंग बाजत हैं कीर्तन होत है। सेा कुंभनदास

जी ठाड़े ठाड़े मणि कोठा में दर्शन करत हैं और कीर्तन गावत हैं। सेा राजा मानसिंग को मन वा पद में गड गयेा हुतौ। तेसौई कोटि कंदर्प लावण्य स्वरूप और तेसौई कीर्तन कुंभनदास जी करत हुते। सेा पद॥

राग नट

रूप देख नेना पल लागै नाहीं।
गोवर्द्धन के अंग अंग प्रति निरखि नेन मन रहत तहीं॥१॥
कहा कहेा कछू कहत न आवै चित्त चेारयो[1] मांगत्रै दही॥
कुम्भनदास प्रभू के मिलन की सुन्दर बात सखियन सों कही॥२॥

राग धनाश्री

आवत मेाहन मन जु हरयौ हेा॥
हों ग्रह अपने सचु सों बेठी निरखि वदन अरबरा विसरयौ हेा॥२॥
रूप निधान रसिक नंदनंदन निरखि वदन धीरज न धरयौ हेा॥
कुम्भनदास प्रभू गोवर्द्धन धर अंग अंग प्रेम पियूष भरयौ हेा॥२॥

ऐसे पद कुम्भनदास जी गावत है। इतने में राजभोग के दर्शन होय चुके। तब राजा मानसिंग दंडौत करि कें अपने डेरा में गयेा। तब कुम्भनदास जी संध्या आरती के दर्शन करि कें अपनी सेवा सों पहुँच कें अपने घर कों गये। तब राजा मानसिंह अपने डेरा में जाय कें अपने पास के मनुष्य हुते तिनमें श्रीगोवर्द्धन नाथ जी के सिंगार की वार्ता करन लागे और कह्यौ जो यह

[1] चारयौ।

श्रीगोवर्द्धन नाथ जी के आगें कोन गावत हुतो। इनने ऐसे विसनपद गाये हैं जो कछू कहिवे में नाहीं आवत। तब काहू ने कही जो महाराज एक ब्रजवासी है कुंभनदास नाम है, सो आपने सुने ही होयँगे देसाधिपति सों मिले हुते सो है। तब राजा मानसिंघ ने कही जो हम हू इनसों मिलै तौ आछौ।

तब राजा मानसिंघ सवारे उठे सो श्रीगिरिराज की परिक्रमा को निकसे जो परासोली आयै। सो परासोली में कुम्भनदास जी न्हाय कें बैठे। इतने में श्रीगोवर्द्धन नाथ जी पधारे। श्रीमुख सों कहै जो कुम्भनदास जी हों तो एक बात कहूँगो। तब इतने में राजा मानसिंग आयौ सो कुंभनदास जी को प्रणाम करि कें बैठौ और श्रीनाथ जी तौ उहाँ ते दूर जाय ठाडे भये। सो श्रीनाथ जी तौ एक कुम्भनदास जी को देखे है और इनकी भतीजी को देखे हैं। तब कुंभनदास जी की दृष्टी तौ श्रीनाथ जी के संग ही गई सो श्रीनाथ जी बैठे हैं तहाँ कुम्भनदास जी देखवो करे। तब भतीजी बोली जो बाबा राजा बैठे हैं। तब कुंभनदास जी ने कही जो में कहा करूँ जो बैठे हैं। तो जा[1] बात कहत हुते सो तो भाजि गये सो अब कहेंगे। तब दूर ते श्रीनाथ जी कहैं जो कुम्भनदास में बात कहूँगो। तब कुंभनदास जो प्रसन्न भयै और भतीजी सों कह्यौ जो अमुकी आरसी लाउ तिलक करों। तब भतीजी ने कही जो बाबा आरसी तौ पडिया पी गई। तब राजा नै कुम्भनदास जी की भतीजो सों कही जो अरी छोरी पडिया

१ जो।

कहा पी गई। तब वह कठौठी में पानी लाय के कुंभनदास जी के आगें धरयौ तब कुम्भनदास जी वा में देखि कें तिलक करन लागै।

इतने में राजा मानसिंग ने अपनी सोने की आरसी कुंभनदास जी कें आगें धरी। और कह्यौ जो बाबा यामें देखि कें तिलक करिये। तब कुंभनदास जी बोले जो अरे भैय्या याको हों कहा करूँगो, हमारे तौ यहाँ छानि के धर हैं ताते कोऊ या के पाछें हमारो जीव लेवगो ताते हमें तौ यह नाहीं चाहियत है। तब राजा मानसिंग ने इनको आगें सोने की थैली धरी। तब कुंभनदास ने कह्यौ जो हमकौ धन तौ चाहियै नाहीं हमारे तौ यह खेती है ताको धन आवत है सो खात हैं। तब राजा मानसिंग ने कह्यौ जो भलौ आपको गाम है ताको लिखौ है[1] करि देउ। तब कुम्भनदास ने कह्यौ जो भैया हो तों ब्राह्मण नाहीं जो तेरो उदक लेउं। तब फेरि राजा मानसिंग ने कह्यौ जो बाबा कछु तौ आज्ञा करौ। तब कुंभनदास ने कह्यौ जो हमारौ कह्यौ करौगे। तब राजा मानसिंग नें हाथ जोर कह्यौ जो महाराज आप कहौगे सो करूँगो। तब कुम्भनदास नें कह्यौ जो फेरि मेरे पास तुम मत आइयौ। तब राजा मानसिंग नें कह्यौ जो महाराज धन्य है, यह माया के भक्त तौ सगरी पृथ्वी में फिरौ सो बहुत देखे परि भगवद्भक्त तौ एक एही देखे। यह कहि कें राजा मानसिंग कुंभनदास कों दंडौत करि कें उठि चल्यौ। तब फेरि आय कें कुम्भनदास सों

१ हों।

श्रीनाथ जी ने वह बात कही और बहुत प्रसन्न भयौ। तब फेरि कुम्भनदास जी श्रीगिरिराज ऊपर आय कें श्रीनाथ जी की सेवा में तत्पर भयै।

प्रसंग ४

और एक समय कुंभनदास जी कों मिलिवे कों बृन्दावन के महंत हरिवंश भूत आयै। सो यह जानि कें आयै सो महापुरुष है; इनसों श्रीठाकुर जी बोलत हैं, बातें करत हैं और काव्य इनकी सुनी सो कीर्तन बहुत सुन्दर कीयै, ताते ऐसे पद श्रीठाकुर जी के साक्षात्कार बिना न होय। यह जानि कें कुम्भनदास सो मिलवै आयै। सो कुंभनदास जी सों मिलि कें बहुत प्रसन्न भये और कह्यौ जो कुम्भनदास जी तुमने विसनपद बहुत कीयै सो हमनें आप कें सुने हैं, और आप को पद श्रीस्वामिनी जी कौ नाहीं सुन्यौ ताते आप कोइ स्वामिनी जी कौ पद सुनावौ। तब कुम्भनदास जी नें श्रीस्वामिनी जी को पद करि कें गायौ॥ सो पद॥

राग रामकली

ताल चरचरी

कुमरि राधिका के तुव सकल सौभाग्य
की वा वदन पर कोटिस[1] चंद्रवारौ॥
खंजन कुरंग सत कोटि जंघन ऊपर
सिंह सत कोटि उपरि न्योछावर उतारौ।

१ कोटिसत।

मत्त सत कोटि चालि पर कुम्भसत
कोटि इन कुचन परि वारि डारौ ॥१॥
कीर दश कोटि दशनन परि कहिन वारौ
पंक कंदूरवहू कसत कोटि अधरन ऊपर वारि रुचिर गर्भ टारौ ॥
नाग सत कोटि वैनी ऊपर कपोत सत कोटि
करि जुगल पर वार ने नाहिन कोऊ लोक उपमा जुधारौ ॥२॥

दासकुंभन स्वामिनी सुनखसिख
अति अद्‌भुत सुठान कहा लगि समारौ ॥
लाल गिरधर कहत मोहितौ
हिलौजी[1] यह रूप छिन छिन निहारौ ॥३॥

यह पद कुम्भनदास ने गायौ सो सुनि के महंत बहुत ही रीझे और कहैं जो हमने श्रीस्वामिनी जी के पद बहुत किये हैं परि यहाँ उपमा दीनी ही और वारि फेरि डारी ताते कुंभनदास जी आप बड़े महापुरुष हौं आपकी सराहना कहाँ ताँई करियै। या महंत नें कुम्भनदास की बड़ी बड़ाई करी बहुत रीझे। ता पाछें वे महंत आदि सब कुंभनदास जी सेा बिदा होयकें अपने घर गयै।

प्रसंग ५

और एक समय श्रीगुसाईं जी श्रीगोकुल में अपने घरते श्री-नवनीत प्रिया जी सों आज्ञा माँगि के विदेसार्थ[2] द्वारिका कों

---

१ तोहिलोंजी। २ विदेशार्थ।

पधारे। सो श्रीगुसाईं जी नाथ जी द्वारि पधारे। सो श्रीनाथ जी कों सेवा सिंगार कियै ता पाछें आप भोजन करिकें गादी ऊपर बिराजै। तब सब सेवक दर्शन कों आये। तब बात चलत में कुम्भनदास की बात चली। तब काहू वैष्णव नें कह्यौ जो महाराज कुंभनदास जी कों द्रव्य को बहुत संकोच है सात बेटा हू हैं और उपजत तौ एक खेती की है ताको धन आवत है तासों निरवाह करत हैं। सो यह बात श्रीगुसाईं जी ने अपने मन में राखी। ता पाछें उत्थापन के समय कुम्भनदास जी दर्शन कों आयै तब श्रीगुसाईं जी अपने श्रीमुख सों कहै जो कुंभनदास हम श्रीद्वारिका रणछोड़ जी दर्शन को पधारेंगे और विदेसहू होयगौ। वैष्णव नें बहुत करिके लिख्यौ है ताते जो तुम संग चलो तौ विदेस में भगवदीय कौ ग्रहकाल बाधा न होय। तब भगवदीय को काल व्यतीत हो जाय कछु जान्यौ न परै। और में सुन्यौ है जो कछू तुम्हारें द्रव्य कौ संकोच है सो वहाँ सिद्धि होयगौ ताते सर्वथा तुमकौ चल्यौ चाहियै। तब कुंभनदास जी नें कही जो आज्ञा। इतने में दर्शन कौ समय भयौ सो श्रीगुसाईं जी आप स्नान करिकें श्रीनाथ जी के मंदिर में पधारे। श्रीनाथ जी की सेवा सों पहुँचिकें श्रीनाथ जी कौ पौढाय कें बेठक में पधारे और कुम्भनदास जी कौ सीख दीनी जो कुंभनदास जी तुम सेवा सों पहुँचि कें वेग आईयौ हम कालि आरती करिकें अपछरा कुण्ड ऊपर जाय रहेंगे।

तब कुंभनदास जी श्रीगुसाईं जी कों दंडोत करिकें अपने घर कों आये। सबारे सेवा सों पहुँच कें श्रीनाथ जी के दर्शन करिकें अपछरा कुण्ड ऊपर आयें और श्रीगुसाईं जी श्रीनाथ जी सों सीख मांगि कें आप नीचे आयें। पाछें आप भोजन कियें और सब सेवकन कों महाप्रसाद लिवायौ। ता पाछें समयें ताही कौ[1] महूर्त हुतौ सेा श्रीगुसाईं आप पर्वत नीचे आयें। सोई अपछरा कुण्ड ऊपर आये। सेा तहाँ अपछरा कुण्ड ऊपर डेरा करे हुते। सब सेवक अगारु सेा ठाड़े हुते। सेा श्रीगुसाईं जी डेरा पधारि कें पोढ़े। इतने में सब सेवक सामान लेकें वेऊ आये। सेा कुम्भनदास उहाँ बेठि के विचारत हुते। कहियै जेा कहिवे की होय प्राननाथ बिछुरन की बिरियाँ जानत नाहि न कोऊ। यह बिचार करत उत्थान कों समय भयौ। तब आप गुसाईं जी आप भीतर डेरा में जागे। और कुंभनदास जी कूं दर्शन की सुधि आई सेा वहाँ पुंछरी की ओर कोनें में जाय कें बैठि कीर्तन गावत है और आखिन में ते जल को प्रवाह वहत है। सेा कुम्भनदास ने एक पद गायौ॥ सेा पद॥

राग सारंग

केते ह्वै जुग रो बिन देखें।
तरुण किशोर रसिक नंदनंदन कछुक उठति मुख रेखें॥ १॥
वह शोभा वह कांति बदन की कोटिक चंद विसेखें।
वह चितवन वह हास्य मनोहर वह नटवर वपु भेखें॥ २॥

१ ताही समय को।

श्याम सुन्दर संग मिल खेलन की आवत जिये अपेखें।
कुंभनदास लाल गिरधर बिन जोवन जन्म अलेखें॥ ३॥

यह पद कुम्भनदास नें गायौ। सेा श्रीगुसाईं जी आप डेरा के भीतर सुनों। सेा कुंभनदास जी कों कलेश श्रीगुसाईं जी सों सह्यौ न गयौ। सेा श्रीगुसाईं जी आप डेरा के बाहर पधारें और श्रीमुख ते कह्यौ जो कुम्भनदास अब तुम बेगि जाउ तुम्हारौ विदेस होय चुक्यौ। और जो तुम्हारी अवस्था है ऐसी उनकी अवस्था है। केसें जानियै। जेा श्रीअक्का जी नें गज्जन धावन कों पान लेवे कों पठायौ। सेा गज्जन कों तों भगवद आसक्ति देखें विना एक क्षण हू न रह्यौ जाय। सेा गज्जन धावन पान लेवे कों बाहिर गये। सेा थोरी सी दूर गये और ज्वर चढ़ि आयौ। सेा मूरछा खायकें गिरें और श्रीअक्का जी ने श्रीनवनीत प्रिया जी कों भोग समर्प्यो। तब श्रीनवनीत प्रिया जी नें गज्जन धावन को बोल न सुन्यौ तब श्रीनवनीत प्रिया जी नें अपने श्रीमुख सों कह्यौ जो मेरा गज्जन धावन कहाँ है। तब श्रीअक्का जी नें कह्यो जो वह तौ पान लेवे कों गयौ है। तब श्रीनवनीत प्रिया जी नें कह्यौ जो मेरौ गज्जन धावन आवेगौ तब आरौगूंगौ। सेा श्रीहस्त खेंच कें बेठ रहै। तब वेगि गज्जन धावन कों बुलायौ। तब गज्जन धावन नें कही जेा बाबा आरोगौ तब श्रीनवनीत प्रिया जी आरोगे हैं। यह श्रीआचार्य जी महाप्रभू की मर्यादा है जो जितनों सेवक को स्वामी ऊपर स्नेह होय। और भगवद्गीता में भगवान कहें हैं। श्लोक॥ ये यथा मां प्रपद्यंतेस्तांस्तथैव भजाम्यहं॥ यह आधौ

श्लोक कह्यौ। ताते श्रीमुख सों कहैं जो इहां तुम्हारी बिघस्था और उनकी बिघस्था है। सो ऐसौ कुंभनदास कों और श्रीनाथ जी कों बिरह हुतो। ताते श्रीगुसाईं जी कुम्भनदास कों सीख दीनी। तब कुंभनदास नें श्रीनाथ जी के दर्शन कीयै। तब कुम्भनदास ने एक पद गायौ। सो पद॥

राग सारंग

जो ये चौंप मिलन की होय॥
तौ क्यों रहै ताहि बिन देखें लाख करौ जिन कोय॥
जो ये बिरह परस्पर व्यापै जो कछू जीवन घनै॥
लौक लाज कुलकी मर्यादा एकौ चित्त न गनै॥
कुम्भनदास प्रभू जाय[1] तन लागी और न कछू सुहाय॥
गिरधर लाल तौहि बिन देखे छिन छिन कलप बिहाय॥

सो यह पद कुम्भनदास ने श्रीनाथ जी के सन्निधान गायौ। सो सुनि कें श्रीनाथ जी बहुत प्रसन्न भयै। सो कुंभनदास श्रीनाथ जी कों देख कें प्रसन्न भयै॥

प्रसंग ६

और एक समय कुम्भनदास जी श्रीगुसांई जी के पास बैठे हुते। तब कुम्भनदास नें श्रीगुसाईं जी सों कह्यौ जो महाराज बेटा डेढ है और हे तो साथ[2]। तब श्रीगुसाईं जी नें कह्यौ जो कुम्भनदास डेढ कौ कारन कहा। तब फेरि कुम्भनदास जी कहैं जो महाराज आखौ बेटा तौ चत्रभुजदास और आधौ बेटा

१ जाहि। २ सात।

कृष्णदास है। सो श्रीनाथ जी की गायन की सेवा करत है तासों आधौ है। कुंम्भनदास जी कृष्णदास सों आधौ क्यों कहैं ताको हेत यह जेा श्रीआचार्य जी महाप्रभून ने पुष्टि मार्ग प्रगट कीयौ है। सो पुष्टि मार्ग कहा है जेा व्रज भक्तन को हेंत यह मार्ग प्रगट कीयेा है। सो भगवदीय गाये हैं 'जेा सेवा रीति प्रीत व्रज जन की जन हित जग प्रगटाई'। सो व्रज भक्तन को कहा रीति है जेा श्रीठाकुर जी के सन्निधान तौ सेवा करै और श्रीठाकुर जी वन में पधारे तब गुणगान करें। जेा ये बस्तु होय तौ आखौ और इनमें एक होय तौ आधौ। ताते चत्रभुजदास सेवा और गुणगान है ताते आखौ और कृष्णदास में एक सेवा है सो आधौ। तब श्रीगुसांई जी श्रीमुख ते कहैं जेा भगवदीय है तेई बेटा हैं और बहुत भये तौ कोन काम के। चत्रभुजदास की वार्ता में लिखे हैं॥ वैष्णव ९०॥

(कुम्भनदास के पुत्र कृष्णदास की वार्ता)

सो वे कृष्णदास श्रीनाथ जी की गायन के ग्वाल[1] हुते। श्रीगुसांई जी ने इनको गायन की सेवा दीनी हुती। सो कृष्णदास श्रीनाथ जी की गायन की सेवा करते। सवारे खिरक सेवा सों पहुँच कें फेर गायन चरायवे को जाते। सो सगरे दिन कृष्णदास गायन की सेवा करते। सो एक गाय चराय कें पूछरी के पोर[2] कृष्णदास गायन के संग आवत हुते। सो सगरी गाय तौ खिरक में आई और गाय बड़ी हुती ताकों औन[3] बहुत भारी हुतौ सो

१ ग्वार। २ पूछरी की ओर। ३ ऐन।

वह गाय बहुत हरवे हरवे चलती। सो वा गाय कों आवत अँधियारो परि गयौ। सो तहाँ पर्वत के नीचे अधियारे में एक नाहर निकस्यौ सो गाय पै दोरयौ। तब कृष्णदास कहैं जो अरे अधर्मी यह श्रीनाथ जी की गाय हैं तू भूखौ हो तौ मेरे ऊपर आऊ। तब इतने में गाय तौ भाजि खिरक में गई और नाहर नें कृष्णदास को अपराध कीयौ।

और ऊपर कहि आये है जो गाय सब खिरक में आई। तब श्रीनाथ जी आप गाय दुहिवे कों आये। सो सब गाय ग्वाल दुहत हैं और वह बड़ी गाय खिरक में आई सो वह गाय कों श्री[1] दुहिवे कों बैठे और कृष्णदास बछरा थामें हैं और वह गाय बत्तरा[2] कों चाटत है। सो ऐसे दर्शन कुंभनदास जी को भये। ता पाछें गोदुहन करि कें श्रीनाथ जी गिरिराज ऊपर मंदिर में पधारे। तब श्रीगुसाईं जी ने भोग समर्प्यो और कुम्भनदास जी खिरक में से आयै सो दंडौती सिला पास ठाडे भयै। इतने में समाचार आयै जो कृष्णदास को नाहर ने मारयौ। सो सुनि कें कुंभनदास कों मूर्छा खाय के गिरे। सो ऐसे गिरे जो देहानुसंधान भूल गये। तब कुंभनदास जी कौ सब कोऊ बुलावे परि बोले नाहीं। तब यह समाचार काहू नें श्रीगुसाईं जी सो कहै जो महाराज कृष्णदास को नाहर नें मारयो और गायकों कृष्णदास ने बचाई सो कृष्णदास उहाँ ही परे हैं। तब गुसाईं जी कहैं जो गाय कबहू न छोडि आवै। अंत समय गाय संकल्प करत है ताको

१ श्रीनाथजी २ बछरा।

गाय उत्तम लोक कों ले जात है और कृष्णदास नें तौ श्रीनाथ जी की गाय बचाई हैं ताते कृष्णदास कों गाय केसें छोड़ि आवैगी। और गुसाईं जी ने कह्यौ कुंभनदास जो कहां है। तब काहू वैष्णवनें कही जो महाराज कुम्भनदास जी कों कलेश बहुत बाधा कियौ है। जो कुम्भनदास जो ऊपर आवत हुते, सेा कुम्भनदास जी के आगे काहू ने कृष्णदास के समाचार कहैं, सेा सुनत ही कुम्भन दास जो मूर्छा खाय कें गिरे। सो लोग बहुत ही बुलावत हैं परि आवत नाहीं।

तब श्रीगुसाईं जी ने अपने श्रीमुख सों कह्यौ जो फेरि कुम्भन-दास जो की खबर लावै जो कुम्भनदास जी की देह केसें हैं। सेा वे आय के कुम्भनदास जी कों पुकारें। तब यह समाचार श्रीगुसाईं जी सों कहैं जो महाराज कुम्भनदास जी तौ कछू सम-झत नाहीं। तब श्रीगुसाईं जो तौ सेन भोग के दर्शन करि कें श्रीनाथ को पेढ़ाय के आप नीचे पधारे। सो देख कें मार्ग के साम्हैं कुम्भनदास जो परे हैं और लोग चारयौ ओर ठाडे हैं सो कहत हैं जो कुंभनदास जी केसे भगवदी हैं परि पुत्र को सेाक बहुत बुरे होत है, या पीरा सों कोई बच्यौ नाहीं, काहे ते जो अपनो आतमा है। तब यह बात लोगन की सुनिकें श्रीगुसाईं जी मन में विचारे जेा यहाँ तौ कारण कछू और है और लोगन कों तौ कछू और भाखत है। ताते भगवदीय को स्वरूप करिवे के लिये श्रीगुसाईं जी अपने श्रीमुख सों कही जो कुम्भनदास जो सवारे तुम वेगी

आईयौ तुमको श्रीगोवर्द्धन नाथ जी के दर्शन करावेंगे[१] तुम मन में खेद मति करौ। इतनो श्रीगुसाईं जी श्रीमुख सों कहैं तब कुम्भनदास जी उठि ठाड़े भये और प्रसन्न भये। तब श्रीगुसाईं जी कों दंडौत करिकें कुम्भनदास को जो कार्य करनों हौ सेा सब कीयौ।

पाछें सवारे कुम्भनदास जी दर्शन कों आयै। श्रीनाथ जी कों सिंगार करिके श्रीगुसाईं जी सों कह्यौ जेा प्रथम कुम्भनदास जी कों दर्शन कराउ देय। सेा कुम्भनदास जी वैष्णवन के ऊपर यह कार कियौ जेा सूतकी को कोंन मंदिर में जान देतेा। सेा कुम्भनदास जी के अनुग्रहते सब कोउ दर्शन करत हैं सेा कुंभनदास जी नित्य एक वेर दर्शन करिकें परासेाली में जाय बेठते। सेा वहाँ बैठे बैठे विरह के पद गावते। सेा पद॥

राग धनाश्री

तुम्हारे मिलन बिन दुखित गुपाल।
अति आतुर व्रज सुन्दर प्यारे बिरही बेहाल॥ १॥
सीतल चंद नयन भयो दाहत किरण कमल जनु जाल।
चंदन कुसुम सुहाय घनसार लगन वदी[२] ज्वाल॥ २॥
कुम्भनदास प्रभूनवधन तुम बिन कनकलता मानों सूषी
जीव मा[३] काल।
अधरामृत वंशी सीचि लेउ तुम गिरि गोवर्द्धन लाल॥ ३॥

१ करामेंगे। २ बडी। ३ मां।

राग धनाश्री

अब दिन रात्रि पहार से भये।
तब ते निघटट नाहिनि जबते हरि मधुपुरी गयै।
यह जानियै बिधाता जुग सम कीने जाम नयै।
जागत जाग विहातन के ऐसें प्रीत पठयै[1]।
ब्रजवासी अतिपरम दीन भये व्याकुल सोच लयै।
उन प्राण दुखित जलरुह गन दारुण हेम पयै।
कुम्भनदास बिछुरत नंदनंदन बहुत संताप करे।
अब गिरधर बिन रहत निरंतर नौत न नीर छयै॥

राग केदारो

औरन कों समीप बिछुरनों आयौ मेरी हिसा।
अब को जसोवे सुख अपने आली मोकों चाहत रिसा॥
ना जानों यह बिधाता की गति मेरे आंक लिखे ऐसौ कोन रिसा।
कुम्भनदास प्रभू गिरधर कहत निस दिन रह ज्यों चातक घन त्रिसा॥

ऐसे पद गाय गाय कुम्भनदास जी नें सूत ते पद कियें। पाछें शुद्ध होय कें कुंभनदास जी भगवत्सेवा में आयै। ऐसी जिनकों दर्शन की आरति सो वे कुम्भनदास जी श्रीआचार्य जी महाप्रभून के ऐसे परम कृपापात्र भगवदीय हैं। ताते इनकी वार्ता को पार नहीं ताते इनकी वार्ता कहाँ ताईं लिखिये॥ प्र० १॥

---

१ ठये।

श्रीगुसाईं जी के सेवक नंददास जी तिनकी वार्ता

—:०:—

प्रसंग १

नंददास जी तुलसीदास के छोटे भाई हते। सेा विनकूं नाच तमासा देखवे को तथा गान सुनवे को शोंक बहुत हतो। सेा वा देश मेंसूं एक संग द्वारका जात हतो। सेा नंददास जी ऐंसे विचारे के में श्रीरणछोड जी के दर्शन कूं जाऊँ तो अच्छौ है। जब विन नें तुलसीदास जी सूं पूँछी। तब तुलसीदास जी श्रीरामचंद्र जी के अनन्य भक्त हते जासूं विन नें द्वारका जायवे की नाहीं कही। जब नंददास जी नहीं माने सेा वा संग में चले गये। सो मथुरा सूधे गये। मथुरा में वा संग कूं बहुत दिन लगे सेा नंद-दास जी संग कूं छोड़कर चल दीने।

सेा नंददास जी द्वारका को रस्ता भूल गये सेा कुरुक्षेत्र की आड़ी सीनंद गाम में जाय पहुँचे। सेा वहाँ एक साहुकार क्षत्री रहतो हतो। तब नंददास जी वाके घर भिक्षा लेवे गये। वाकी स्त्री को रूप सुन्दर हतो सेा नंददास जी देखकर मोहित होय गये। जब आखो दिन जाय के वाके दरवाजे पें बैठ रहते, जब वा छत्रानी को मुख देख लेते तब डेरा पे आवते हते। ऐंसे करते बहुत दिन बीते।

जब वा छत्रानी की जात में बहुत चर्चा फेली तब वा छत्रानी को सुसरो तथा पती विनने विचार कीनो गाम में रहनो नहीं। तब उहाँ ते घर के सगरे मनुष्य श्रीगोकुल जी कूं चले कारण कें सब वैष्णव हते। तब नंददास जी कूं खबर भई तब नंददास जी हूँ विन के पाछें गये। रस्ता में विन से दूर दूर चले जाय और विन सें दूर डेरा करें। ऐसे कितने दिन पीछे ब्रज में पहुँचे। सेा यमुना जी उतरवे के समय वा छत्री नें कछू मलाहन कुं दीनों और ये कही कें या ब्राह्मण कूं मती उतारो ये हमकूं दुःख देत हैं। जब सब उतरके श्रीगोकुल गये। श्रीगुसाईं जी के दर्शन करे। जब श्रीगुसाईं जी नें आज्ञाकरी जो वा ब्राह्मण कूं यमुना जी के पार क्यौं बैठाय आये हो। तब वा क्षत्री के मन में ऐंसी आई कोई ने विनकी बात कही है अथवा जान गये हैं। सेा क्षत्री मन में बहुत पछतायवे लग्यौ।

जब श्रीगुसाईं जी ने एक मनुष्य पठायके वा ब्राह्मण कूं पार सों बुलाय लीनौ। जब वा नंददास जी नें आयकें श्रीगुसाईं जी के दर्शन करे। साक्षात् कोटिकंदर्प लावण्य पूर्ण पुरुषोत्तम के दर्शन भये। तब नंददास जी नें साष्टांग दंडवत करी और हाथ जोर कें ठाडै रहे और जा स्वरूप के दर्शन वा क्षत्रानी के नेत्रन में नंददास जी कूं होत हते वही स्वरूप के दर्शन श्रीगुसाईं जी के भये। तब नंददास जी को मन वहाँ ते छूटकें साक्षात् श्रीगुसाईं जी के चरणारविंद में लग्यो। तब नंददास जी हाथ जोर कें ठाढ़े रहे। जब श्रीगुसाईं जी नें आज्ञा करी नंददास जी स्नान

कर आओ। तब स्नान कर आये। तब श्रीगुसाईं जी नें श्रीनवनीत प्रिया जू के सन्निधान नाम निवेदन करवाये। पाछे नंददास जी ने श्रनवनीत प्रिया जी के दर्शन सब आशयपूर्वक करे।

पाछें श्रीगुसाईं जी भोजन करके जब वैष्णवन कुं पातर धराई। तब नंददास जी महाप्रसाद लेवे बेठे। तब महाप्रसाद लेत ही नंददास जी कुं देहानुसंधान रह्यौ नहीं। जब पातर पर बैठेई रहे। भगवल्लीला में मन मग्न होय गयो। अनेक लीलान को अनुभव होवै लग्यो। भरे घर के चार की सो नाई मोहित भये। ऐसें करते सवारो होय गयो। कछु सुद्धि रही नहीं। तब श्रीगुसाईं जी पधार कें नंददास जी के कान में कही कें नंददास जी उठो दर्शन करो। जब नंददास जी उठके ठाढ़े भये। तब नंददास जी नें उठके श्रीगुसाईं जी के दर्शन करके ये पद गायो। 'प्रात समय श्रीवल्लभसुत को उठतहिं रसना लीजिये नाम' इत्यादिक पद गाय के श्रीनवनीत प्रिया जी के दर्शन करत मात्र ही भगवल्लीला की स्फूर्ती भई। जब पालने को पद गायो 'बालगोपाल ललन कों मोद भरी यशुमति दुलरावत'। इत्यादि भगवल्लीला संबंधी बहुत नये करिके गाये।

सो नंददास जी के ऊपर श्रीगुसाईं जी नें ऐसी कृपा करी तब सब ठिकानेन सों विनको मन खीचकें श्रीप्रभुन में लगाय दीनो। सो वे क्षत्री की बहू जिनसों नंददास जी को मन लाग्यो हतो सो वे क्षत्री की बहू नंददास जी कुं रास्ता में पाँच सात वार नित्य दीखत हती परन्तु नंददास जी वाकी आडी देखते ही न

हते। ऐसें श्रीगुसाईं जी की कृपा तें ऐसो मन को निरोध होय गयो हतो। जासूं इनके भाग्य की बड़ाई कहा कहिये।

प्रसंग २

ता पाछें श्रीगुसाईं जी श्रीजी द्वार पधारे। सेा नंददास जी कुं आज्ञा करकें संग ले गये। तब नंददास जी नें जाय कर श्रीगोवर्द्धन नाथ जी के दर्शन करे। सेा साक्षात् कोटिकंदर्प लावण्य पूर्ण पुरुषोत्तम के दरशन भये। सेा दर्शन करकें नंददास जी बहुत प्रसन्न भये और नंददास जी कूं किशोरलीला की स्फूर्ती भई। तब उत्थापन को समय हतो। सेा श्रीगुसाईं जी की आज्ञा पायकें यह पद गायेा, 'सोहत सुरंग दुरंगी पाग कुरंग ललना केसे लोयन लोने'। यह पद गायकें अपने मन में नंददास जी नें बड़े भाग्य माने। फिर संध्या आरती समय दर्शन करे। तब ये पद गाये।

बनते सखन संग गायन के पाछे पाछे
आवत मोहनलाल कन्हाई ॥ १ ॥
बनते आवत गावत गौरी ॥ २ ॥
देख सखी हरि को वदन सरोज ॥ ३ ॥
घर नंदमहर के मिस ही मिस
आवत गोकुल की नारी ॥ ४ ॥

या भांत सूं नंददास जी ने इत्यादि अनेक पद गाये।

सेा नंददास जी कोई दिन श्रीगिरिराज जी रहते कोई दिन श्रीगोकुल आवते। जिनकूं संसार ऐसेा फीको लागतो जैसे मनुष्य कूं उल्टी देखके बुरो लगे। जासूं वे और ठिकाने जाते नाहीं हुते और श्रीमहाप्रभु जी और श्रीगुसाईं जी और श्रीगिरिराज जी और श्रीयमुना जी और श्रीव्रजभूमी इनको स्वरूप विचारचो करते। प्रभुन के दूसरे अवतारन पर्यंत कोई ठिकाने विनको मन नहीं लागतो हुतो। जासूं विननें श्रीस्वामिनी जी के स्वरूप वर्णन में कह्यो है 'चलिये कुंवरकार सखी भेष कीजे'। या पद में कह्यो है 'शिवमोहे जिन वे मोहनीजे कोई। प्यारो के पायन आज आन परे सेाई,। ऐसी दृष्टी जिनकी ऊँची हती।

प्रसंग ३

सेा वे नंददास जी व्रज छोड़ के कहूँ जाते नहीं हुते। सेा नंददास जी के बड़े भाई तुलसीदास जी काशी में रहते हुते। सो विननें सुन्येा नंददास जी श्रीगुसाईं जी के सेवक भये हैं। तब तुलसीदास जी के मन में ये आई कें नंददास जी नें पतिव्रता धर्म छोड़ दियेा है आपने तेा श्रीरामचंद्र जी पती हुते। सेा तुलसीदास जी नें ये विचार कें नंददास जी कुं पत्र लिख्यो जो तुम पतिव्रता धर्म छोड़कें क्यों तुमनें कृष्ण उपासना करी। ये पत्र जब नंददास कुं पहुँचो तब नंददास जी ने बाँच के यह उत्तर लिख्यो। जेा श्रीरामचन्द्र जी तो एक पत्नीव्रत हैं सेा दूसरी पत्नीनकुं कैसे संभार सकेंगे। एक पत्नी हुँ बरोबर संभार न

सके। सेा रावण हर ले गयेा। और श्रीकृष्ण तो अनंत अबलान के स्वामी हैं और जिनकी पत्नी भये पीछे कोई प्रकार को भय रहे नहीं है। एक कालावच्छिन्न अनंत पत्नीन कुं सुख देत हैं। जासूं मैंने श्रीकृष्ण पती कीने हैं। सेा जानोगे।

ये पत्र जब नंददास जी को लिख्यो तब तुलसीदासकुं मिल्यो। तब तुलसीदास जी नें बाच के बिचार किया कें नंददास जी को मन वहाँ लग गयो है। सो वे अब आवेंगे नहीं। सेा उनकी टेक हमसूं अधिकी है। हम तेा अयुध्या छोड़ के काशी में रहे हैं और नंददास जी तेा ब्रज छोड़ के कहीं जाय नहीं हैं। इनकी टेक हमारी टेक सूं बड़ी है। सेा वे नंददास जी ऐंसे कृपापात्र भगवदीय हुते।

प्रसंग ४

सेा एक दिन नंददास जो के मन में ऐसी आई जेा जैसे तुलसीदास जी नें रामायण भाषा करी है सेा हमहूँ श्रीमद्भागवत भाषा करें। ये बात ब्राह्मण लोगन नें सुनी तब सब ब्राह्मण मिल कें श्रीगुसाईं जी के पास गये। सेा ब्राह्मण ने बीनती करी, जो श्री मद्भागवत भाषा होयगो तो हमारी आजीविका जाती रहेगी। तब श्रीगुसाईं जी ने नंददास जी सुं आज्ञा करी जेा तुम श्रीमद्भागवत भाषा मत करो और ब्राह्मणन के क्लेश में मत परो, ब्रह्मक्लेश आछेा नहीं है और कीर्तन कर कें ब्रजलीला गाओ। जब नंददास जी ने श्रीगुसाईं जी की आज्ञा मानी, श्रीमद्भागवत

भाषा न कर्यो। ऐसो श्रीगुसाईं जी की आज्ञा को विश्वास हतो। ऐसे परमकृपापात्र भगवदीय हुते।

प्रसंग ५

सेा नंददास जी के बड़े भाई तुलसीदास जी हते। सेा काशी जी ते नंददास जी कूं मिलवे के लियें ब्रज में आये। सेा मथुरा में आयके श्रीयमुना जी के दर्शन करे, पाछे नंददास जी की खबर काढ कें श्रीगिरिराज जी गये। उहाँ तुलसीदास जो नंददास जी कुं मिले। जब तुलसीदास जी नें नंददास जी सुं कही कें तुम हमारे संग चलो, गाम रुचे तेा अयोध्या में रहो, पुरी रुचे तो काशी में रहो, पर्वत रुचे तो चित्रकूट में रहो, वन रुचे तो दंडकारण्य में रहो, ऐसे बड़े बड़े धाम श्रीरामचंद्र जी ने पवित्र करे है। तब नंददास जी ने उत्तर देवे कुं ये पद गायो। सेा पद॥

जेा गिरि रुचे तेा वसेा श्रीगोवर्द्धन,
गाम रुचे तेा वसो नंदगाम।
नगर रुचे तेा वसो श्रीमधुपुरी,
सेाभासागर अति अभिराम ॥१॥
सरिता रुचे तेा वसो श्रीयमुनातट
सकल मनेारथ पूरण काम।
नंददास कानन रुचे तो
वसेा भूमि वृन्दावन धाम ॥२॥

यह पद सुनके तुलसीदास जी बेाले जेा ऐंसो कोन सेा पाप है जेा श्रीरामचंद्र जी के नाम सूं न जाय। जासूं तुम श्रीरामचंद्र

कूं भजो। तब नंददास जी नें एक कीर्तन में उत्तर दियो। सो पद।

कृष्ण नाम जब तें में श्रवण सुन्योरी आली
भूली री भवन हों तो बावरी भई री।
भरभर आवें नयन चितहुँ न परे चैन
मुखहुँ न आवै बैन तनकी दशा कछु और रही री॥१॥
जेतेक नेमधर्म व्रत कीने री मैं
बहुविध अंगो अंग भई मैं तो श्रवण मई री।
नंददास प्रभु जाके श्रवण सुने यह गति
माधुरी मूरत केधों कैसी दई री॥२॥

ये पद सुनके तुलसीदास चुप रहे।

जब नंददास जी श्रीनाथ जी के दर्शन करवे कूं गये तब तुलसीदासहुँ उनके पीछें पीछें गये। जब श्रीगोवर्द्धन नाथ जी के दर्शन करे तब तुलसीदास जी नें माथो नमायो नहीं। तब नंददास जी जान गये जो ये श्रीरामचंद्र जी बिना और दूसरे कूं नहीं नमे है। जब नंददास जी नें मन में बिचार कीनो यहाँ और श्रीगोकुल में इनकुं श्रीरामचंद्र जी के दर्शन कराऊँ तब ये श्रीकृष्ण को प्रभाव जानेंगे। तब नंददास जी ने गोवर्द्धन नाथ जी सों बीनती करी सो दोहा।

आज की सोभा कहा कहूँ, भले विराजो नाथ।
तुलसी मस्तक तब नमें, धनुष बाण लेओ हाथ॥

ये बात सुनकें श्रीनाथ जी कों श्रीगुसाईं जी की कान तें विचार भयौ जेा श्रीगुसाईं जी के सेवक कहें सेा हमकुं मान्यो चाहिये। जब श्रीगोवर्द्धन नाथ जी नें श्रीरामचंद्र जी को रूप धर के तुलसीदास जो कुं दर्शन दिये, तब तुलसीदास जी नें श्रीगोवर्द्धन नाथ जी कुं साष्टांग दंडवत करी।

जब तुलसीदास जी दर्शन करके बाहिर आये। तब नंददास जी श्रीगोकुल चले जब तुलसीदास जी हूँ संग संग आये। तब आयके नंददास जी ने श्रीगुसाईं जी के दर्शन करे। साष्टांग दंडवत करा और तुलसीदास जी नें करी नहीं। और नंददास जी कुं तुलसीदास जी नें कही कें जेसे दर्शन तुमनें वहाँ कराये वैसे ही यहाँ कराओ। जब नंददास जी नें श्रीगुसाईं जी सों बिनती करी ये मेरे भाई तुलसीदास है, श्रीरामचंद्र जी बिना और कुं नहीं नमें है। तब श्रीगुसाईं जी नें कहीं कें तुलसीदास जी बैठो। जब श्रीगुसाईं जी के पाँचमें पुत्र श्रीरघुनाथ जी वहाँ ठाढे हुते और विन दिनन में श्रीरघुनाथ जी को विवाह भयेा हतेा। जब श्रीगुसाईं जी नें कही रघुनाथ जो तुम्हारे सेवक आये हैं, इनकुं दर्शन देवो। तब श्रीरघुनाथ लाल जी नें तथा श्रीजानकी वहू जी नें श्रीरामचंद्र जी को तथा श्रीजानकी जी को स्वरूप धरकें दर्शन दिये। साक्षात् दर्शन भये। तब तुलसीदास जी नें साष्टांग दंडवत करी। याही तें श्रीद्वारकेश जी नें मूलपुरुष में गायेा हे, "हेतु निज अभिधान प्रकटे तात आज्ञा मानके।" और तुलसीदास जी दर्शन करके बहुत प्रसन्न भये और पद गायो "चरणों आवधि

गोकुल गाम" ये पद गाय कें तुलसीदास जी विदा होय के अपने देशकुं गये।

सो वे नंददास जी श्री गुसाईं जी के ऐसे कृपापात्र भगवदीय हते जिनके कहेतें श्रीगोवर्द्धन नाथ जी कुं तथा श्रीरघुनाथ जी कुं श्रीरामचंद्र जी को स्वरूप धरके दर्शन देणे पडे। जासूं इनकी वार्ता कहाँ ताईं लिखिये। वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ ४ ॥

श्रीगुसाईं जी के सेवक चतुर्भुजदास कुम्भनदास के बेटा तिनकी वार्ता

—: o :—

प्रसंग १

सेा वे कुम्भनदास जी श्रीनाथ जी के संग खेलत हते। सेा एक दिन कुम्भनदास कुं श्रीगेाघर्द्धननाथ जी नें चार भुजा धरि के दर्शन दिये। वाही दिन बेटा को जन्म भयेा जासूं वा बेटा को नाम चतुर्भुजदास धरयो। ये बात कुम्भनदास जी की वार्ता में लिखी है।

सेा वे चतुर्भुजदास जी ग्यारह दिन के भये ताही समय कुम्भनदास जी नें श्रीगुसाईं जी के पास ले जायके नाम सुनवाये। और चतुर्भुजदास जब इकतालिस दिन के भये तब कुम्भनदास जी नें श्रीगुसाईं जी पास ले जाय निवेदन करवाये। वा दिन तें चतुर्भुजदास में श्रीनाथ जी ने इतनी सामर्थ्य धरी जब इच्छा आवे तब मुग्ध बालक होय जाय और इच्छा आवे तो बोलवे चलावे सब अलौकिक बातें करवें लग जाय। जब कुम्भनदास जी एकांत में बैठे तब चतुर्भुजदास कुम्भनदास को भगवद्वार्ता करें और पूछें और पद गावें और जब लौकिक मनुष्य आय जाय तब चतुर्भुजदास मुग्ध बालक बन जाय। ऐसी सामर्थ्य श्रीनाथ जी चतुर्भुजदास में धर दीनी।

सो जब श्रीनाथ जी इच्छा करते तब चतुर्भुजदास कुं साथ खेलवेकुं ले जाते। और जैसी लीला के दर्शन करते तैंसे पद गावते। सो ये चतुर्भुजदास ऐंसे भगवत्कृपापात्र हते।

प्रसंग २

सो एक दिन श्रीनाथ जी एक ब्रजवासी के घर माखन चोरी करवेकुं पधारे और चतुर्भुजदास जी कुं संग ले पधारे। और उहाँ एक ब्रजवासी की बेटी के चतुर्भुजदास नजर आये और श्रीनाथ जी तौ नजर नाहीं पड़े। और चतुर्भुजदास पकड़ाय गये सो विननें मार खाई। पाछें चतुर्भुजदास श्रीनाथ जी के पास गए। जब चतुर्भुजदास जी नें कही जो महाराज मोकुं तो आछी मार खवाई। श्रीनाथ ने कही जो तेरे में सामर्थ्य आछी नहीं हती जब तू क्यौं न भाग आयो। सो वें चतुर्भुजदास श्रीनाथ के अंतरंग लीलामध्यपाती हते। तातें इनकी वार्ता कहा कहिये।

प्रसंग ३

और जा दिन चतुर्भुजदास जीकुं प्रथम लीला को अनुभव भयो वा दिनतें सर्व व्यापी वैकुंठ सम्बन्धी लीला सर्वत्र दर्शवे लगी। सो ये सामर्थ्य इनके भीतर श्रीगोवर्द्धननाथ जी नें कृपा करिके धरी। जब कुम्भनदास जी कूं पोढवे के दर्शन होते हते तब कुम्भनदास जी कीर्तन गायवे लगे। सो पद। "वे देखो बरन झरोखन दीपक, हरि पोढे ऊँची चित्रसारी"। सो इतनी तुक जब

कुम्भनदास जी नें गाई तब चतुर्भुजदास जी गाय उठे। " सुन्दर बदन निहारन कारन, बहुत यतन राखे कर प्यारी"। ये सुनिकें कुम्भनदास जी ने निश्चय करयो जेा इनकुं श्रीगुसाईं जी की कृपा सों संपूर्ण अनुभव भयो। सेा बड़ी दया मान के बहोत प्रसन्न भये। जा दिन तें चतुर्भुजदास कहुँ जाते अथवा नहीं जाते अथवा अवार सवार आवते सेा कुम्भनदास जी कछू कहते नहीं। ऐसेा जानते जेा श्रीनाथ जी संग खेलत होएँगे। सेा चतुर्भुजदास ऐंसे भगवत्कृपापात्र भगवदीय हुते।

प्रसंग ४

और एक दिन श्रीगोवर्द्धननाथ जी के शृङ्गार के दर्शन चतुर्भुजदास जी ने कीने और श्रीगुसाईं जी आरती दिखावते हुते। ता समें चतुर्भुजदास जी नें ये पद गायो।

"सुभग शृङ्गार निरख मोहन को ले दर्पण कर पियहि दिखावें। आपुन नेक निहारिये बलिजाऊँ आज की छवि कछू कहत न आवें"।

ता पीछे गोविंदकुण्ड ऊपर श्रीगुसाईं जी पधारे। तब एक वैष्णव नें पूछ्यो जा महाराज चतुर्भुजदास जी नें " आज की छवि कछु बरनि न जावै " ऐसे गायो और आपतो नित्य शृङ्गार करे हैं और आरसी दिखावें है। सेा आज को अभिप्राय कछु समझ में नहीं आयो। जब श्रीगुसाईं जी ने कही सेा चतुर्भुजदास सों पूछियो। तब वा वैष्णव नें चतुर्भुजदास सेा पूंछी। जब चतुर्भुजदास जी नें और भी पद गायो। सो पद। " माईरी आज

और काल और छिन छिन प्रति और और।" ये पद सुनिके वा वैष्णव ने श्रीगुसाईं जी सेा पूछ्यो जेा भगवल्लीला तेा नित्य है और सर्वत्र है। जब चतुर्भुजदास जी ने और और क्यों कही।

तब श्रीगुसाईं जी ने आज्ञा करी। भगवल्लीला में विलक्षण पणेा येई है जेा नित्य है और क्षण क्षण में नूतन लागत है और लीलास्थ जीवन कूं और लीला के दर्शन करवे वारेन कूं क्षण क्षण नूतन लगत है और नूतन रुचि उपजे है। सेा गोपालदास जी नें गायेा है। चौथे आख्यान में पांचमी तुक। "एक रसना किम कहूँ गुण प्रकट विविध विहार। नित्य लीला नित्य नूतन श्रुति न पामे पार।" ऐसेा भगवल्लीला है। ये सुनके वेा वैष्णव बहोत प्रसन्न भयेा। और वे चतुर्भुजदास ऐसे कृपापात्र हुते जेा जिनकेा नित्य लीला को अनुभव सर्वत्र होय गयेा।

प्रसंग ५

एक दिन श्रीगुसाईं जी श्रीगोकुल बिराजते और श्रीगिरिधर जी सों लेके सब बालक श्रीजी द्वार बिराजते हुते। तब उहाँ रास-धारि आये। तब श्रीगोकुलनाथ जी नें श्रीगिरिधर जी सों पूंछ के परासेाली में रास करायेा। और रास में खूब गान भयेा। जब चतुर्भुजदास जी सुं श्रीगोकुलनाथ जी ने आज्ञा करी जेा तुम कछु गावेा। तब चतुर्भुजदास जी नें कही जेा मेरे सुनवे वारे श्रीनाथ जी नहीं पधारे हैं जा सूं मैं कैसे गाऊँ। जब श्रीगोकुल-नाथ जी ने कही जेा श्रीनाथ जी अबी पधारेंगे।

ये बात श्रीगोकुलनाथ जी की सत्य करवे के लियें श्रीनाथ जी जाग के और श्रीगिरिधर जी कुं जगाय के श्रीनाथ जी परासोली पधारे और श्रीगिरिधर जी पधारे और चतुर्भुजदास कूं और श्रीगोकुलनाथ जी कूं दर्शन भये। और कोई कुं दर्शन भये नहीं। तब श्रीनाथजी के दर्शन करकें चतुर्भुजदास जी गावे लगे। जब अधिक सुख भयो रातहुँ बढ गई और चतुर्भुजदास जी नें गायो सोपद। "अद्भुत नट भेख धरे यमुना तट श्याम सुंदर गुण निधान गिरिवर धरन रास रंग राचें।" पद दूसरो। "प्यारी ग्रीवा भुजमेलत नृत्यत प्रिया सुजान" ऐसे ऐसे चतुर्भुजदास जी नें बहुत पद गाये। जब रास भयो तब परम आनंद भयो।

फेर श्रीगिरिधर जी नें श्रीनाथ जी कुं रात के जगे जान के सवारे जगाये नहीं। इतने में श्रीगुसाईं जी गोकुल तें पधारे और पूँछी जेा कहा समय है। जब श्रीगिरिधर जी नें कही जेा श्रीनाथ जी जागे नहीं है। रात कुं रास में जगे हते। जब श्री गुसाईं जी नें कही जेा श्रीनाथ जी तो सदैव रास करें हैं और सदैव जगें है जासूं शंखनाद करावो। जब शंखनाद कराय के श्रीनाथ जी कुं जगाए। फेर श्रीगोकुलनाथ जी कुं श्रीगुसाईं जी ने आज्ञा करी। जेा ऐसेा आग्रह करिके श्रीनाथ जी कुं पधरावने नहीं। एतो सदैव अपनी इच्छा तें रास करत है जासूं बीनती करिके पधरावने नहीं। वे चतुर्भुजदास जी ऐसे कृपापात्र हते के श्रीनाथ जी के विना दूसरे ठिकानें नहीं करत हते।

प्रसंग ६

एक दिन श्रीगुसाईं जी नें चतुर्भुजदास सेा आज्ञा करी जो अपछराकुंड ऊपर जाय के रामदास भीतरीया कुं बुलाय लावो और तुम फूल ले आवो। तब चतुर्भुजदास जाय के रामदास जी कुं बुलाय के आप फूल वीनके आवते हते। जब श्रीगोवर्द्धन पर्वत की कंदरा सूं बाहेर श्रीनाथ जी श्रीस्वामिनी जी सहित पधारे और श्रीस्वामिनी जी नें मन में ये विचार करयौ जो यह लीला कोई जाने नहीं हैं। इतने में चतुर्भुजदास जी नें दर्शन करिके ये पद गायो। "गोवर्द्धन गिरि सघन कंदरा रैन निवास कियो पिय प्यारी।" और दूसरो पद गायो। "रजनी राज कियो निकंज नगर की रानी।" ये पद सुनके श्रीस्वामिनी जी प्रसन्न भई। फेर चतुर्भुजदास जी फूल लेके श्रीगुसाईं जी के पास गए। सो वें चतुर्भुजदास जी ऐसे कृपापात्र हते जो श्रीनाथ जी के तथा श्रीस्वामिनी जी के मन की जानवे वारे भये।

प्रसंग ७

सो चतुर्भुजदास की वहू एक दिन श्रीनाथ जी के चरणारविंद में पहुँच गई जब चतुर्भुजदास जो कुं सूतक आयो। सूतक में चतुर्भुजदास जी बन में बैठके नित्य कीर्तन करते। तब श्रीगोवर्द्धन नाथ जी विनके चारौ और दूर दूर खेलै करते। जब श्रीगोवर्द्धन नाथ जी नें आज्ञा करी जो चतुर्भुजदास तुम दूसरो विवाह करौ। जब चतुर्भुजदास नें कही जो जात में कन्या नहीं मिले है जब

श्रीनाथ जी ने कही जो तुम धरेजा करौ। जब चतुर्भुजदास जी ने धरेजा करयो। तब श्रीगोवर्द्धन नाथ जी नित्य चतुर्भुजदास जी ऐसे अंतरंग भगवदीय हते।

प्रसंग ८

एक समय श्रीगुसाईं जी परदेस पधारे हते। तब श्रीगिरिधर जी की ऐसी इच्छा भई जो श्रीनाथ जी कुं मथुरा में अपने घर पधरावें तौ ठीक। जब श्रीनाथ जी की आज्ञा लैके फागनवदी षष्टी के दिन सैन पीछे श्रीनाथ जी कुं मथुरा पधराए। और फागनवदी ७ के दिन बडो उत्सव मान्यो और जो कछु घर में हतो सो सर्वस्व अर्पण करयौ। और बेटी जी ने एक बीटी धर राखी हती। बेटी जी बालक हते जासूं समझते नहीं हते। सो बिटी हूँ श्रीनाथ जी ने माँग लीना। कारण जो श्रीगिरधर जी नें सर्वस्व अर्पण करवे की प्रतिज्ञा करी हती सो प्रतिज्ञा सत्य करिवे के लिये श्रीनाथ जी ने बीटी माँग लीनी।

और नित्य चतुर्भुजदास गिरिराज जी ऊपर बैठके बिरद के पद और हिलग के पद गाया करते। और श्रीनाथ जी नित्य बिनकुं संध्या समें गायन के संग पधारते दर्शन देते। सो वैशाख सुदि त्रयोदशी के दिन चतुर्भुजदास जी नें ये पद संध्या समें गायो। "श्रीगोवर्द्धन वासी साँवरेलाल तुम बिन रह्यौ न जाय हो।" या पद की छेली तुक श्रीनाथ जी नें पधारतें ही सुनि तब करुणा व्याकुल भये और मन में ये विचार करयो जो सर्वथा काल इहाँ

पधारूँगो जासूं भक्त को दुःसह दुःख देखके श्रीनाथ जी से रह्यो न गयो।

जब रात्र एक प्रहर रही तब श्रीनाथ जी ने वैशाख सुदि चौदस के दिन श्रीगिरिधर जी कुं आज्ञा करी जो आज गोवद्धंन पर्वत ऊपर राजभोग अरोगुंगो जब श्रीगिरिधर जी नें मंगला करायके श्रीनाथ जी कुं पधराए। और पहेले मनुष्य पठाय कें मंदिर खासा करायो और श्रीनाथ जी कुं पधारते अवार होय गई। जासूं राजभोग तथा शयनभोग एक समय में आरोगे। वा दिनकूं आज दिन पर्यंत नृसिंघ चतुर्दशी के दिन श्रीनाथ जी दोय समें राजभोग अरोगें हें। एक तो नित्य के समें और एक शयन-भोग के संग। वे चतुर्भुजदास श्रीनाथ जी के ऐसे कृपापात्र हते जो तिन विना श्रीनाथ जी सों रह्यो न गयो।

प्रसंग ९

एक समय चतुर्भुजदास श्रीगुसाईं जी के संग श्रीगोंकुल गए और श्रीनवनीत प्रिया जी के दर्शन करे और बाललीला के तथा पालने के कीर्तन करे। और दर्शन करके फेर गोपालपुर आए जब कुम्भनदास नें पूंछ्यो जो कहाँ गयो हतो। तब तिननें कही श्रीगोकुल गयो हतो।

जब कुम्भनदास जी नें श्रीगुसाईं जी सों पूछी जो प्रमाण प्रकर्ण की लीला और प्रमेय प्रकर्ण की लीला में कितनो भेद है। जब श्रीगुसाईं जी नें कही जो भगवल्लीला सब एक समान है।

कुम्भनदास जी कुं किशोर लीला में बहोत आसक्ती है जासूं ऐसे बोले भगवल्लीला में भेद समझनो नहीं और श्रीठाकुर जी विरुद्ध धर्म आश्रय हें। एक कालावाच्छिन्न श्रीप्रभु सर्वत्र सब लीला करत हैं। ये सुनके चतुर्भुजदास जी बहोत प्रसन्न भए। वे चतुर्भुजदास श्रीगुसाईं जी के ऐसे कृपापात्र हते। जिनसूं श्री-गुसाईं जी कछू गुप्त नहीं राखते हते।

प्रसंग १०

और चतुर्भुजदास जी के पाछें चतुर्भुजदास जी के बेटा राघोदास हते। सेा विनकूं भगवल्लीला को अनुभव भयेा जब राघोदास जी ने धमार गाई। सेा धमार। "ए चल जाएँ जहाँ हरि क्रीडत गोपिन संगा।" ये धमार की जब दस तुक भई तब राघोदास की देह छूटी। सेा भगवल्लीला में प्रवेश भयेा। राघोदास जी की बेटी ने डेढ़ तुक धर के धमार पूरी करी। वे चतुर्भुज-दास तथा विनके बेटा विनकी बेटी ये सब ऐसे कृपापात्र हते। ताते इनकी वार्ता कहाँ ताईं लिखिये ॥ प्रसंग ॥ १० ॥ वार्ता संपूर्ण वैष्णव ॥ ३ ॥

नोट :—चतुर्भुजदास की वार्ता में तथा दो सौ बावन वैष्णवन की वार्ता' में अन्य स्थलों पर भी गोकुलनाथ का नाम इस तरह आया है कि इस ग्रंथ के गोकुलनाथ कृत होने में सन्देह होने लगता है। ' चौरासी वार्ता में ऐसे उल्लेख नहीं मिलते।

*

श्रीगुसाईं जी के सेवक छीत स्वामी चौबे तिनकी वार्ता

—: o :—

प्रसंग १

सो वे छीत स्वामी मथुरा में रहते हते। और मथुरा जी में पाँच चौबे बडा गुंडा हते। और ठगाई करते और छीत चौबे बिन पाँचन में मुख्य हतो। सो विनने विचार करयो जेा कोई गोकुल में जाय है सो श्रीविट्ठल नाथ जी के बस होय जाय है। जासूं ऐसो दीसे है जो श्रीबिट्ठल नाथ जी जादू टोना बहोत जाने हैं। परन्तु हमारे ऊपर चले तब साँची मानें। ये विचार पाँचौ चौबेन नें करयो।

तब एक खोटो नारियल और खोटो रुपैया लैके पाँचों चौबे श्रीगोकुल आये। तब चार चौबे तौ बाहरे बैठ रहै और मुख्य जेा छीत चौबे हतो विनकुं भीतर पठायो। सो वे छीत चोबा नें खोटो नारियल तथा खोटो रुपैया जायके भेट धरयो। तब श्रीगुसाईं जी नें खवास सूं आज्ञा करी जेा या रुपैया के पैसा ले आव। जब रुपैया के पैसा आए और नारियल फोड्यो तब सुफेद गरो निकसी। तब छीत स्वामी देखिके मन में विचारी जेा ये तो साक्षात् ईश्वर हैं। जब छीत स्वामी नें कही जेा महाराज मोकुं शरण लेओ। जब श्रीगुसाईं जी नें छीत स्वामी कुं नाम सुनायो। पाछे श्रीनवनीत प्रिया जी के दर्शन करवे कुं गये।

भीतर देखें तो श्रीगुसाईं जी बिराजे और बाहेर आयके देखे तो बिराजे हैं। जब छीत स्वामी नें विचारी जेा श्रीगुसाईं जी की ईश्वरता जीव सों जानी नहीं जाय है।

जब वे चार चोबे बाहर बेठे हते विनने छीत स्वामी कुं बुलाये। तब श्रीगुसाईं जी नें आज्ञा करी जेा तुमारे संगी बाहेर तुमकुं बुलावत हे सो तुम जाओ। तब छीत स्वामी नें बाहर आयके चारौ चौवान से कही मोकुं टोना लग गयो हे तुम भाग जावो। नहिं तो तुम को लग जायगो। ये सुनके चारौ चौबे भाग गये। छीत स्वामी नें एक पद करिके गायो।

राग नट

भई अब गिरधर सों पहेचान।
कपट रूप छलवे आयो पुरुषोत्तम नहि जान ॥ १ ॥
छोटो बड़ो कछू नहि जान्यो छाय रह्यो अज्ञान।
छीत स्वामि देखत अपनायौ श्रीविट्ठल कृपानिधान ॥२॥

ये पद सुनि के श्रीगुसाईं जी प्रसन्न भए। और छीत स्वामी कुं साक्षात् कोटि कंदर्प लावण्य पूर्ण पुरुषोत्तम के दर्शन भये। और भगवल्लीला को अनुभव भयेा और श्रीगुसाईं जी तथा श्रीठाकुर जी के स्वरूप में अभेद निश्चय भयेा, दोनें स्वरूप एक हैं ऐसे जानन लागे।

तब छीत स्वामी गोपालपुर श्रीनाथ जी दर्शन कुं गये। उहाँ श्रीनाथ जी के पास श्रीगुसाईं जी कुं देखे। जब बाहेर निकसवे

पूँछी जेा श्रीगुसाईं जी कब पधारचे है। तब उहाँ के लेागन नें कही जेा श्रीगुसाईं जी तेा गेाकुल बिराजे है। जब छीत स्वामी उहाँ ते श्रीगेाकुल में आयके श्रीगुसाईं जी के दर्शन किये। जब छीत स्वामी नें ये निश्चय कियेा जेा श्रीनाथ जी तथा श्रीगुसांईं जी एक ही स्वरूप है। जब सूं छीत स्वामी जी नें "गिरिधरन श्रीविट्ठल" ऐंसी छाप के बहुत पद गाए। सेा वें छीत स्वामी ऐंसे कृपापात्र भगवदीय हते।

प्रसंग २

सेा वे छीत स्वामी बीरबल के पुरेाहित हते सेा वे बीरबल के पास वर्सेाधी लेवे कुं गए। तब सवार के समें छीत स्वामी नें यह पद गाये।

"जे वसुदेव लिये पूरण तप, सेाई फल फलित श्रीवल्लभ देह।"

ये पद सुनिके बीरबल बेाले जेा मैं तेा वैष्णव हूँ परन्तु ये बात देशाधिपति सुनेंगे तेा तुम कहा जबाब देओगे वे तेा मलेच्छ है। तब छीत स्वामी बोले जेा देशाधिपति पूछेंगे तेा मैं नीके जबाब देउँगेा और मेंरे मन सूं तेा तूही मलेच्छ है। आज पीछे तेरेा मुख न देखूंगेा ऐसे कहेके छीतस्वामी स्वामी चले गए।

जब ये बात देशाधिपती नें सुनी तब बीरबल सूं पूँछेा जेा तुमारे पुरेाहित क्यों रिसाय गए। तब बीरबल नें सब बात देशाधिपति आगे कही। ब्राह्मण लेाग वृथा रिस बहुत करे है। तब देशाधिपती नें कही जेा तुम और हम नाव में बेठे हते जब

दीक्षित जी नें मोकुं आशीर्वाद दियो हतो। तब मैनें मणी भेट करी हती। वे मणी कैसी हतो जेा पांच तोला सेाना नित्य देती हती। सेा वे मणी दीक्षित जी ने श्रीयमुना जी में फटक दीनी। जब मेरे मन में बड़ेा गुस्सा लग्यो तब मैनें मणी पाछी माँगी। तब दीक्षित जी नें श्रीयमुना जी में सुं खौच भरिके मणी काढ़ी तब हमकुं कही तुमारी होय सेा पहिचान लेओ। जब हमकूं ये निश्चय भयेा ये साक्षात् ईश्वर है ईश्वर विना ऐसेा कारज नहीं होयगेा। ये बात विचार करतें तुमारे पुरेाहित की सब बात साची है सेा तुमनें क्यों विचार करयौ। ये बात सुनिके बीरबल बहेात खिसातेा भयेा। और कछू बेाल्यों नहीं।

और ये बात श्रीगुसाईं जी नें सुनी तब लाहेार के वैष्णव आये हते विनसों आज्ञा करी जेा छीत स्वामी की खबर राखते रहियेा। जब छीत स्वामी बेाले जेा मैंने वैष्णवधर्म विक्रय करवेकुं लियेा नहीं है। मेरेा तेा विश्रांत घाट है सेा आपकी कृपा सों सब चलेगेा। येा बात सुनके श्रीगुसाईं जी बहेात प्रसन्न भये।

प्रसंग ३

और एक दिन बीरबल देशाधिपती सों रजा लेके श्रीगेाकुल में जन्म अष्टमी के दर्शकुं आयेा। पाछे वेष पलटाय के देशाधिपती हूँ छाने छाने आयेा। तब जन्माष्टमी के पालना के दर्शन करे मनुष्य की भीड़ में। तब देशाधिपती कुं श्रीगुसाईं जी विना और कोई नें पहिचान्यो नहीं। तब छीत स्वामी कीर्तन करते हते

और श्रीगुसाईं जी श्रीनवनीत प्रिया जी कुं पालना झुलावते हते। तब छीत स्वामी नें ये पद गायो।

प्रिय नवनीत पालनें झूले श्रीविट्ठलनाथ झुलावै हो।
कबहुँक आप संग मिल झूलै कबहुँक उतर झुलावै हो॥ १॥
कबहुँक सुरंग खिलोना लै लै नाना भाँति खिलावै हो।
चकई फिरकनी ले विंगोटु झुणझुण हात वजावें हो॥ २॥
भोजन करत थाल एक झारी दोउ मिल खाय खवावें हो।
गुप्त महारस प्रकट जनावे प्रीति नई उपजावें हो॥ ३॥
धन्य (ध) न्य भाग्य दास निज जनके जिन यह दर्शन पाए हो।
छीत स्वामी गिरधरन श्रीविट्ठल निगम एक कर गाएं हो॥ ४॥

ऐसे दर्शन छीत स्वामी कुं भए। और देशाधिपतीकुं हूँ ऐसे दर्शन भए। और मनुष्यनकुं साधारण दर्शन भए। तब देशाधिपतिकुं महाप्रसाद दिवाये।

तब देशाधिपती आगरे आये। फेर दूसरे दिन बीरबल हूँ आए। तब देशाधिपती नें बीरबल सूं पूछी जो कहा दर्शन किये। तब बीरबल ने कही श्रीनवनीत जी पालना झूलते हते और श्रीगुसाईं जी झुलावते हते। तब देशाधिपती नें कही ये बात झूठी है। श्रीगुसाईं जी पालना झूलते हते और श्रीनवनीत प्रिया जी झुलावते हते मोकुं ऐसे दर्शन भए हैं। और छीत स्वामी तुमारे पुरोहित ऐसे कीर्तन गावते हते। और मैं तेरे पास ठाड़ो हते। तब बीरबल नें कही मोकुं ऐसे दर्शन क्यूं नहीं भये। तब

देशाधिपति नें कही तुमकुं गुरू के स्वरूप को ज्ञान नहीं है और तुमारे पुरोहित छीत स्वामी जिनकुं इन बात को अनुभव है ऐसेन सों तुमारी प्रीती नहीं है। जब तुमकूं ऐसे दर्शन काहेकुं होवें। सो वे छीत स्वामी ऐसे कृपापात्र हते। वार्ता संपूर्ण। वैष्णव ॥२॥

श्रीगुसाईं जी के सेवक गोविंद स्वामी सनाढ्य ब्राह्मण महावन में रहते तिनकी वार्ता

—: o :—

प्रसंग १

प्रथम गोविंददास आंतरी गाम में रहते। तहाँ गोविंद स्वामी कहावते। और आप सेवक करते। गोविंददास परम भगवद्भक्त नित्य याही रीती सेा रहते। जो श्रीभगवत् चरणारविंद की प्राप्ति कैसें होय याही बात की तलासी करत रहते हते।

एक समय गोविंददास आंतरी गाम ते ब्रज कों आये। और महावन में आयके रहे। काहे तें यह ब्रजधाम है। इहाँ भगवत् चरणारविंद की प्राप्ति होयगी। और गोविंददास कवि हते। सो आप पद करते। सो जो कोऊ इनके पद सीख कें श्रीगुसाईं जी के आगें आय कें गावें। तिनके ऊपर श्रीगुसाईं जी प्रसन्न होते। सो गावनहारे गोविंद स्वामी के आगे आयकें कहते। जो तुमारे पद सुनके श्रीगुसाईं जी बहुत प्रसन्न होंत हैं। ये वार्ता सुनि गोविंद स्वामी नें ऐसो विचार कियेा जेा श्रीगुसाईं जी कूं मिलें तो ठीक।

तब एक समय श्रीगुसाईं जी को सेवक महाबन गयेा हतो। सेा भगवदिच्छा ते श्रीगुसाईं जी के सेवक को और गोविंद स्वामी को मिलाप भयो। वा वैष्णव की गोविंद स्वामी की आपस में

बातचीत भई। जब गोविंद स्वामी नें कही कें श्रीठाकुर जी को अनुभव कैसे होय। जो मोकुं बहुत दिन सों या बात की आतुरता है तातें कहो। तब वा वैष्णव नें गोविंद स्वामी की आतुरता देखिके कह्यो। जो आजकल श्रीठाकुर जी कुं श्रीविट्ठल नाथ श्रीगुसाईं जी नें बसकर राखें हैं। तातें श्रीठाकुर जी और ठौर कहुँ जाय सकत नहीं। श्रीठाकुर जी तो श्रीगुसाईं जी के हाथ हैं। सो यह सुनके गोविंद स्वामी कुं अति आतुरता भई। तब गोविंद स्वामी नें उन वैष्णव सों कही। जो मोकुं श्रीगोकुल में श्रीगुसाईं जी के पास ले चलो। तब उहाँ से उठे सो श्रीगोकुल में आये।

तब श्रीगुसाईं जी ठकुरानी घाट ऊपर संध्या तर्पण करत हते। वा वैष्णव नें गोविंद स्वामी कुं श्रीगुसाईं जी को दर्शन करायो। गोविंद स्वामी दर्शन करिके मन में समझें ये कर्म मार्गीय दीखत हैं। सो कहा कारण होयगो। तब गोविंद स्वामी कुं देखके श्रीगुसाईं जी बोले जो आवो गोविंद स्वामी बहुत दिन सूं देखे। तब गोविंद स्वामी नें कही महाप्रभु अब ही आयो हूँ। तब गोविंद स्वामी नें अपने मन में विचार किये की आपने मोकुं कोई दिन देख्यो नहीं हें सो कैसे जान गये। यामें कछु कारण दीसत है।

जब श्रीगुसाईं जी मंदिर में पधारे। तब गोविंद स्वामी नें बीनती करी हे महाप्रभु मोकूं कृपा करिके शरण लेओ। तब श्रीगुसाईं जी नें कही न्हाय आवो। तब वे न्हाय आये। तब

श्रीनवनीत प्रिया जी के संनिधि में नाम निवेदन करायो। तब गोविंद स्वामी कुं साक्षात् पूर्ण पुरुषोत्तम कोटिकंदर्प लावण्य के दर्शन भये। और सब लीलान को अनुभव भयो। श्रीगुसाईं जी श्रीनवनीत प्रिया जी की सेवा करके बाहिर पधारे। तब गोविंद स्वामी नें बीनती करी। जो अपनौ कपट रूप दिखावत हौ। साक्षात् पूर्ण पुरुषोत्तम रूप होय के वेदोक्त कर्म करत हो। सो हम जैसेन कूं मोह होय है, जब श्रीगुसाईं जी ने आज्ञा करी। जो भक्ति है सो फूल को वृक्ष है, और कर्म मार्ग है सो कांटन की बार है। तासूं कर्म मार्ग की बार बिना भक्ति मार्ग जो फूल को वृक्ष वाकी रक्षा न होय। ये सुनके गोविंद स्वामी बहुत प्रसन्न भये। गोविंद स्वामी ऐसें कृपापात्र भगवदीय भये।

प्रसंग २

सो गोविंददास महावन के टेकरा पर रहते हते। और नये कीर्तन करके गावत हते और उहाँ श्रीठाकुर जी सुनवेकुं पधारते हते। जब उहाँ मदनगोपालदास कायथ कीर्तन लिखिवेकुं आवते हते। सो एक दिन श्रीठाकुरकुं गोविंदस्वामी नें कही। इहाँ ताईं आप नित्य श्रम करो हो। सो आपको गान सुनवे की बहुत इच्छा दीखे हैं। आपकुं गान को अभ्यास है। यातें आपकुं कछु गायो चहिये। तब आपनें कछु गान कियो। तब गान सुनके श्रीस्वामिनी जी पधारी। जब ताल स्वर बरोबर बजावे लगे तब गोविंदस्वामी धन्य धन्य कहन लगे। और आपनें भाग्य की सराहना करन लगे।

जब मदनगोपालदास कायथ बोले। जो इहाँ कोई आदमी तो दिसे नहीं है। तुम कौनसूं बात करत हो। तब गोविंदस्वामी कछु बोले नहीं। बात गुप्त राखो। पाछे एक दिन श्रीगुसाईं जो नें पूछी जा श्रीठाकुर जो कैसे गावें हैं। तब गोविंदस्वामी नें कही श्रीठाकुर जो बहोत आछे गावें हैं। परंतु ताल स्वर श्रीस्वामिनी जी बहोत आछो देत हैं। ये सुनके श्रीगुसाईं जी मुसकाय के चुप होय रहे।

प्रसंग ३

सेा गोविंदस्वामी जब श्रीगोकुल में रहते हुते। सेा उहाँ आंतरिगाम में पहले गोविंदस्वामी के सेवक हते सेा श्रीगोकुल आये। सेा पूछत पूछत विनके पास गये। जायके पूँछी जेा गोविंदस्वामी कहा हैं। तब विननें कही गोविंदस्वामी मर गये। तब तिनमें सूं एक पहेचानतेा हतेा जब वानें कही आप क्यों हमारी हाँसी करेा हेा। जब गोविंदस्वामी नें कही हमने स्वामी-पनेा छोड़ दियेा। जासुं तुम ऐंसे समझो जेा मर गये हैं। जब विननें बीनती करी जेा अब हम सेवक कौनके होंय। जब गोविंद स्वामी नें विनकुं ले जायके श्रीगुसाईं जी के सेवक कराये। सेा गोविंदस्वामी के संग सेा विनकुं भगवत्प्राप्ती भई। जिनके संग ते सहज भगवत्प्राप्ती होवै विनकी कृपातें कहा न होवै सब होवै। विनिकी बात कहा कहिये।

प्रसंग ४

सेा वे गोविंदस्वामी श्रीगोकुल में रहते। परन्तु श्रीयमुना जी

में पाँव नहिं देते । श्रीयमुना जी कुं साक्षात् श्रीस्वामिनी जी अष्टसिद्धो के दाता जानते । जैसेा स्वरूप श्रीमहाप्रभू जो नें यमुनाष्टक में वर्णन कियेा है । वैसे श्रीगुसाईं जी की कृपा से गोविंदस्वामी जानते हते जासुं श्रीयमुना जी में पाँव नहीं धरते हुते । और श्रीयमुना जी के दर्शन करते, और दंडवत करते, और पान करते ।

सेा एक दिन श्रीबालकृष्ण जी और श्रीगोकुलनाथ जी गोविंद-स्वामीकुं पकड़ के श्रीयमुना जी में नहायवे लगे । जब गोविंद-स्वामी नें बीनती करी जेा ये मल मूत्र को भर्यो देह श्रीयमुना जी के लायक नहीं है । श्रीयमुना जी साक्षात् स्वामिनी हैं । जासूं ये अधम देह स्पर्श करवे योग्य नहीं है । श्रीयमुना जी कुं तो उत्तम सामग्री चहिये । ये सुनके श्रीबालकृष्ण जो और श्रीगोकुल नाथ जी चुप कर रहे । सेा वे गोविंदस्वामी ऐसेा स्वरूप श्रीयमुना-जी को जानत हते ।

प्रसंग ५

गा गोपकैरनुवनं नयनो सदार
वेणुस्वनैः कलपदैस्तनुभृत्सूसख्यः ।
अस्पंदनं गतिमतां पुलकस्तरूणां
नियेागपाश कृत लक्षणयेार्विचित्रं ॥

या श्लेाक को व्याख्यान श्रीगुसाईं जी गोविंदस्वामी के आगे कहबे लगे । जब कहते कहते अर्धरात्र बीती तब श्रीगुसाईं जी पोढै । गोविंदस्वामी घरकूं चले । तब श्रीबालकृष्ण जी तथा

श्रीगोकुलनाथ जी तथा श्रीरघुनाथ जी तीनो भाई वैष्णवन के मंडल में विराजत हते।

जब गोविंद स्वामी नें जायके दंडवत करी। तब श्रीगोकुल नाथ जी नें पूछे जेा श्रीगुसाईं जी के इहाँ कहा प्रसंग चलतो हतो। जब गोविंद स्वामी नें ये श्लोक की सुबोधिनी जी को प्रसंग कह्यो। फिर कह्यो आपको व्याख्यान आप करें यामें कहा केहेनेा। जाके स्वरूप को वेद हूँ नहीं जान सकें वाको व्याख्यान वे आप ही करें तब होय। जब ऐंसेा कह्यौ तब श्रीगोकुलनाथ जी नें दोनौ भाइन सेां कही जेा गोविंद स्वामी नें श्रीगुसाईं जी को स्वरूप कैंसेा जान्यो है। और इनके ऊपर आपनें कैंसी कृपा करी है सेा इनके भाग्य को कहा वर्णन करिये ये कहिके श्रीगोकुल नाथ जी चुप होय रहे॥

प्रसंग ६

सेा गोविंद स्वामी श्रीनाथ जी के संग खेलते हते। सेा एक दिन अपछरा कुण्ड सेां गोवर्द्धन पर्वत ऊपर होंय कें श्रीगोवर्द्धन नाथ जी के संग गोविंददास आवते हते। उहाँ से राजभोग की आरती भई ऐंसी आवाज सुनी। जब गोविंद स्वामी नें कहि श्रीनाथ जी तेा अबी आवत हैं। राजभोग कौन नें अरोगे हें। श्रीगुसाईं नें दूसरेा राजभोग सिद्ध कराय के धरायो।

और गोपालदास भीतरिया नें श्रीगुसाईं जी सेा बीनती करी। जेा एक दिन पूंछरो की औरतें गोविंददास श्रीनाथ जी के

संग आवते मेंने देखे हते। जब श्रीगुसाईं जी नें कही। जो कुम्भनदास तथा गोविंद स्वामी तथा गोपिनाथ दास ग्वाल ये तीनो श्रीनाथ जी के एकांत के सखा है। सो इनकुं अधिकार श्रीमहाप्रभू जी नें दियेा है। ये बात सुनके गोपालदास जी बहुत प्रसन्न भये और अपने मन में कहेवे लगे। जेा हम भितरिया भये तो कहा भयो। सेा वे गोविंद स्वामी ऐंसे भगवदीय कृपा-पात्र हते।

प्रसंग ७

सेा एक दिन गोविंद स्वामी उत्थापन के समें श्रीनाथ जी के दर्शन कुं गये। जब देखें तो श्रीनाथ जी के पाग के पेच खुल रहे हते। तब गोविंद स्वामी नें कहो कें पाग के पेच क्यौं खोल डारे हें। जब श्रीनाथ जी नें कही तूं पाग के पेंच संवारि दे। तब गोविंद स्वामी नें भीतर जाइके पाग के पेंच संवार दिये। तब भीतरिया नें श्रीगुसाईं जी सों कहो जो गोविंददास नें अप-रस छिवाय दीन्ही है। पाछें श्रीगुसाईं जी नें आज्ञा करि जेा गोविंददास सें श्रीनाथ जी नहीं छुआय जाय। ये तो श्रीनाथ जी के संग सदैव खेलें हैं। सेा गोविंद स्वामी ऐंसे कृपापात्र हते।

प्रसंग ८

एक दिन श्रीगुसाईं जी श्रीनाथ जी को शृङ्गार करत हते। तब गोविंदस्वामी जगमोहन में कीर्तन करत हते। तब श्रीनाथ जी नें गोविंददास कुं आठ कांकरी मारी। जब गोविंदस्वामी नें

एक कांकरी मारी। तब श्रीनाथ जी चमक उठे। जब श्रीगुसाईं जी नें कही गोविंददास यह कहा कियो। तब गोविंदस्वामी नें कही। हे महाराज आपको तो पूत और को मूली कर। जो आठ वखत मोकुं कांकरी मारी जब आप कछु नहीं बोले। ये सुनके श्रीगुसाईं जी चुपकरि रहे। सो गोविंददास जी कुं ऐंसो सखा भाव सिद्ध भयो हतो।

प्रसंग ९

एक दिन गोविंददास की बेटी देस में सो आई। परन्तु गोविंदस्वामी कोई दिन वा बेटी सुं बोले नहीं। जब कान्हबाई नें कही जो बेटी सुं एक दिन तौ बोलो। तब विननें कही जो मन तो एक है इनको लगाऊँ के उनको लगाऊँ। फेर कछू दिन रहि के बेटी देसकुं जावे लगी। जब बहु बेटिन नें साड़ी चोली पठाई। तब गोविंद स्वामी के मन में दया आई। जो गुरु के घर को अनप्रसादी लेवेगी तो याकौ बिगार होयगो। वे गोविंद स्वामी कोई दिन बेटी से बोलते न हते। तो परन्तु दया के लियें बोले जो तूं ये लेवेगो तो तेरो बुरो होयगो। जब बेटी नें कही मोकुं समज नहीं हती। तो मोकुं तुमनें बड़ी कृपा करिके रस्ता बतायो। तब वे सब कपडा पाछें पठाय दिये। बेटी अपनें घर कों गई। सो वे गोविंद स्वामी गुरु की अंश सो ऐंसे डरपत हते।

प्रसंग १०

और फागन के दिन हते। सो सेन भोग सरायकैं श्रीगुसाईं जी बीडी अरुगावत हते। तब गोविंद स्वामी धमार गावत हते।

सेा धमार श्रीगोवरधनराय लाला। ये धमार पूरी करे बिना गोविंद स्वामी चुप कर रहै। जब श्रीगुसाईं जी ने आज्ञा करी गोविंददास धमार पूरी करौ। तब गोविंद स्वामी नें कही महाराज धमार तौ भाज गई है। वे तो घर में जाय घुसे। खेल तो बंद भयेा अब कहा गावूं। ये सुनके श्रीगुसाईं जी चुप कर रहे। पाछे बैठक में पधारे। जब एक तुक आपनें बनाय के गोविंद स्वामी के नाम की घा धमार में धरी। घा दिन सूं गोविंद स्वामी की धमार लोक में साढे बारह कही जाय है। सेा गोविंद स्वामी ऐंसे कृपापात्र हते। जेा लीला के दर्शन करिकें गान करते हते॥

प्रसंग ११

सेा वे गोविंद स्वामी महाबन के टेकरा पर नित्य गान करते हते। श्रीनाथ जी नित्य सुनिवे कुं पधारते हते। और श्रीनाथ जी संग गानहूँ करते हते। और वे गोविंद स्वामी भगवल्लीला में अष्ट सखान में हते। सेा कोई समें श्रीनाथ जी चूकते सेा गोविंद स्वामी भूल काढते। और गोविंद स्वामी चूकते जब श्रीनाथ जी भूल काढते। श्रीनाथ जी तथा गोविंद स्वामी के गान सुनिवे के लिये श्रीगोकुलनाथ जी नित्य पधारते और एक मनुष्य बैठाय राखते। जेा श्रीगुसाईं जी भेाजन करवें कुं पधारें तब मेाकुं बुलाय लीजेा।

एक दिन घा मनुष्य के मन में ऐंसी आई। जेा श्रीगोकुलनाथ जी नित्य श्रीगुसाईं जी सों छाने पधारते है। एक दिन जेा

मैं न बोलाओं तो गुसाईं जी सब जान जाएंगे। जब श्रीगोकुल नाथ जी तौ नित्य जाते बंद होय जाएंगे। समझके वे मनुष्य एक दिन बुलायवे न गयौ। जब श्रीगुसाईं जी भोजन को पधारवे लगे। तब सब लाल जी आए। श्रीगोकुल नाथ जी न आए। तब श्रीगुसाईं जी नें दूसरे मनुष्य कुं आज्ञा करी जी गोविंद स्वामी के पास बल्लभ जो बैठें हैं विनको बुलाय लाव।

जब दूसरो मनुष्य लायो तब वे मनुष्य जो जान के बोलावे नहीं गयो हतो सो पश्चात्ताप करने लग्यो। जो श्रीगुसाईं जी तो सब जानते हैं मैंने काहे को श्रीगोकुल नाथ जी सों कुटिलता करि ऐंसो पश्चात्ताप भयौ। सो वे गोविंद स्वामी ऐंसो कृपापात्र हते। जो तिनके संग श्रीनाथ जी क्षण क्षण आयके बिराजते हते।

प्रसंग १२

वे गोविंद स्वामी पाग आछी बाधते हते। सो टूक टूक पाग होती तब कोई कुं खबर न हती। जब एक दिन एक ब्रजवासी नें गोविंद स्वामी की पाग आछी जान के उतार लीनी। तब गोविंद स्वामी नें कही सारे यें टूक संभार के धर राखियो काल तेरे घर कुं आयके ले जाऊँगो। वे ब्रजवासी नें पाँव पर के पाग पाछी दीनी। वे गोविंददास कुं पाग बाधवे को ऐंसी चतुराई हती।

प्रसंग १३

सो गोविंददास नित्य जसोदा घाट पर जाय बैठते। सो उहाँ एक दिन एक बैरागी गायवे लग्यो। सो राग ताल स्वर हीन

हतो। जब गोविंद स्वामी नें कही जो तुं मत गावै या गायिवे सों कहा होत है। तब वा बैरागी नें कही मैं तो मेरे राम को रिझावत हा। जब गोविंद स्वामी नें कही राम तौ चतुर शिरोमणी है सेा कैसे रीझेंगे। जो तेरो साचो भाव होय तौ मन में नाम लिये सो रोझेंगे। सेा वे गोविंद ऐंसे निःशंक हते।

प्रसंग १४

सेा एक दिन श्रीनाथ सामढाक के ऊपर चढिके बिराजते हते और मुरली बजावत हते, और गोविंददास दूर सों टेकरा के ऊपर बैठे देखते हते। और वाही समय श्रीगुसाईं जी न्हाय कें उत्थापन करवे के लिये श्रीगिरिराज ऊपर पधारे। श्रीनाथ जी ने सामढाक पैं सुं देखे और उतावल सें कूदे और वागा को दावन फट गयो और लीर झाड पैं रहि गई। तब श्रीगुसाईं जी नें केवार खोलि के उत्थापन करे देखें तो वागा को दांवन फट्यो है। जब मनुष्यन सें पूछी जो इहाँ कोई आयेा तौ नहीं हतो। तब सबनें नाहीं कही। जब आप विचार करवे लगे।

तब गोविंददास नें कही जो आप या बात को विचार कहा करे हैं। लरिका को सुभाव जाने नहीं हे। जो बहुत चंचल है स्याम ढाक पैं सूं कूदि के बागा को दांमन फाड्यो है। सेा आप चलो तो दिखाऊँ ऐंसे लीर लटक रही है। जब श्रीगुसाईं जी पधार के वा लीर उतारि लाये। तब श्रीगुसाईं जी श्रीनाथ जी सें पूछी जो आपने उतावल काहें कों करी। तब श्रीनाथ जी

नें कही जो उत्थापन को समय भयो हतो । और आप न्हाय के पधारे हते जासूं उतावल भई । वा दिन तें ऐसो बंदोबस्त कस्यो जो तीन वेर घंटानाद तथा तीन वेर शंखनाद करि के और बीस पल रहिके मंदिर के किवार खोल के उत्थापन करनें । सो वे गोविंददास ऐसे परम कृपापात्र भगवदीय हते ।

प्रसंग १५

एक दिन आगरे में अकबर पातशाह नें सुन्यो जो गोविंद स्वामी बहुत आछे गावत हें और निरपेक्ष हें और निःशंक हें । जब इनके मुख को राग कैसे सुन्यो जाय । ये विचार करिके पातशाही वेष पलटके श्रीगोकुल में इकेले आए । जब गोविंददास जसोदा घाट पर भैरव राग अलापत हते तब वा पातशाह नें वाहवा वाहवा करी । जब गोविंददास नें कही ये राग छी गयो । जब वानें कही जो मैं पातशाह हूँ । जब विनने कही जो तुम पातशाह हो तो पातशाही करौ । परन्तु ये राग तो तुमारे सुनबे सूं छिपाय गयो । जब पातशाह नें विचार कस्यो एक देस को मैं राजा हूँ और इनको तो त्रिलोकी को वैभव फीको लगे है । जासूं ये काहे कूं आपने हुकुम में रहेंगे । ये विचारिके पातशाह चले गये । और गोविंद स्वामी नें वा दिन सूं भैरव राग गायो नहीं । वे गोविंद स्वामी ऐसे टेकी भगवदीय हते ।

प्रसंग १६

और वे गोविंद स्वामी के संग श्रीनाथ जी नित्य वन में

खेलते। और कोई दिन गोविंददास को घोडा करते और कोई दिन हाथी करते। ऐसे नित्य क्रीडा करते। सो एक दिन श्रीनाथ जी ने गोविंद स्वामीकुं घोडो कर्यो हतो और ऊपर आप असवार भये हते। सो गोविंद स्वामी नें घोडा की सी न्याईं लघुशंका करी। ये बातें एक वैष्णव नें देखी। सो श्रीगुसाईं जी सों जाय के कही। जब श्रीगुसाई जी नें आज्ञा करी जब गोविंद स्वामी हाथी घोडा होते है सो हाथी घोडा को स्वांग पूरो न करें तो कैसे होवै। और इन बातन में तुम मत पडो। ये बात सुनके वे वैष्णव चुप करि गयो। सो वे गोविंद स्वामी ऐसे कृपापात्र हते।

प्रसंग १७

एक दिन गोविंददास श्रीगुसाईं जी के संग मथुरा जी में केशवराय जी के दर्शन कूं गये। तब उष्णकाल हतो। और सब जरी को वागा जरी की ओढ़नी देख के गोविंददास नें केशवराय जी सों पूँछो जो नीके तो हो। सो सुनकें केशवराय जी मुसकाये। जब श्रीगुसाईं जी नें कही जो गोविंददास ऐसे न बोलिये। तब गोविंददास नें कही महाराज मांदी मनुष्य को पोसाक पहेर्यो है जब कैसे न पूँछो जाय। ये सुनिके श्रीगुसाईं जी चुपकर रहै।

प्रसंग १८

और एक दिन श्रीनाथ जी के राजभोग आवते हते। तब भीतरिया सों गोविंददास स्वामी नें कही जो राजभोग धरे पहिले

मोकुं प्रसाद लेवाव। जब भीतरिया नें थार पटिक दियो और श्रीगुसाईं जी कूं पुकार करि। जब श्रीगुसाईं जी ने गोविंददास सों पूछी यह कहा। जब गोविंद स्वामी ने कही जो आप संग में मोकुं खेलवे कूं ले जाए हैं। और जो पाछे प्रसाद लेवेकूं रहि जाऊँ तो घन में पाछे मोकुं श्रीनाथ जी मिले नहीं हैं जब कैसे करूँ। ये सुनके श्रीगुसाईं जी नें ऐसी बंदोबस्त करी जो राजभोग आवे के समय गोविंददासकुं प्रसाद लेवावनो ऐसी भंडारी सो आज्ञा करि। सो वे गोविंद स्वामी ऐसे कृपापात्र हुते जिन बिना श्रीनाथ जी रहि नहीं सक्के॥

प्रसंग १९

एक दिन श्रीनाथ जी गोविंद स्वामी संग खेलते हुते। तब श्रीनाथ जी के ऊपर दाव आयो। तब उत्थापन को समय भयो। तब श्रीनाथ जी भाग के मंदिर में घुस गये। मंदिर में भीतर जायकें श्रीनाथ जी कुं गीली मारि। तब सेवक टहेलबान नें गोविंददास कुं धक्का मार के बहेर काढ दिये और उत्थापन भोग धरयो। तब गोविंद स्वामी जाय के रास्ता में बेठे और कहे जो अबि गायन के संग श्रीनाथ जी ये रास्ता पर आवेंगे और याकों मार देउंगो।

पीछे श्रीगुसाईं जी न्हात के मंदिर में पधारे। देखें तो श्रीनाथ जी अनमने होय रहे हैं और उत्थापन कि सामग्री अरोगें नाहीं है। तब श्रीगुसाईं जी ते श्रीनाथ जी सों पूछे जो कैसे हो। तब

श्रीनाथ जी नें कहि जेा जहाँ सुधि गोविंददास कुं नहिं मनावोगे तहाँ सुधि मोकु आवेगो नहीं, काहे ते मोकुं रस्ता चले विना और वाके संग खेले बिना सरेगो नहिं। अबि रस्ता में जाउं तो आनगिनतीन कि मार देवगो। या चिंता के लिये मोकुं कछू भावै नहिं है। गोविंददास आवेगो जब कछु भावगो।

ये बात सुनके और श्रीनाथ जी की भक्त वत्सलता देखके श्रीगुसाईं जी को हृदय भर आयेा। तब गोविंददास कुं बुलाय के और मनायके श्रीनाथ जी सुं बीनति करि जेा ये हाजिर है अब आय गये है। तब श्रीनाथ जी आरोगे। सो वे गोविंददास ऐसे कृपापात्र हते। प्रसंग ॥ १६ ॥ वार्ता संपूर्ण ॥

Printed by RAMZAN ALI SHAH at the National Press, Allahabad.